॥ श्री ॥

नव पद ओळीनी विधि.

तेमां

नव पद ओळीनी विधि उपरांत नव पद पूजा,
स्नात्रपूजा, शेत्रुंजानो रास, स्तवन,
चैत्यवंदनो, थोयो विगेरेनो संग्रह

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक,

जैन पुस्तको तथा तीर्थोना नकशा वेचनार
तथा प्रसिद्ध करनार

मांडवी, मुंबई.

आवृत्ति २ जी

वीर संवत् २४४४ विक्रम संवत् १९७४ सने १९१८

Printed by Ramchandra Yesu Shedge at the Nirnaya-Sagar Press, 23 Kolbhat Lane Bombay

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck
2-3-231 Mandvi Sackgalli Bombay

॥ अथ नव पद ओलीनी विधिनी ॥

॥ अनुक्रमणिका ॥

॥ अथ श्री ॥

॥ नव पद ओळीनी विधि ॥

॥ प्रथम अरिहंतपदपूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यान ॥
अरिहंतपदपूजा करो, निज निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥

॥ उद ॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाण, सप्पाडिहे-रासणसठियाण ॥ सदेसणाणंदियसज्जणाण, णमो णमो होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ नमोऽनंतसंतप्रमोद-प्रदान,–प्रधानाय नव्यात्मने जास्वताय॥यया जेहना ध्यानथी सौख्यनाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥७॥ कर्यां कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे, नला नव्य नव पद ध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना नव्य नावे त्रिकाले, सदा नासीयो आतमा तेणे काले ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दीए देशना नव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म

चारे अलगां, जवोपग्रही चार जे छे विलग्गां ॥ जगत् पंच कल्याणके सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ त्रीजे जव विविसे करी, वीश स्थानक तप करीने रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयु, समकित शुद्ध मन धरीने रे ॥ १ ॥ अरिहतपद नित वंदीए, करम कठिन जिम छमीए रे ॥ ए आकणी ॥ जनम कल्याणकने दिने, नारकी सुखीया थावे रे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता, जसु उपम कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ २ दीक्षा लीधी शुज मने, मन पर्यव आदरीयु रे ॥ तप करी कर्म खपाडने, ततखिण केवल वरीयु रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ चउतीश अतिशय शोजता, वाणी गुण पंतीशो रे ॥ अढदश दोश रहित थइ, पूरे सघ जगीशो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण लगाडने, अरिहंतपद आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही, अरिहतपदवी साधे रे ॥ अरिहतपद नित वदीए ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज—कर्णिकाया जिनेश्वरान् ॥ आविर्भूतलसद्बोधा—नाहूत स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ नि शेपदोपघनधूमकेतू—नपारसं सारसमु-

डसेतून् ॥ यजे समस्तातिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनान-
म्बुजकर्णिकायाम् ॥१॥ ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नम ॥इति॥

॥ अथ सिद्धपदपूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुशियाल ॥
अशुभ कर्म दूरे टले, फले मनोरथमाल ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ सिद्धाणमाणसुरमालयाण, णमो णमोऽणत-
चउक्कयाण ॥ सम्मग्गकम्मक्खयकारयाण, जम्मजरा-
दुक्खनिवारयाण ॥ १ ॥ करी आठ कर्म क्षये पार
पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेणे वाम्या ॥ निरा-
वरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा
सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या
ज्ञानमय जातवर्णादि लेशा ॥ सदानंत सौख्याश्रिता
ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सकल करमनो क्षय करी, सिद्ध
अवस्था पाइ रे ॥ गुण इगतीस विराजता, उपम जस
नहीं काइ रे ॥ मन शुद्ध सिद्धपद वंदीए ॥ ६ ॥ ए
आंकणी ॥ जनम मरण दुख
चिद्रूपी रे ।

अरूपी रे ॥ मन० ॥ ७ ॥ जास ध्यान जोगीसरु, करे अजपा जापे रे ॥ नव नव सव्यां जीवडे, कठिण करम ते कापे रे ॥ मन० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंतां सिद्धनु, पूजतां मनरागे रे ॥ अविचल पदवी पाइए, कह्युं जिनवर वड जागे रे ॥ मन० ॥ ए ॥

॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान्, सम्यक्त्वादि-गुणात्मकान् ॥ नि श्रेयसपदं प्राप्तान्, निदधे नक्ति-निर्जर ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परित प्रणष्ट--डुष्टाष्टकर्मा-नधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतबोधान्, सिद्धान्यजे शांतिकरान्नराणाम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नम ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ आचार्यपदपूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव आचारज पद तणी, पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरे हरे, सुके नाव अशेष ॥ १ ॥

॥ वद ॥ सूरीणदूरीकयकुग्गहाण, णमो णमो सूरसमप्पहाण ॥ सदेसणादाणसमायराण, अखम ठत्तीस गुणायराण ॥ १ ॥ नमु सूरिराजा सदा तत्त्व-ताजा, जिनेंद्रागमे प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ पट्वर्ग-

वर्गित गुणे शोभमाना, पचाचारने पालवे सावधाना॥ भविप्राणीने देशना देश काले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंति कल्पा, जग ते चिर जीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ गुण छत्तीशे दीपता, पाले पच आचारो रे ॥ जिनमारग साचो कहे, युगप्रधान जयकारो रे॥ आचारिजपद वंदीए ॥ १० ॥ ए आकणी ॥ सारण वारण चोयणा, पडिचोयण चौ शिक्षा रे ॥ भव्य-जीव समझायवा, देवाने ते दक्षा रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ जिनवर सूरज आथम्या, परतिख दीपक जेहा रे ॥ सकल भाव परगट करे, ज्ञानमयी जसु देहा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ विधिशु पूजा साचवे, ध्यावे निज हित जाणी रे॥ पावे लघुतर कालमा,आचारज-पद प्राणी रे ॥ १३ ॥

॥ श्लोक ॥ स्थापयामि तत सूरीन्, दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ॥ चरत पचधाचार, षट्त्रिंशत् सद्गुणैर्युतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचाररताश्च, सारानाचारयत स्वपरान्यथेष्टम् ॥ उग्रोपसर्गैकनिवारणार्थ–मभ्यर्चयाम्यक्षतगधधूपे ॥२॥ ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नम॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ उपाध्यायपदपूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुण अनेक जग जेहना, सुदर शोभित गात्र ॥
उवज्झायापद अरचीए, अनुभवरसनु पात्र ॥ १ ॥

॥ छद ॥ सुतत्थविच्छारणतप्पराण, णमो णमो वायगकुजराण ॥ गणस्स संधारण सायराण, सव्वप्पणावज्जियमच्छराण ॥ १ ॥ नहीं सूरि पण सूरिगणने सहाया, नमु वाचका त्यक्तमदमोहमाया ॥ वली द्वादशागादि सूत्रार्थदाने, जिके सावधाना निरुद्धाभिमाने ॥ धरे पचने वर्ग वर्गित गुणौघा, प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिघा ॥ गुणी गच्छसधारणे स्यभभूता, उपाध्याय ते वदीए चित्प्रभुता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ द्वादशागी वाणी वदे, सूत्र अरथ विस्तारे रे ॥ पच वरग गुण जेहना, सुमति गुपति नित धारे रे ॥ १४ ॥ श्री उवझाया वदीए ॥ ए आकणी ॥ दायक आगम वाचना, भेद चान युत सारी रे ॥ मूरसकु पभित करे, जगतजंतु हितकारी रे ॥ १५ ॥ श्री० ॥ शीतल चद किरण समी, वाणी जेहनी कहीए रे ॥ ते उवझाया पूजता, अविचल सुखसग लहीए रे ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥ द्वादशांगश्रुताधारान्, शास्त्राध्ययनतत्परान् ॥ निवेशयाम्युपाध्यायान्, पवित्रे पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्री धर्मशास्त्राणि निज प्रशास्त्ये, पठंति येऽन्यानपि पाठयंति ॥ अध्यापकास्तानपराब्जपत्रे, स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं उपाध्यायेभ्यो नम ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ साधुपदपूजा ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोक्षमारग साधन भणी, सावधान थया जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदतां, निर्मल थाये देह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ साहूण संसाहिअ संजमाण, णमो णमो सुद्धदयादमाण ॥ तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाण, मुणीण माणंद पयट्ठियाण ॥ १ ॥ करे सेवना सूरि वायग गणिनी, करुं वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥ समेता सदा पंच समिति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्ते नहीं कामभोगेषु लिप्ता ॥ वली बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली, होये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सकल विषय विष वारीने, आतम-

ध्याने राता रे ॥ उपशम रसमां फीलता, निज गुण ज्ञाने माता रे ॥ १७ ॥ हित धरी मुनिपद वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ रतनत्रयी आराधता, षट्काया प्रतिपाले रे ॥ पंचिंद्री जीपे सदा, जिनमारग अजुवाले रे ॥ हित० ॥ १८ ॥ गुण सत्तावीश अलंकर्या, पंच महाव्रत धारी रे ॥ द्वादशविध तप आदरे, चिदानंद सुखकारी रे ॥ हित० ॥ १९ ॥ नवविध ब्रह्मचरिज धरे, करम महा भट जीत्या रे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा, ते नर जगत विदिता रे ॥ हित० ॥ २० ॥

॥ श्लोक ॥ व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान्, शुभध्यानैकमानसान् ॥ उदस्पत्रगतान्नित्य, साधून्वदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमतर्वचसि प्रसिद्ध, सत्य तपो द्वादशधा शरीरे ॥ येषामुदक्पत्रगतान् पवित्रान्, साधून् सदा तान् परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नम ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शनपदपूजा ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्त्व तणी परतीत ॥
ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरीए शुभ रीत ॥ १ ॥

॥ ढढ ॥ जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स, णमो णमो निम्मलदंसणस्स ॥ मिच्छत्तनासाइ समुग्गमस्स, मुलस्स सद्धम्म महाडुमस्स ॥ १ ॥ विपर्यास हठवासनारूप मिथ्या, टले जे अनादि अछे जेम पथ्या ॥ जिनोक्ते हुवे सहजथी श्रद्धान, कहीए दर्शन तेह परमं निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञान अज्ञानरूप, चरित्र विचित्र भवारण्यकूप ॥ प्रकृति सातने उपशमे क्षय तेह होवे, तिहा आपरूपे सदा आप जोवे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी, सद्दहणा चित्त धरीए रे ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी, क्षायिक समकित वरीए रे ॥ २१ ॥ दरशणपद नित वंदीए ॥ ए आकणी ॥ ज्ञण विण ज्ञान नि फल कह्युं, चारित्र नि फल जाये रे ॥ शिवसुख ए विण नाभीखे, बहु ससारी याये रे ॥ द० ॥ २२ ॥ समसठी भेदे शोभतु, अजरामर फल दाता रे ॥ जे नर पूजे भावश. ते पामे सुख शाता रे ॥ दरशणपद० ॥ २३ ॥

॥ श्लोक ॥ जिनेन्द्रोक्तमत श्रद्धा,-लक्षण ... यजे ॥ मिथ्यात्वमथन शुद्ध, सम्यग्दर्शनस... ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नम ॥ इति ॥ ६

॥ अथ ज्ञानपदपूजा ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननु, सिद्धचक्र तप मांहि ॥
आराधीजे शुन्न मने, दिन दिन अधिक उछांहि ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ अन्नाणसमोहतमोहरस्स, णमो णमो नाणदिवायरस्स ॥ पचप्पयारस्सुवगारगस्स, सत्ताण सव्वछपयासगस्स ॥ १ ॥ होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावरण नासे विचित्रावबोधे ॥ तेणे जाणीए वस्तु पड् द्रव्य न्नावा, न हुये वितथ्था(वाद) निजेछा स्वन्नावा ॥ होय पच मत्यादि सुज्ञान न्नेदे, गुरूपासत्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेय उपादेयरूपे, लहे चित्तमा जेम ध्वात प्रदीपे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ न्नक्ष अन्नक्ष विचारणा, पेय अपेय निर्धारो रे ॥ कृत्य अकृत्यने जाणीए, ज्ञान महा जयकारो रे ॥२४॥ ज्ञान निरतर वदीए ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान विना जयणा नहीं, जयणा विण नही धर्मो रे ॥ धर्म विना शिवसुख नहीं, ते विण न मिटे न्नर्मो रे ॥ ज्ञान० ॥ २५ ॥ पाच प्रकार छे जेहना, न्नेद एकावन तासो रे ॥ जाणीने पूजे सदा, ते लहे केवल खासो रे ॥ ज्ञान० ॥ २६ ॥

॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय,-रूपमेवावभासकम् ॥ ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थ, पूजयामि हितावहम् ॥ ७ ॥

॥ अथ चारित्रपदपूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टम पद चारित्रनु, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभवरस मिले, पातक होय उछेद ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ आराहिअखंमीअ सक्किअस्स, णमो णमो संयम वीरिअस्स ॥ सळावणा सगविवद्धियस्स, निव्वाणदाणाइ समुज्जायस्स ॥ १ ॥ वली ज्ञानफल चरण धरीए सुरंगे, निराशंसता द्वाररोधप्रसंगे ॥ भवाम्भोधिसंतारणे यान तुल्य, धरु तेह चारित्र अप्राप्तमूल्य ॥ १ ॥ होये जास महिमा थकी रंक राजा, वली द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वली पापरूपोपि निःपाप थाय, थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सर्व विरति देशविरतिथी, अणगार सागारी रे ॥ जयवंतो थावो सदा, ते चारित्र गुणधारी रे ॥ २७ ॥ चारित्रपद नित वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ षट् खंड सुख तजी आदरे, संयम शिवसुखदायी रे ॥ सत्तर भेदे जिन कह्यो, ते आदरीए भाइ रे

॥ चा० ॥ २८ ॥ तत्त्वरमण तसु मूल छे, सकल आश्रवनो त्यागी रे ॥ विधि सेती पूजन करे, भाव धरी वड भागी रे ॥ चा० ॥ २९ ॥

॥ श्लोक ॥ सामायिकादिनिर्भेदै,–श्चारित्रं चारु पचधा ॥ संस्थापयामि पूजार्थं, पत्रे हि नैर्ऋते क्रमात् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः ॥ ८ ॥

॥ अथ तपपदपूजा ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्मकाष्ठ प्रतिजालवा, परतिख अगनि समान ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरीए ध्यान ॥ १ ॥

॥ वृद ॥ कम्मदुमोम्मूलणकुंजरस्स, णमो णमो तिव्वतवोभरस्स ॥ अणेगलद्धीण निबंधणस्स, दुस्सज्झ अत्थाण य साहणस्स ॥ १ ॥ त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाले, निकाचितपणे बांधीया तेह बाले ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर दु भेदे, क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ होये जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेते, होय सिद्धि सीमंतिनी निज संकेते ॥२॥

॥ ढाल ॥ निज इच्छा अवरोधीए, तेहीज तप

जिन भाख्युं रे॥ वाह्य अभ्यंतर भेदथी, द्वादश भेदे दाख्युं रे॥ ३०॥ अनुपम तपपद वंदीए॥ ए आंकणी॥ तद्भव मोक्षगामीपणुं, जाणे पण जिनराया रे॥ तप कीधा अति आकरां, कुत्सित करम खपायां रे॥ अ० ॥ ३१ ॥ करम निकाचित क्षय हुवे, ते तपने परभावे रे॥ लब्धि अठ्यावीश उपजे, अष्ट महासिद्धि पावे रे॥ अ० ॥३२॥ एहवु तपपद ध्यावता, पूजता चित्त चाहे रे॥ अक्षय गति निर्मल लहे, सहु योगींद सराहे रे॥ अ० ॥ ३३ ॥

॥ श्लोक ॥ द्विधा द्वादशधा भिन्न, पूते पत्रे तपश्चयं ॥ सस्थापयामि भक्त्यात्र, वायव्या दिशि शर्मदम् ॥ ॐ ह्रीं सम्यक्तपसे नम ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ इम नव पद ध्यावे, पर्म आनद पावे॥ नवमे भव शिव जावे, देव नर भव पावे॥ ज्ञानविमल गुण गावे, सिद्धचक्रप्रभावे॥ सहु दुरित शमावे, निश्च जयकार पावे॥ १॥

॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य उवझाय, साधु दसण नाण ए॥ च। नव पद थकी, इहा सिद्धच

प्रमाण ए ॥ १ ॥ श्रीपाल राजा सुख ताजा, लह्या सिद्धचक्र ध्यानसो ॥ नविजन नजो जिन लाल जाणी, हिये आणी जाव सों ॥ ३ ॥ इयनवपयसिद्ध, लद्धि-विज्जासमिद्ध ॥ पयडियसुरवग्ग, ह्रींतिरेहासमग्ग ॥ दिसवइसुरसारं, खोणिपीढावयारं ॥ तिजयविजय-चक्क सिद्धचक्क नमामि ॥ ३ ॥ नि खदेत्वादिदिव्या-तिशयमयतनून् श्रीजिनेन्द्रान्सुसिद्धान् । सम्यक्त्वा-दिप्रकृष्टाष्टगुणगणन्नदाचारसारांश्च सूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचनरचना सुदराण्यादिशत-स्तत्सिद्ध्यै पाठकाना यतिपतिसहितानर्चयाम्यर्घ्य-दाने ॥ १ ॥ इत्थमष्टदल पद्म, पूरयेदर्हदादिनि ॥ स्वाहान्ते प्रणवाद्यैश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिने सम्यग्ज्ञानादिचतुरन्वितेन्यो नम ॥ इति श्री नव पद पूजा ॥

॥ अथ नव पद आरती ॥

॥ ए नव पद प्राणी नित ध्यावो, पचम गत सासय सुख पावो ॥ ए आंकणी ॥ धुरथी अरिहंतपद ध्याइजे, थिरताए श्री सिद्ध थुणीजे ॥ ए० ॥ १ ॥ आचारज तीजे आराधो, शुद्धे मन निज कारिज साधो ॥ ए० ॥ २ ॥ उवजाया पचम अणगारा, प्रण-

मंता पामे जवपार ॥ ए० ॥ ३ ॥ दसण नाण चरण जला दीपे, तप तपता कर्म अरिने जीपे ॥ ए० ॥ ४ ॥ ए नव पद प्राणी नित थुणतां, गिरुआ नरजव सफल गिणता ॥ ए० ॥ ५ ॥ सिद्धचक्रनी कीजे सेवा, मनवंछित लहीए नित मेवा ॥ ए० ॥ ६ ॥ अजर अमर सुखदायक साचो, एडे मनसे नित प्रनि राचो ॥ ए० ॥ ७ ॥ इति नव पद आरती ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य ॥

॥ देववंदनजाप्यथी मंदिर जवानी तथा पूजन करवानी विधि ॥

॥ प्रथम श्रावक दो चार घमी रात्र रहते उठके (प्रथम) दिलसे नवकार मंत्रका स्मरण करे म कोण हुं, क्या मेरी जाति है, क्या मेरा कृत्य है, क्या मेरा धर्म है, इत्यादि धर्मजागरणासे दिलको सावचेत करे पीछे मल मूत्रकी वाधा दूर करके अग शूचिभूत करे सामायिक, प्रतिक्रमणादि करके, विधि सयुक्त घरदेरासरकी पूजा करे पीछे यथाशक्ति अच्छा वस्त्र

आनूपण पहरके, घोमा, हाथी, रथ, पालखी, सिपा
नोकर, नाइ, बधु इत्यादि परिवार सहित पूजा
लायक फल, फूल प्रमुख उत्तम ड्व्य हाथमें ले
नव्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता हुआ, जिन-
शासनकी प्रनावना करता हुआ, जिनमंदिर जावे।
जिनमंदिरमें प्रवेश करके १० त्रिकविधि साचवन करे।
सो १० त्रिक लिखते हैं॥ पहिला त्रिक तीन निस्सिही
कहणेका, जिसमें १ निस्सिही जिनमदिरमें पैठतेही
कहे पीठे ससार घर सवधी कुछ नी कार्यविचा-
रणा न करे॥ १॥ दूसरी निस्सिही प्रदक्षिणा तीन
दीए पीठे कहे। जिनमंदिरमें फूटा टूटा ठीक करा-
नेकी सारसनाल रखी थी सो नी ठोडे। इहां ड्व्य-
पूजा करणी मोकली रही॥ २॥ तीसरी निस्सिही
कहे पीठे नि केवल नावपूजा करे, पण ड्व्यपूजा
न करे। यह प्रथम निस्सिही त्रिक कहा॥

दूसरा त्रिक ज्ञानत्रिककी आराधना करनेको-
प्रनुके दक्षिणावर्त्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे। तीसरा
त्रिक मूलनायकजीके बिंबको पचाग मिलाके तीन
वेर नमस्कार करे॥३॥ चौथा त्रिक। प्रनुकी अग १
अग्र २ नाव ३ त्रिविध प्रकार पूजा करे। अव

निस्सिही किये पीछे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षिप्त लिखते है। निस्सिही किये पीछे मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति करके युक्त रहे। पांचो इन्द्रियांको वशमें रखे। गमनागमनमें उपयोगी रहे। गीतादिक अन्यका सुनके चित्तमें व्याकुलता न रखे। कुछ भी देवकार्यको छोडके और कार्यकी विचारणा न करे। राजकथादि सपूर्ण विकथा छोडे। जन्म और कर्मके अनुगत वचन न बोले, अर्थात् कोइके माता पितादिकका किया थका खोटा कार्यको प्रगट न करे। तथा कर्मानुगत वचन आंधेको आंधा, गोलेको गोला इत्यादि वचन न बोले। निस्सिही किये पीछे जिनमंदिरमें धर्म सयुक्त, आत्महितकारी, प्रमाणोपेत वचन बोलना चाहीए। जिसने मन, वचन, कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपनी आत्मासे किया है उसके भावसे निस्सिही होय। और जिसने दूषणका त्याग न किया है उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र द्रव्य निस्सिही होय। इस वास्ते पूजा योग्य उत्तम वस्त्र पहरके, आठ तहके उज्ज्वल वस्त्रसे मुखकोश बांधे। धूपादिकसे अंग अपना शुद्ध करे। भावसे दूसरी निस्सिही कहते मूल गभारामें प्रवेश

करे। जयणा संयुक्त पूजा करे। पूजा करते हुए शरीरमे खाज न खुणे, खेल खंखार न करे। निःकेवल भगवानकी स्तवनामे चित्त रखे। प्रथम सुगध युक्त जल पंचामृतसे स्नान करे। सुकुमाल अछा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसे भगवानका अंग लूहे। कपूर, कस्तूरी मिश्रित शुद्ध केशर चदनका विलेपन करे। शुभ्र वर्ण, शुभ्र गंध युक्त, जीवादि रहित निर्दोष गुलाव, चंपा, चपेली, केवमा, जाइ, जुइ, मोगरादिक पुष्पसे पूजा करे। अष्टाग धूप अगरवत्ती खेवे। मगलदीप करे। अखम उज्ज्वल अक्षतसे प्रभुके सन्मुख अष्ट मगलिक लिखे। दर्प्पण १ भद्रासन २ वर्धमान शरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मत्स्ययुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंदावर्त्त ८ एसा अष्ट मंगलकी रचना करे। पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलिक पूजे। सुंदर कुकुम मिश्रित चदनसे हत्रा देवे। उत्तम नैवेद्य चढावे। अछा खाद्य फल चढावे। इत्यादि पूजाकी विधि आरती पर्यंत रायपसेणी, ज्ञाताधर्मकथा, जीवाभिगमादि सिद्धांतोमें लिरये मुजब करे। पीछे अतरंग भक्तिसे प्रभुके सन्मुख नाटक करे। जैसे देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद इन्होंने तथा उदायी राजाकी राणी प्रभाव-

तीने, द्रौपदीने नाटक किया। और रावण प्रमुख कइ जीवोने अष्टापदादि ऊपर नाटक करके तीर्थंकर-गोत्र उपार्जन किया तैसे प्रभुके सन्मुख शंका रहित होके उत्तम पुरुष नाटक करे॥

॥ अब जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करे सो अंग-पूजा (१)। प्रभुके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावे सो अग्रपूजा (२)। प्रभुके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो भावपूजा (३)। यह द्रव्य-पूजाका विचार गर्भित चोथा त्रिक कहा। अब पांचमा त्रिक। तीन अवस्था विचारणी। पिंडस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३। इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद। जन्मावस्था (१) राज्यावस्था (२) श्रमणावस्था (३)। और केवल अवस्थाको विचार करणा सो पदस्थ अवस्था। निरंजनाकार सो सिद्धावस्था। तिसकुं रूपातीत अवस्था कहते हैं। अब छठा त्रिक। तीन दिशा रोकके प्रभुके सामने नजर रखे। ऊर्ध्व १ अधो २, तिरछी ३, दहणी वांइ पिछाडी नजर नही करे। अब सातमा त्रिक। तीन वेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे। अब आठमा त्रिक। वर्णा-दिक तीन सूत्रान्तर्गत हरफ शुद्ध उच्चारण करे सो

वर्णशुद्धि (१)। हरफोके अर्थ पर आलंवन रखे सो अर्थशुद्धि (२)। आलंवन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मनशुद्धि (३)। अव नवमा त्रिक। तीन मुद्रा करनी। जोगमुद्रा (१) जिनमुद्रा (२) मुक्ताशुक्तिमुद्रा (३)। इसमें जोगमुद्रा किसकु कहते है। पद्मकोशाकारे दोनु हाथ परस्पर अंगुली मिलानी ए जोगमुद्राए शक्रस्तव कहीए (१)। काउस्सग्गमुद्रा सो जिनमुद्रा (२)। और दो सीपका जोडा तिस आकार हाथ रखना सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा (३) इस मुद्रासे प्रणिधान, जय वीयराय इत्यादि करे। अव दशमा त्रिक। प्रणिधान तीन। जिनवंदन प्रणिधान (१) मुनिवंदन प्रणिधान (२) प्रार्थना प्रणिधान (३)। इसमे जो जावंति चेइआइ इत्यादि इह संतो तत्थ संताइ तक जिनवंदन प्रणिधान (१) जावंत केवि साहू इत्यादि तिविहेण तिदंडविरयाण इहा तक मुनिवंदन प्रणिधान (२) जय वीयरायसे लेके आभवमखंडा तक प्रार्थनारूप प्रणिधान (३)। एसे दश त्रिकका पहेला द्वार कहा। अव पाच अभिगम साचवणेका दूसरा द्वार कहते है ॥ सचित्त द्रव्य कुसुमादिक अपने पास होय उसकु अलग रख देना (१) और

राजचिह्न मुगट, छत्र, खड्ग, चामर, पाडुका, अचित्त वस्तु छोडना। आज्ञपण प्रमुख पहरवा रखना (२) मन एकाग्र करना (३) एक पट्ट उत्तरासंग करना (४) जिनबिंब देखतेही 'नमो जुवणवधुणो' एसे नमस्कार करना (५)। ए दूसरा द्वार कहा॥ अब तीसरा द्वार दो दिशिका। पुरुष दहणी दिशा बेठा जगवतको वादे। स्त्री बाइ दिशा बेठके जगवतकु वादे। अब चौथा द्वार तीन अजिग्रह। अजिग्रह देव वादणामे कहा हे। जघन्य नव हाथ दूर बेठके देव वादे (१)। मध्यम नव हाथसे उपरात बेठके देव वादे (२)। उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बेठके देव वादे (३)। अब पाचमा द्वार चेत्यवदनका। सो जघन्य १ मध्यम २ उत्कृष्ट ३ तीन जेद हे। तिहा णमो अरिहताण इत्यादिक कहके वा एक दोय गाथाका नमस्कार कहके शक्रस्तव कहना ए जघन्य चैत्यवंदन (१)। जिस देववदनमे स्थापनार्हत्स्तव-दंमक नमुथ्थुणसे लेके अरिहतचेइयाण इत्यादिक संपूर्ण कही एक स्तुति कहे सो मध्यम चैत्यवंदन। तथा फो . ॥ कहे। पाच १०फ

गाथा ४ कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीए। तथा विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंडक, जय वीयराय पर्यंत आठे थुइए देव वादे सो उत्कृष्ट चैत्यवदन कहीए॥अब छठा द्वार पचाग प्रणिपात करे। दो जानु, दो हाथ और मस्तक ए पाच अग मिलायके जमीनमें लगावे॥ अब सातमा द्वार॥ जघन्य एक गायासे लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसे प्रभुकी स्तवना करे॥

॥ अब स्तवना करनेके प्रसगसे प्रथम नव पदके ए चैत्यवंदन ए स्तवन ए थुइ लिखते हे॥

॥ अथ अरिहतपद चैत्यवदन ॥

॥ श्रीइष्टदेवाय नम ॥ जय जय श्री अरिहत भानु, भवि कमल विकाशी॥ लोकालोक अरूपी रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी॥ १॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशि॥ शुक्ल चमर शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी॥ २॥ अतरंग रिपुगण हणीए, हुय अप्पा अरिहत॥ तसु पदपकजमें रही, हीर धरम नित सत॥ ३॥ इति अरिहतपद-चैत्यवंदन॥ ज किंचि० ॥ नमोऽर्हत्० ॥

॥ अथ प्रथम पद स्तवन ॥

॥ पूजो मनरली, हा हो दादा कुशल सूरींद ॥ ॥ पू० ॥ ए देशी ॥ श्री तेरम गुण वसिके कत, कर्मकु नजे श्री अरिहंत ॥ मन मान ले ॥ अष्ट समयमे समय तीन,सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥१॥ वादर काये मन वच जोग, तनु तनुसे फुन दृढ तनु योग ॥ मन० ॥ सुखम कायते मन वच रोक, निज वीर्यें ताकु कर फोक ॥ मन० ॥ २ ॥ सज्ञी मात्रके मन व्यापार, वेइन्द्रिने वाम्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय रह्यो पणक सुजीव, सुख्म लह्यो तिण जोग अतीव ॥ मन० ॥ ३ ॥ एपा योगथी समये एक, हीना सख-गुणो कर ठेक ॥ म० ॥ समया सखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ मन० ॥ ४ ॥ वेद समे ना हारता पाय, कुशल कहे ते श्री जिनराय ॥ म० ॥ तेरमे गुणमें गुण समे देव, आपो सा जगकु नितमेव ॥ मन० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपदस्तवनम् ॥ १ ॥

॥ अथ थुइ ॥ सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोका-लोक सरूपोजी ॥ केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनत गुणे करी पूरोजी ॥ तीजे भव थानक आराधी.

गोत्र तीर्थंकर नूरोजी ॥ चार गुणाकर एहवा अरिहंत, आराधो गुण भूरोजी ॥ इति अरिहंतपदस्तुति. ॥ १ ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥ २ ॥

॥ श्री शैलेशी पूर्वप्रांत, तनु हीन त्रिजागी ॥ पुव्वपउंगपसंगसे, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गये निगण निरागी ॥ चेतन जूपे आत्म रूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाणथी ए, रुपातीत स्वजाव ॥ सिद्ध जये तसु हीर धर्म, वंदे धरी शुज जाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपदचैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवन ॥ २ ॥

॥ था रे हिलां उपर मेह झरोखे वीजली ॥ ए चाल ॥ अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें म्हारा लाल ही० ॥ उत्कृष्ट करे वास सयोगी धाममे म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजे जव जव्यता म्हा० त० ॥ शैलेशी लहे कर्म दले गुणश्रेणिता म्हा० द० ॥१॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहे ते योगमे म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अन्त करीने अन्तमे म्हा० क० ॥ गमन करे नगरज्ञासे अक्रिय होयने म्हा० अ० ॥ पुव-पयोग असंग स्वजाव अबंधने म्हा० स्व० ॥२॥ छपु गुण

नव परमाण जोजन लहे कही म्हा० जो० ॥ वर्त्तुल विसदा जाश निरालंबन सही म्हा० नि० ॥ मध्ये जोजन अष्ट घनाकृति अन्तमें म्हा० घ० ॥ मक्षी पक्षथी हीन जणी सिद्धातमें म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनु-पज्जारा नाम शिलासे जोयने म्हा० शि० ॥ लघु अगुल वत्तीस प्रमाण अवगाहना म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पच गुणासें हीनता म्हा० गु० ॥ मिलिया एकमें नत अवाधा ना लही म्हा० अ० ॥४॥ अष्ट प्राण धरी रम्य सिरीहीं जो सही म्हा० सि० ॥ वीजो पद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें म्हा० धरो० ॥ कुशल जये जगजीव मिलोगा तेहसे म्हा० मि० ॥५॥ इति सिद्धपदस्तवनम् ॥

॥ अथ थुइ ॥ अष्ट करमकुं धमन करीने, गमन कियो शिववासीजी । अव्यावाध सादि अनादि, चिदा-नंद चिद्राशिजी । परमातम पद पूरण विलासी, अघ घन दाघ विनाशीजी ॥ अनत चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवलज्ञानी भाषीजी ॥ इति सिद्धपदस्तुति ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय पद चैत्यवदन ॥

॥ जिनपदकुल मुखरस अनिल, मितरस गुण धारी ॥ प्रवल सुवल घन मोहकी, जिणते चम

हारी ॥ १ ॥ छत्रादिक जिनराज गीत, नयतत्त विस्तारी ॥ चन कूपे पापे पड़त, जगजन निस्तारी॥ २॥ पचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकु वंदे हीर धर्म, अष्टोत्तरसो वार ॥ ३॥ इति आचार्यपद-चैत्यवंदनम् ॥ ३ ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तवन ॥

॥ नणदल चदिली ले ए चाल ॥ सती खड़गथी जेणे, हण्यो क्रोध सुभट सम देणे हो ॥ गणपति गुण पेखी ॥ मान महा गिरि वयरे, अति सोजन मद्दव वयरे हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दभरूप विषवेली, वर अज्जव कीले ठेली हो ॥ ग० ॥ मूर्छा वेलथी भरीयो, लोह-सागर मुत्ते तरीयो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन नाग मद हीनो, जिण दम शम जत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह महामल्ल ताड्यो, पुण वैराग मुगेर पाड्यो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोप गयद बस कीनो, धरी उपशम अंकुश लीनो हो ॥ ग० ॥ अतरग रिपु छेद्या, सुर वर पिण जिण निपेध्या हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस क्रुति गुणथी लीनो, सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारिजपद एहवो, धरी जीव कुशलता सेवो

हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपदस्तवनम् ॥ ३ ॥

॥ अथ थुइ ॥ पचाचार पाले उजवाले, दोष रहित गुणधारीजी । गुण छत्तीसे आगमधारी, द्वादश अग विचारीजी । प्रबल सबल घनमोह हरणकु, अनिल समो गुण वाणीजी । क्षमा सहित जे सयम पाले, आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्यपदस्तुति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवझाय राय, शठता घन भजन ॥ जिनवर दिसत डुवालसग, कर कृत जनरंजन ॥ १ ॥ गुणवण भजण मण गयद, सुय शणि किय गजण ॥ कुणालध लोय लोयणे, जह य सुय मजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लह्योए, आगमसे पद तुर्य ॥ तिनपे अहनिश हीर धर्म, वदे पाठकवर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्यायपदचैत्यवंदनम् ॥ ४ ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

॥ सारलिया अलगा रहोने ॥ ए चाल ॥ हुयने ३ झूरी हुयने, चेतन जापे शठने झूरी होयने । तु मुज

तो संगे निज पर्चेंड्रिनो,रचना चरम भूलाणो ॥ नाणा-
वरणी खय उपशमसे, जावेंडि मंमाणो ॥ झू० ॥ १ ॥
ड्ज्ये ते परजाते कीना, जाति नाम व्यपदेश ॥
एव तो गो तुरग गजादिक, किण कर्में उपदेश ॥
झू० ॥ २ ॥ इत्यादिक वहु मुजकु गका, तेरे सगे लागी ॥
नील वर्णकी शमता सेती, मे नयो तोशु रागी ॥
झू० ॥ ३ ॥ उप कहीए हणीयो नवियानो, अनियां
लाजत आय ॥ आधीनां मन पीमा नामे, मायो येन
विलाय ॥ झू० ॥ ४ ॥ आविस्ये सरीए वर आगम,
सूत्रसे ते उवकाय ॥ तस्सेवाते हणी शठताकु, चेतन
कुशलता पाय ॥ झू० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थपदस्तवनम् ॥

॥ अथ थुइ ॥ अग इग्यारे चउदे पूरव, गुण पच-
वीसना धारीजी । सूत्र अरथधर पाठक कहीए, जोग
समावि विचारीजी ॥ तप गुण शूरा आगम पूरा, नय
निक्षेपे तारीजी । मुनि गुणधारी वुध विस्तारी, पाठक
पूजो अनिकारीजी ॥ इति उपाध्यायपदस्तुति ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम पद चैत्यवदन ॥

॥ दसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥
धर्म शुक्ल शुचि चक्रसे, आदिम खय कामी ॥ १ ॥

गुण पमत्त अपमत्तते, नये अंतरजामी ॥ [illegible]
इंद्रिय दमनभूत, शम दम अभिरामी ॥ ४ ॥ [illegible]
घन गुण गण जस्यो ए, पचम पद [illegible] ॥
तत्पदपंकज नमत हे, हीर धर्मके [illegible] ॥ [illegible] ॥ इति
साधुपदचैत्यनंदनम् ॥ ५ ॥

॥ अथ थुइ ॥ सुमति गुपति कर संजम पाले, दोष बयालीश टालेजी ॥ षट्काया गोकुल रखवाले, नवविध ब्रह्मव्रत पालेजी ॥ पच महाव्रत सूधा पाले, धर्म शुक्ल उजवालेजी॥ क्षपकश्रेणि करी कर्म खपावे, दमपद गुण उपजावेजी ॥ इति साधुपदस्तुति. ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवदन ॥

॥ हुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परमित ससार ॥ गण्ठिभेद तव करी लहे, सब गुणनो आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशी असख, उपशम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नहीं हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लछन अभिराम ॥ दरशनकु गणि हीर धर्म, अहनिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥ ॥ इति दर्शनपदचैत्यवंदनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवन ॥

॥ रामचद्रके बाग आंबो मोर रह्यो री ॥ ए चाल ॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साधु भण्यो री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लछण बोधि तणो री ॥ १ ॥ बोधि-लाभके काज, सप्तम नरक भलो री ॥ तेण विना सुरलोक, ताते अधिक बुरो री ॥ २ ॥ मिथ्या तापे

तत्त, बोधही गांद लहे री ॥ उपशम क्षायक वेद, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ भवसागर हे अपार, कुण अस्ताघ कह्यो री ॥ जसु लाभे ते होय, गोसपद मात्र खरो री ॥ ४ ॥ यद्भावे अप्रमाण, नाण चारित्त भला री ॥ बोध धर्ममें जीव, लाभे कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शनपदस्तवनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ थुइ ॥ जिनपन्नत्त तत्त सुधा सरधे, समकित गुण उजवालेजी ॥ भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुर पावेजी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्यो, गणधर अरिहंत शूराजी ॥ ए दरशनपद नित नित वदो, भवसागरको तीराजी ॥ इति दर्शनपदस्तुति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदिम नाण ॥ भाव मिवापसे जिन जनित, सुय वीश प्रमाण ॥ १ ॥ भवगुण पज्जव छेहि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक सरूप जाण, इक केवल भाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नाशथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम पदमे हीर धर्म, नित चाहत अवकाश ॥ ५ ॥ इति ज्ञानपदचैत्यवंदनम् ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥ जिनवर भाषित आगम भणीया, तत्त्व यथास्थिति गमीयाजी ॥ म्हारे जगजनतारु, ते उत्तम वर नाण कहाये। भविजन अहनिशि चाहेजी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ भक्ष्याभक्ष्य कुपथा सुपथा, पेयापेय अभयाजी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हित धारी, जाणे जेण विचारीजी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय छे इंद्रि सारु, तेण परोक्ष विचारुजी ॥ म्हा० ॥ छंद्रि मण केवल हे वारु, जीव प्रतक्ष सुधारुजी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयवि जस्स बले जग जाणे, लोकादिक अनुमानेजी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजे जासु पसाये, धारी शुभ अध्यवसायेजी ॥म्हा०॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकु विलासेजी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमे भविजन हरपे, निशदिन कुशलता निरखेजी ॥ म्हा० ॥५॥ इति नाणपदस्तवनम् ॥ ७ ॥

॥ अथ थुइ ॥ मति श्रुत
लहीए गुण गभीरोजी ॥ अ
द्वादश अंग विस्तारोजं

वली, प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी ॥ ए पंच ज्ञानकुं वंदो पूजो, जविजनने सुखकारोजी ॥ इति ज्ञानपद-स्तुति ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम पद चैत्यवंदन ॥

॥ जस्स पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेद ॥ नमन करे शुज जाव लाय, फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जपे धरी अरिहंत राय, करी कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दे सुख अमंद ॥ २ ॥ इपु कृति मान कषायथी ए, रहित लेश शुचिवंत ॥ जीव चरित्तकुं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥३॥ इति चारित्रपद-चैत्यवंदनम् ॥ ८ ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाजास निस्संग ॥ सुग्यानी साजलो ॥ मूर्त्तिहीन चेतन करे, रूपी पुद्गल रंग ॥ सु० ॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्य कारण जाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जोग सुधामता, लब्धा सरस स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याता लघु जोगमें, वृद्धि लहे जुगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समये लहे, अंते द्वौ ते जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानस मुखा,

कारण रम्य वक्षेण सु० ॥ प्रातावस्र प्रकारता, सप्त प्राजृतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तड़ोधन रूपी ज्ञलो, चेतन सयमधाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद धर्ममे, कुशदा जवतु अजिराम ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति चारित्र-पदस्तवनम् ॥

॥ अथ थुइ ॥ कर्म अपचय दूर खपावे, आतम-ध्यान लगावेजी ॥ वारे जावना सूधी जावे, सागर-पार उतारेजी ॥ पद् खरु राजकु दूर तजीने, चक्री सजम धारेजी ॥ एहवो चारित्रपद नित वदो, आतम-गुण हितकारेजी ॥ इति चारित्रपदस्तुति ॥ ८ ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवदन ॥

॥ श्री ऋपजादिक त।
विहि अतैरपि वाह्य मध्
वसु कर मित अ।
ज़ेदे समता युत
नजमो श्री तपपद ना
नसे नित हीर धर्म।
... ५८ चैत्यवद

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस भेद भाख्या जिनराजे, बाह्य [illegible]
जगकाजे रे ॥ शिवपद श्रेणि ॥ तिण भव सिद्धि [illegible]
वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥ शि० ॥ १ ॥
समता सहित जिनते भारी, नहीं [illegible]
हारी रे ॥ शि० ॥ जीव कनकने [illegible]
तप पावनका जोरा रे ॥ शि० ॥ २ ॥ [illegible]
कुसुम है ऋद्धि, देव नरनी [illegible] ॥ शि० ॥
पाप सकल है तमनी राशि [illegible]
रे ॥ शि० ॥ ३ ॥ जस्स प्रभावें [illegible] लब्धि
सघली जगहितकारु रे ॥ शि० ॥ अति दुष्कर [illegible]
साध्यता हीना, काम [illegible] रे ॥ शि० ॥ ४ ॥
आराधनरूपी कहीए [illegible] चेतन कहीए रे
॥ शि० ॥ ५ ॥ इति [illegible] ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीमदृषभसर्वज्ञ, वृषभांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधिदेवार्ह,—न्नाभिराजेन्द्रनन्दन ॥ १ ॥ युगस्यादौ त्वया येन, ज्ञानत्रययुतेन यत् ॥ जनन्या मरुदेवाया, पावनं जठरं कृतम् ॥ २ ॥ इति ऋषभस्तुतिः ॥ १ ॥

॥ अर्हताजितनाथेन, गजलांछनशालिना ॥ जित-शत्रुमहीपाल,—पुत्रेण कनकत्विषा ॥३॥ विजयाकुक्षि-रत्नेन, जगवंस्त्वयका जिन ॥ जिता रागादयो येन, वंदे त्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्यजितस्तुतिः ॥ २ ॥

॥ जितारिनृपतेर्वर्य्यात्, संभव संभवाभिध ॥ सेनाया नंदनो हेम,—वर्णो गधर्वलांछन ॥ ५ ॥ सर्व-सौख्यप्रदो मुख्य,—ज्ञानदर्शनसंयुत ॥ मुनीनां पुङ्गवो देवो, नित्यं दिशतु मां जिन ॥ ६ ॥ इति संभव-स्तुतिः ॥ ३ ॥

॥ सिद्धार्थनंदनं सार्वं, वीतराग जगत्पतिम् ॥ श्रीसंवरसमुत्पन्नं, प्लवगांक हिरण्मयं ॥ ७ ॥ अभिन-न्दननामानं, विशुद्धहृदयः सदा ॥ यः स्तौति परया भक्त्या, स ना लोकेऽभिनंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यभिनंदन-स्तुतिः ॥ ४ ॥

॥ मेघानिधधरित्रीश,—तनयो मङ्गलप्रद ॥ क्रौच-
लक्षणभृद्भूम,—मरीचिर्मङ्गलागज ॥९॥ सत्य सुमति-
नाथेश, सुमतिं तनुतात्तमा ॥ जनिना पुण्यकर्तृणा,
स्वर्गसौग्यात्रलिप्रदाम् ॥ १० ॥ इति सुमतिस्तुति ॥५॥

॥ सुसीमापुत्र सत्कोक,—नदद्युतिधराधर ॥ धरा-
जिधनृपोद्भूत, पद्मलक्षणधारक ॥ ११ ॥ जराब्धौ जन
सकीर्णे, दुस्तरे पतता नृणा ॥ त्राणाय सतत देव,
पद्मप्रभ जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रभस्तुति ॥ ६ ॥

॥ श्रीसुपार्श्वाभिधो देव, पृथ्वीज स्वस्तिकाक-
भृत् ॥ प्रतिष्ठनृपसजात,—श्चामीकरकरो जिन ॥ १३ ॥
समुद्र इव गम्भीर, कर्मणा छेदने पर ॥ य सार्व
परमब्रह्मा, रत नौमि सदा विभुम् ॥ १४ ॥ इति
सुपार्श्वस्तुति ॥ ७ ॥

॥ चन्द्रप्रभ प्रभो कात, चन्द्रलक्षणसयुत ॥ समा-
पति छविज्ञान, तमोव्यूहविनाशन ॥ १५ ॥ ससार-
जलधेर्नाथ, महसेननृपोद्भव ॥ लक्ष्मणापुत्र मा
स्वामि–न्नव केवलबोधभृत् ॥ १६ ॥ इति चन्द्रप्रभ-
स्तुति ॥ ८ ॥

॥ अत्राद्यछत्रप्रबध श्लोक ॥ सस्तुतो नो ददा-
त्वाशु, सुरासुरनरेश्वरै ॥ मुनिभिर्वाछित शर्म्म,

सुग्रीवनृपनंदन ॥ १७ ॥ यस्यासीज्ञननी रामा, माननीया दिवौकसाम् ॥ मानमुक्तोऽवदातो यो, मायो मकरलांछित ॥ १८ ॥ इति सुविधिनाथस्तुति ॥ ९ ॥

॥ चामरबधाविमौ ॥ श्रीमच्छीतलनाथेश, नंदा-दृढरथात्मज ॥ चास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सालांछक-धारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणाम्भोज,-सेवकानां प्रपुज्र्ता ॥ प्राकृत वृजिनव्यूह, दुष्ट सन्नेय हे विज्ञो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथस्तुति ॥ १० ॥

॥ विष्णुर्वंशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रो हिरण्यच ॥ श्रेयोवृद्धिकरोऽजस्त्र, खड्गलांछनभ्राजिन ॥ २१ ॥ हित्वा कर्मरिपून् सार्व, श्रेयांस श्रेयसे सह ॥ परज्ञानमयेन त्वं, महानन्दपदं परम् ॥ २२ ॥ इति श्रेयांसस्तुति ॥ ११ ॥

॥ वरीवर्त्तितरामीहा, जवतां जवतां यदि ॥ झटिति छेदितु चित्ते, जो जव्या प्राप्तमक्षरम् ॥ २३ ॥ तदा जजध्वमेन हि, वासुपूज्य जयासुतं ॥ वसुपूज्य-कुलोत्तंसं, महिषांक च रक्तभ ॥ २४ ॥ इति वासुपूज्य-स्तुति ॥ १२ ॥

वह्निमलज्ञान, त्वदीयस्मरण विना ॥ कुर्वन्नप्येति नो ब्रह्म, प्रक्रिया नातिविस्तरा ॥ २६ ॥ इति विमलस्तुति ॥ १३ ॥

॥ हेमनर्णस्य पुत्रस्य, सुयश सिंहसेनयो ॥ देवस्य श्येनचिह्नस्य, वर्य्यानन्तगुणोदधे ॥ २७ ॥ इन्द्रादयोऽपि यस्यात, गुणाना लेभिरे न हि ॥ अनन्तस्य गुणास्तस्य, क्षमो वक्तु नर कथम् ॥ २८ ॥ इत्यनन्तस्तुति ॥ १४ ॥

॥ सुव्रतापुत्र वज्राक, भानुवंशार्कसन्निभ ॥ कनकप्रभ सर्वज्ञ, धर्म्मनाथाजिनेश्वर ॥ २९ ॥ तवा गोपि पुरश्चारी, भूतले यात्यशोकता ॥ अनुत्तरफला सति, सतां सगतयोऽपि हि ॥ ३० ॥ इति धर्म्मनाथस्तुति ॥ १५ ॥

॥ विश्वसेनधराधीश, नन्दन मृगलक्षण ॥ आचिरेय सुवर्णांग, कलयामि जिनेश्वर ॥ ३१ ॥ तं श्रीमच्छातिनामान, यस्याग्रे कुर्वते मुदा ॥ प्राज्या सुमनसां वृष्टिं, विबुधा विबुधप्रियाम् ॥ ३२ ॥ इति शातिनाथस्तुति ॥ १६ ॥

॥ श्रीयुताया श्रिय पुत्र, श्रेयस्कर हिरण्यज ॥ सूरिभूपतिसंजात, छागलक्षणधारक ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथ-

सुग्रीवनृपनंदन ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननी रामा, माननीया दिवौकसाम् ॥ मानमुक्तोऽवदातो यो, मायो मकरलाञ्छित ॥ १७ ॥ इति सुविधिनाथस्तुति ॥ ९ ॥

॥ चामरवधाविमौ ॥ श्रीमच्छीतलनायेश, नन्दा-दृढरथात्मज ॥ जास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्साङ्काक-वारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांजोज,–सेवकाना वपु-र्भृता ॥ प्राक्कृत वृजिनव्यूहं, डुष्ट सच्चेद्य हे विजो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथस्तुति ॥ १० ॥

॥ विष्णुर्वंशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रो हिरण्यज ॥ श्रेयोवृद्धिकरोऽजस्त्र, खड्गलाञ्छनजृज्जिन ॥ २१ ॥ हित्वा कर्मरिपून् सार्व, श्रेयास श्रेयसे सह ॥ पर-ज्ञानमयेन त्वं, महानन्दपद परम् ॥ २२ ॥ इति श्रेयासस्तुति ॥ ११ ॥

॥ वरीवर्त्तितरामीहा, जवता जवता यदि ॥ झटिति छेदितु चित्ते, जो जव्या प्रासमङ्करम् ॥ २३ ॥ तदा जजध्वमेन हि, वासुपूज्य जयासुत ॥ वसुपूज्य-कुलोत्तंस, महिपाक च रक्तज ॥ २४ ॥ इति वासुपूज्य-स्तुति ॥ १२ ॥

॥ श्रीमद्विमलनाथेड, कृतवर्मसमुद्भव ॥ शूक-
कल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चङ्-

वह्निमलज्ञान, त्वदीयस्मरण विना ॥ [illegible]
ब्रह्म, प्रक्रिया नातिविस्तरा ॥ ७६ ॥ इति [illegible]
स्तुति ॥ १३ ॥

॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य, सुयश [illegible]
वस्य श्येनचिह्नस्य, वर्य्यानन्तगुणोद्द [illegible]
ज्ञादयोऽपि यस्यात, गुणाना लेभिरे न [illegible]
न्तस्य गुणास्तस्य, क्षमो वक्तु नर. [illegible]
इत्यनन्तस्तुति ॥ १४ ॥

॥ सुव्रतापुत्र वज्राक, भानुवंश [illegible]
प्रज सर्वज्ञ, धर्म्मनाथाजिनेश्वर [illegible]
पुरश्चारी, भूतले यात्यशोकता ॥ [illegible]
सता सगतयोऽपि हि ॥ [illegible]
स्तुति ॥ १५ ॥

॥ विश्वसेनधराधीश, [illegible]
चिरेय सुवर्णांग, कलता [illegible] ताय,
श्रीमच्छातिनामान, यस्या [illegible] ॥७४॥
नसा दृष्टि, विबुधा निवृ [illegible] इति [illegible] ति
नाथस्तुति ॥ १६ ॥

जिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं पापसंदोहं, त्रवातरक्त घन ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथस्तुति. ॥ १७ ॥

॥ सुदर्शननृपोद्भूतं, नन्द्यावर्त्ताकसयुत ॥ श्रजोजवन्निरालेप, देवीपुत्र सुवर्णर्ज ॥ ३५ ॥ जगन्मुत्या गुणा सर्व, धुर्य्यं प्रजुतया जिन ॥ चरीकर्मि नमस्तस्मा, श्ररायं परमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८ ॥

॥ कुंजप्रजावतीपुत्रो, नीलवर्णो घटाकजृत् ॥ जगन्मित्र इत्र ध्वान्त,—नाशनाद्धिदित सदा ॥ ३७ ॥ रत्नत्रययुतो जाति, देवो यो विष्टपत्रये ॥ तस्य श्रीमल्लिनाथस्य, स्मरणेन मुदा सरे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिनाथस्तुति ॥ १९ ॥

॥ सुमित्रनृपते सूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कूर्म्मलक्षणजृत्कर्म्म,—दायक श्यामलछवे ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रत देवेन, क्षीणकर्म्मारिमरुल ॥ देहि त्व मेऽव्ययीजाव, पद तत्पुरुषोत्तम ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रतस्तुति ॥ २० ॥

॥ श्रीमद्विजयजूपाल,—कुलोत्तस हिरण्यरुक् ॥ वप्रासुत नमिनाथ, नीलोत्पलसदकजृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पचजनो देव, निन्दा च कुरुते स्वय ॥ स एति

परमज्ञान, कोऽपि नान्यत्र संशय ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथस्तुति. ॥ २१ ॥

॥ शिवायास्तनये वर्य्ये, समुद्रविजयोद्भवे ॥ हरिवंशहरौ शंभौ शंखांके कमलप्रभे ॥ ४३ ॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमिनाथे जितस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदया माला, प्रत्यक्षेपि जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमिनाथस्तुति ॥ २२ ॥

॥ अश्वसेनाख्यभूपाल,—सुतेन परमेष्ठिना ॥ वामेयेन दिता येन, कमठस्याभिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मै श्रीपार्श्वनाथाय, नमोऽस्तु मामकं सदा ॥ दवनाशनचिह्नाय, नीलवर्णाय शंभवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथस्तुति ॥ २३ ॥

॥श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्क, त्रैशलेय जगन्मणे॥ महानादध्वजार्हत, कल्याणकर सर्वदा॥४७॥ चरमस्तीर्थकृद्वीर, मोहेभहनने मृगात् ॥ त्वद्भक्तिदत्तचित्ताय, कमला देहि मे जिन॥४८॥इति महावीरस्तुति ॥२४॥

॥ इति श्रीक्षमाकल्याणजीकृत चतुर्विंशति जिनेश्वरस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टापदादि नमस्कार ॥

॥ यत्र श्रीभरतेश्वर शुचिमना. पूर्वादिदिक्षु-

क्रमात् । तीर्थेशान् किल युग्मवर्णवसुदिक् संख्यान-
सख्यश्रिय ॥ साधु स्थापयति स्म विस्मितहृदा दृश्य
नगाधीश्वर । त चाष्टापदतीर्थराजमनिश इष्ट्वा समीहे
स्वयम् ॥ १ ॥ इत्यष्टापदस्तुति ॥

॥ लसद्द्विपचाशदधीश्वरालये,—विराजिते श्रीमति
शाश्वताश्रये ॥ नन्दीश्वरे द्वीपवरे जिनेश्वरान्, वदे
प्रमोदाद्भवनीतिशातये ॥ १ ॥ इति नदीश्वरस्तुति ॥

॥ सकलकुशलवल्लीपुष्करावर्तमेघो, दुरित-
तिमिरभानु कल्पवृक्षोपमान ॥ भवजलनिधिपोत'
सर्वसपत्तिहेतु । स भवतु सततं व श्रेयसे पार्श्व-
नाथ ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुति ॥

॥ दर्शनाद्दुरितध्वसी, वदनाद्वाञ्छितप्रद ॥ पूज-
नात्पूरक श्रीणा, जिन साक्षात्सुरद्रुम ॥ १ ॥ इति
जिनस्तुति ॥

॥ सुवर्णवर्ण गजराजगामिन, प्रलबबाहुं सुविशाल-
लोचन ॥ नरामरेन्द्रै स्तुतपादपकज, नमामि
भक्त्या वृषभ जिनोत्तम ॥१॥ इति आदिजिनस्तुति ॥

॥ नमस्कारसमो मन्त्र , शत्रुजयसमो गिरि ॥
वीतरागसमो देवो, न भूतो न भविष्यति ॥ १ ॥
दिठे तुह मुहकमले, तिन्निवि ण्ण गाइ निरवसेसाइ ॥

दारिद्द दोहग्ग,जम्मतरसचिय पाव ॥ १ ॥ पाताले यानि बिंबानि, यानि बिंबानि भूतले ॥ स्वर्गेऽपि यानि बिंबानि, तानि वंदे निरन्तरम् ॥ १ ॥ प्रशमरसनिमग्न दृष्टियुग्म प्रसन्न, वदनकमलमंक कामिनीसंगशून्य ॥ करयुगमपि यत्ते शस्त्रसंबंधवंध्य, तदसि जगति देवो वीतरागस्त्वमेव ॥ १ ॥ इति सर्वजिनस्तुति ॥

॥ इहा जेह सुलखणा, जे जिनवर पूजन्त ॥ एकण धम्मे वाहिरा, परघर कम्म करत ॥ १ ॥ नवबीजांकुरजनना, रागाद्या क्षयमुपागता यस्य ॥ ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥ १ ॥ इति



॥ अथ सदाके देववदनमें तथा दशमे दिन ओली पारणकी विधिमें कहणेका (चै०) (स्त०) थुइ ॥

॥ नव पद चैत्यवदन ॥

॥ जो धुरि सिरि अरिहंत मूलदृढ पीढिपइट्ठिओ, सिद्धि सूरि उवझाय साहु चिहुसाहगरिट्ठिओ ॥ दसण नाण चरित्त ऋहिं पक्साहे सुन्दरु, तत्तक्खर सरवग्ग लद्धि गुरुपय दल भवरु ॥ दिगिवाल जक्ख

जक्खणी पमुह सुर कुसुमेहि अलंकियउं, सो सिद्धचक्क गुरुकप्पतरु अम्ह मनवंछिय दियउं ॥ १ ॥

॥ पुनः नव पद चैत्यवंदन ॥

॥ श्री अरिहंत उदार कांति, अति सुन्दर रूप ॥ सेवो सिद्ध अनन्त शांत, आतम गुण भूप ॥ १ ॥ आचारज उवझाय साधु, शमता रस धाम ॥ जिनभाषित सिद्धांत शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोधिबीज गुण संपदाए नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानन्दपद, ए नव पद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परभव आनन्दकंद, जग मांहि प्रसिद्धो ॥ चिंतामणि सम जास जोग, बहु पुण्ये लद्धो ॥ ४ ॥ तिहुअण सार अपार एह, महिमा मन धारो ॥ परिहर परजजाल जाल, नित एह संभारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्रपद सेवतां, सहजानन्द स्वरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ इति श्रीसिद्धचक्रचैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ नव पद, वृद्धस्तवन ॥

॥ सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नव पद अभिरामी रे लोय ॥ अहो नव० ॥ करुणासागर गुणनिधि, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो जग० ॥ १ ॥ त्रिभुवन

जन पूजित सदा, लोकालोक प्रकाशी रे लोय ॥ अहो लोका० ॥ एहवा श्री अरिहंतजी, नमु चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी. थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ निरुजन्मे नवि आवथी, जे अगम अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे शोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजे पदे, बहु अधिकारी रे लोय ॥ अहो ब० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दुविध आराधी रे लोय ॥ अहो [illegible] चोथे पद पाठक नमो, सवेग समाधि रे [illegible] अहो स० ॥ ५ ॥ पचाचार पालणपरा, पचा[illegible] रे लोय ॥ अहो प० ॥ गुणरागी मुनि [illegible] वडभागी रे लोय ॥ अहो प्र० ॥ ६ ॥ [illegible] उल्लसे, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय [illegible] छठे गुण दरशण नमो, आतम [illegible] अहो आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो [illegible] प्रकारे रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ८ ॥ [illegible] नमो, परभाव निवारी रे लो[illegible]

छेदे रे लोय ॥ अहो वा० ॥ बांध्या काल अनंतना, जे कर्म उछेदे रे लोय ॥ अहो जे० ॥ १० ॥ ए नव पद बहु मानथी, ध्यावे शुभ भावे रे लोय ॥ अहो ध्या० ॥ नृप श्रीपाल तणी परे, मनवंछित पावे रे लोय ॥ अहो म० ॥ ११ ॥ आसु चैत्रक मासमा, नव आंबिल करीए रे लोय ॥ अहो न० ॥ नव ओली विधि युत करी, शिवकमला वरीए रे लोय ॥ अहो शि० ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अहो व० ॥ श्री जिनलाभ कहे सदा, अनुपम जश लीजे रे लोय ॥ अहो अ० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पद स्तवन ॥

॥ राग मारु ॥ तीरथनायक जिनवरुजी, अतिशय जास अनुप ॥ सिद्ध अनन्त महागुणीजी, परमानद सरूप ॥ भविक मन धारजो रे ॥ १ ॥ धारजो नव पदध्यान ॥ भ० ॥ श्री आचारज गणधरु रे, गुण छत्तीश निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरुजी, श्रुतदायक सुविलास ॥ भ० ॥ २ ॥ सुमति गुपतिधर शोभताजी, साधु समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुदरजी, ज्ञानप्रकाश अनन्त ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर साधना

चरण ते रे, तप उत्तम विधि होय ॥ ए नव पदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ ज० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नव पद जाण ॥ अविचल अनुत्तर कारणेजी, नित प्रति नमत कल्याण ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति नवपदस्तवनम् ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

॥ राग प्रभाती ॥ नव पद ध्यान धरो रे ॥ भविका न० ॥ मन वच काया कर एकते, विकथा दूर हरो रे ॥ भ० न० ॥ १ ॥ मंत्र जंत्री अरु तंत्र घणेरा, इन सबकु विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नव पद जपने, पुण्यभंडार भरो रे ॥ भ० न० ॥ २ ॥ अरु सिद्ध नव निध मंगलमाला, संपत्ति सहज वरो रे ॥ लालचंद याकी बलिहारी, शिवतरु बीज खरो रे ॥ भ० न० ॥ ३ ॥ इति श्रीसिद्धचक्रस्तवनम् ॥

॥ अथ नव पद थुइ ॥

॥ नित प्रति हु प्रणमु, सिद्धचक्र शुभ भाव ॥ हिव कारज सिद्धिनो, लाधो एह उपाय ॥ तुज नाम पसाये, आरति व्याधि पुलाय ॥ इम तुज अनुग्रहथी, सुख संपत्ति मुज थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमीए, सिद्ध

सूरि उवझाय ॥ मुनिवर त्रिक करणे, दसण नाण सुहाय ॥ दुगविवि चारित्ते, वुध विध तप मन लाय ॥ ए नव पद ध्यावतां, निरुपम शिवसुख थाय ॥ २ ॥ विद्यापरवादे, जाणो ए अविकार ॥ श्रीगुरु उपदेशे, सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे, लाख्यो एह विचार ॥ भविजन नित ध्यावो, सुरतरु गुणभंडार ॥३॥ जिनधरम अनुरागी, चक्केसरी सुखकार ॥ सेवकने आपे, सुख सपत्ति परिवार ॥ हिव निधि उदयकरी, चारित्र नदी मन लाय ॥ जिनचद सूरीसर, खरतर-पति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति नवपदस्तुति ॥

॥ अथ नव पद ओली करण विधि ॥

॥ प्रथम आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ से ओली शरु करे । कदाच तिथि घटी हुवे तो ६ से, वधी हुवे तो आठमसे शरु करे । पिण आविल ए पूनिम ताइ करे। तिहां प्रथम भूमि शुद्ध करके मारु-लादिकसे चित्रित करे, पीछे बाजोठ उपरी सिद्धचक्र थापे । त्रिकाल पूजा करे सो लिखते हैं ॥ प्रभात समय राइ पडिक्कमण करके पीछे वस्त्र पडिलेहे । जहा सिद्धचक्र स्थापना है तहा आयके पांच शक्रस्तवे

देव वादे । पीछे नव चैत्ये अथवा नव प्रतिमा आगे नव चैत्यवदन करे। वासक्षेपने पूजा करे । पीछे केसर चदनसे पूजा करे। पीछे मध्याह्न समय पाच शक्रस्तवे देव वादे । पीछे गुरु पासे आयके राइ आलोचे । अप्जुठ्ठिउमि खमायके आनिलनु पच्चखाण करे । प्रथम अरिहृतपदका वर्ण सफेद है, इसीसे आनिलमें चावल अने गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेगु ऐसो आविल पच्चखे। पीछे अरिहृतपदके बारे गुण है सो चिंतवके बारे नमस्कार करे सो लिखते है ॥ प्रथम सर्व ठेकाणे इच्छामि खमासमणो व० इत्यादि कहके नमस्कार करे ॥

॥ अरिहंतपदके १२ गुण ॥

१ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहृताय नम
२ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहृताय नम ॥
३ दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहृताय० ॥
४ चामरयुगप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहृताय० ॥
५ स्वर्णसिंहासनप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहृताय०॥
६ भामण्डलप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहृताय नम ॥
७ दुन्दुभिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहृताय नम. ॥

८ छत्रत्रयप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
९ ज्ञानातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
१० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
११ वचनातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
१२ अपायापगमातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करके 'अरिहंत उसासिएण' कहके वार लोगस्सका काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स प्रगट कहे । पीछे स्वस्थानक जाके चैत्यवंदन करे। पच्चक्खाण पारके आंबिल करे। पहले जल पीवे जब चैत्यवंदन करके पीवे। पीछे फेर चैत्यवंदन करके तिविहार पच्चक्खाण करे। 'ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण' इस पदको २००० गुणणो करे। श्रीपालजीको चरित्र, नव पद महिमा सुणे। पुण पहर दिन रहणेसे तीसरी वेर पाच शक्रस्तवे देव वांदे । सामायिक लेके दिन छते पडिक्कमण करे । आरतीके समय दीप, धूप, कुसुमपूजा करे। अथवा पहिले आरती प्रमुख करके पीछे पडिक्कमण करे। (सोनेके समय) इरियावही पडिक्कमके चैत्यवंदन करके राइ संथारा गाथा गुणके सोवे । निद्रा न आवे जहां तक नव पदका गुण स्मरण करे ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधि ॥

॥ अब इसी तरेह दूसरे दिन प्रभातकी करणी सब करके सिद्धपदका लाल वर्ण है, इसीसे गहुके रोटीको आंबिल करे। 'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' इस पदको गुणणो दो हजार करे। सिद्धपदके आठ गुण है सो ८ गुणाको गुरु नमस्कार करावे सो लिखते है ॥

॥ सिद्धपदके ८ गुण ॥

१ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
२ अनन्तदर्शनसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
३ अव्याबाधगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
४ अनन्तचारित्रगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
५ अक्षयस्थितिगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
६ अरूपिनिरंजनगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
७ अगुरुलघुगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
८ अनन्तवीर्यगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥

॥ यह आठ नमस्कार करके अन्नत्थ ऊससिएणं कहके आठ लोगस्सका काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स कहके पारे। पीछे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसे करे ॥ इति द्वितीय दिवस विधि ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि ॥

॥ पूर्वोक्त विधिसे प्रभातकर्तव्य करे। आचार्य-पद पीले वर्ण है इसीसे चिणाकी दालका आंबिल करे। 'ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं' इस पदको गुणणो दो हजार करे। आचार्यपदके ३६ गुण याद करके छत्तीस नमस्कार करे सो लिखते है ॥

॥ आचार्यपदके ३६ गुण ॥

१ प्रतिरूपगुरुसंयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नम' ॥
३ युगप्रधानागमसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
४ मधुरवाक्यगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
५ गाम्भीर्यगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम, ॥
६ धैर्यगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
७ उपदेशगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
८ अपरिश्राविगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
१० शीलगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
११ अविग्रहगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
१२ अविकथकगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम. ॥

१३ अचपलगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
१४ प्रसन्नवदनगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
१५ क्षमागुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
१६ ऋजुगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
१७ मृदुगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
१८ सर्वसगमुक्तिगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
१९ द्वादशविधतपगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
२० सप्तदशविधसयमगुणसयुताय श्रीआचार्याय० ॥
२१ सत्यव्रतगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
२२ शौचगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
२३ अकिंचनगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥
२५ अनित्यभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥
२६ अशरणभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥
२७ ससारस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
२८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥
३० अशुचिभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम. ॥
३१ आश्रवभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम. ॥
३२ सवरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥

३३ निर्ज्जराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥
३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
३५ बोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥

॥ यह छत्तीस नमस्कार करके अन्नत्थ ऊससिएण इत्यादि कहके छत्तीस (३६) लोगस्सका काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स ऊंचे स्वरसे कहके पारे। यथोक्त करणी अनुक्रमसे करे ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाण' इस पदको २ हजार गुणणो करे। लील मूगाकी दाल प्रमुखका आबिल करे। उपाध्यायपदके २५ गुण याद करके नमस्कार करे ॥

॥ उपाध्यायपदके २५ गुण ॥

१ श्रीआचारांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्या० ॥
२ श्रीसुयगडांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्या० ॥
३ श्रीठाणांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय०॥
४ श्रीसमवायांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
५ श्रीभगवतीसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय०॥

६ श्रीज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
७ श्रीउपासकदशासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
८ श्रीअन्तगडदशासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
११ श्रीविपाकसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१२ उत्पादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय नम ॥
१३ आग्रायणीपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१४ वीर्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय०
१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१७ सत्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१८ आत्मप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय०
१९ कर्मप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२१ विद्याप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याया० ॥
२२ अविंध्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२३ प्राणायामप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२४ क्रियाविशालपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय०
२५ लोकबिन्दुसारपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥

॥ इस रीतसे पचवीस नमस्कार करे। खमा होके अन्नत्थ ऊससिएण इत्यादि कहके पचवीस लोगस्सका काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स कहके पारे। पीछे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि॥

॥ अथ पचम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं' इस पदको २ हजार गुणणो करे। साधुपद काले वर्ण है, इसीसे उमदका आविल करे। सर्व साधुपदके सत्तावीस गुण चितवके नमस्कार करे ॥

॥ साधुपदके २७ गुण ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
२ मृपावाद्निरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
३ अदत्तादानविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
४ मैथुनविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
५ परिग्रहविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
६ रात्रिभोजनविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
८ अप्कायरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
९ तेउकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥

लोगस्सका काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स कहके पारे। पीछे पूर्वोक्त करणी करे । यह पच परमेष्ठिपदके सर्व गुण मिलाऐंसे १०८ होय । इसीसे जैनमें मालाके दाणे (१०८) होते है ॥ इति पचम दिवस विधि ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं णमो दसणस्स' इस पदको २ हजार गुणणो करे। दर्शनपद सफेत वर्ण है, इसीसे तंदुलका आंबिल करे । सम्यक्तके सतसठी गुण चितवके नमस्कार करे ॥

॥ सम्यक्तके सतसठी भेद ॥

१ परमार्थसस्तवरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनरूपसद्दर्शनाय नम ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूपसद्दर्शनाय नम ॥
४ कुदर्शनवर्जनरूपसद्दर्शनाय नम. ॥
५ शुश्रूषारूपसद्दर्शनाय नम ॥
६ धर्मरागरूपसद्दर्शनाय नम ॥
७ वैयावृत्यरूपसद्दर्शनाय नम ॥
८ अर्हद्विनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
९ सिद्धविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥

१० चैत्यविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
११ श्रुतविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
१२ धर्मविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
१३ साधुवर्गविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
१४ आचार्यविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
१५ उपाध्यायविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
१६ प्रवचनविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
१७ दर्शनविनयरूपसद्दर्शनाय नम ॥
१८ ससारे जिनसारमिति चितनरूपसद्दर्शनाय नम ॥
१९ ससारे जिनमतिसारमिति चिंतनरूपसद्दर्शनाय०॥
२० ससारे जिनमतिस्थितसाध्वादिसारमिति चितन-
रूपसद्दर्शनाय नम ॥
२१ शकादूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
२२ काक्षादूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
२३ विचिकित्सारूपदूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
२४ कुदृष्टिप्रशसादूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
२५ तत्परिचयदूपणरहिताय सद्दर्शनाय नम ॥
२६ प्रवचनप्रभावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
२७ धर्मकथाप्रभावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
२८ वादिप्रभावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥

२९ नैमित्तकप्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
३० तपस्विप्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिविद्याभृत्प्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
३२ चूर्णांजनादिसिद्धप्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम ॥
३३ कविप्रज्ञावकरूपसद्दर्शनाय नम. ॥
३४ जिनशासने कौशलजूपणरूपसद्दर्शनाय नम. ॥
३५ प्रज्ञावनाजूपणरूपसद्दर्शनाय नम
३६ तीर्थसेवाजूपणरूपसद्दर्शनाय नम ॥
३७ धैर्यजूपणरूपसद्दर्शनाय नम ॥
३८ जिनशासने भक्तिजूपणरूपसद्दर्शनाय नम ॥
३९ उपशमगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४० सवेगगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४१ निर्वेदगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४२ अनुकपागुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४३ आस्तिक्यगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४४ परतीर्थकादिवदनवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय० ॥
४६ परतीर्थकादिआलापवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४७ परतीर्थकादिसलापवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम' ॥
४८ परतीर्थकादिअशनादिदानवर्जनरूपश्रीसद्दर्श० ॥

४९ परतीर्थकादिगधपुष्पादिप्रेषणवर्जनरूपश्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
५४ कातारवृत्त्याकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
५६ सम्यक्त्व चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिं० श्री० ॥
५७ सम्यक्त्व धर्मपुरस्य द्वारमिति चिं० श्रीस० ॥
५८ सम्यक्त्व धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिं० श्रीस० ॥
५९ सम्यक्त्व धर्मस्याधारमिति चिं० श्रीस० ॥
६० सम्यक्त्व धर्मस्य भाजनमिति चिं० श्रीस० ॥
६१ सम्यक्त्व धर्मस्य निधिसन्निभमिति चिं० श्री० ॥
६२ अस्ति जीव इति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीसद्दर्शनाय०
६३ स च जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्तश्री० ॥
६४ स च जीव कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान-
युक्तश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
६५ स च जीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान-
स्थानयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति

६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धानस्थानयुक्त० ॥

॥ इस रीतसे सतसठी नमस्कार करे। खमा होके अन्नत्र ऊससिएण० इत्यादि कहके ६७ लोगस्स अथवा ७ लोगस्सका काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स कहके पारे। पीछे पूर्वोक्त करणी करे ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो नाणस्स' इस पदको २ हजार गुणणो करे। ज्ञानपद उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे तन्दुलका आंबिल करे। इक्कावन नेद ज्ञानपदके चितनके नमस्कार करे ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ नेद ॥

१ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
६ रसनेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
७ घ्राणेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
८ चक्षुरिंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥

९ श्रोत्रेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
१० मनोऽर्थावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
११ स्पर्शनेंद्रियईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१२ रसनेंद्रियईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१३ घ्राणेंद्रियईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१४ चक्षुरिंद्रियईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१५ श्रोत्रेंद्रियईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१६ मन ईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१७ स्पर्शनेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
१८ रसनेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
१९ घ्राणेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२० चक्षुरिंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२१ श्रोत्रेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२२ मनोऽपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२३ स्पर्शनेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२४ रसनेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२५ घ्राणेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२६ चक्षुरिंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२८ मनोधारणामतिज्ञानाय नमः ॥

२९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षरश्रुतज्ञानाय नम ॥
३१ संज्ञिश्रुतज्ञानाय नम ॥
३२ असंज्ञिश्रुतज्ञानाय नम ॥
३३ सम्यक्श्रुतज्ञानाय नम ॥
३४ मिथ्याश्रुतज्ञानाय नम ॥
३५ सादिश्रुतज्ञानाय नम ॥
३६ अनादिश्रुतज्ञानाय नम ॥
३७ सपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नम ॥
३८ अपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नम ॥
३९ गमिकश्रुतज्ञानाय नम ॥
४० अगमिकश्रुतज्ञानाय नम ॥
४१ अंगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नम ॥
४२ अनंगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नम
४३ अनुगामिअवधिज्ञानाय नम ॥
४४ अननुगामिअवधिज्ञानाय नम ॥
४५ वर्धमानअवधिज्ञानाय नमः ॥
४६ हीयमानअवधिज्ञानाय नम ॥
४७ प्रतिपातिअवधिज्ञानाय नम ॥
४८ अप्रतिपातिअवधिज्ञानाय नमः ॥

४७ ऋजुमतिमन पर्यवज्ञानाय नम ॥
५० विपुलमतिमन पर्यवज्ञानाय नम ॥
५१ लोकालोकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ इस रीतसे ५१ नमस्कार करे। खमा होके अन्नत्थ ऊससिएण इत्यादि कहे।५१ लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स कहे। पीछे सर्व पूर्वोक्त करणी करे। इति सप्तम दिवस विधि ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स' इस पदको २ हजार गुणणो करे। चारित्रपदका उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे तडुलका आंबिल करे। सित्तर भेद चारित्रपदके चिंतनके नमस्कार करे ॥

॥ अथ चारित्रपदके ७० भेद ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूपचारित्राय नम ॥
२ मृषावादविरमणरूपचारित्राय नम ॥
३ अदत्तादानविरमणरूपचारित्राय नम ॥
४ मैथुनविरमणरूपचारित्राय नम ॥
५ परिग्रहविरमणरूपचारित्राय नम ॥
६ क्षमाधर्मरूपचारित्राय नमः ॥

७ आर्जवधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
८ मृदुताधर्मरूपचारित्राय नम· ॥
९ मुक्तिधर्मरूपचारित्राय नम ॥
१० तपोधर्मरूपचारित्राय नम ॥
११ संयमधर्मरूपचारित्राय नमः
१२ सत्यधर्मरूपचारित्राय नम ॥
१३ शौचधर्मरूपचारित्राय नम· ॥
१४ अकिंचनधर्मरूपचारित्राय नम ॥
१५ वजधर्मरूपचारित्राय नम ॥
१६ पृथ्वीरक्षासंयमचारित्राय नम' ॥
१७ उदकरक्षासयमचारित्राय नम ॥
१८ तेउरक्षासयमचारित्राय नम ॥
१९ वाउरक्षासंयमचारित्राय नम ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयमचारित्राय नम ॥
२१ वेइन्द्रियरक्षासयमचारित्राय नम ॥
२२ तेइन्द्रियरक्षासयमचारित्राय नम ॥
२३ चौरिन्द्रियरक्षासंयमचारित्राय नम ॥
२४ पचेन्द्रियरक्षासंयमचारित्राय नम ॥
२५ अजीवरक्षासयमचारित्राय नम ॥
२६ प्रेक्षासंयमचारित्राय नम ॥

२७ उपेक्षासयमचारित्राय नम ॥
२८ अतिरिक्तवस्त्रभक्तादिपरठणत्यागरूपसंयम० ॥
२९ प्रमार्जनरूपसयमचारित्राय नमः ॥
३० मन सयमचारित्राय नम ॥
३१ वाक्संयमचारित्राय नम ॥
३२ कायासयमचारित्राय नम ॥
३३ आचार्यवैयावृत्त्यरूपसंयमचारित्राय नम ॥
३४ उपाध्यायवैयावृत्त्यरूपसयमचारित्राय नम ॥
३५ तपस्विवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नम ॥
३६ लघुशिष्यादिवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नम ॥
३७ ग्लानसाधुवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नम. ॥
३८ साधुवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नम ॥
३९ श्रमणोपासकवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नम ॥
४० सघवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नम ॥
४१ कुलवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नम ॥
४२ गणवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नम. ॥
४३ पशुपण्डगादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्तिचारित्रा०॥
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय० ॥
४५ स्त्रीआसनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नम ॥
४६ स्त्रीअगोपागनिरीक्षणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय०

४७ कुड्यरस्थितस्त्रीहावभावश्रवणवर्जनब्रह्मगुप्ति० ॥
४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नम ॥
४९ अतिसरसआहारवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नम ॥
५० अतिआहारकरणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नम ॥
५१ अगविभूषावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय-नमः ॥
५२ अनशनतपोरूपचारित्राय नम ॥
५३ ऊनोदरीतपोरूपचारित्राय नम ॥
५४ वृत्तिसक्षेपतपोरूपचारित्राय नम ॥
५५ रसत्यागतपोरूपचारित्राय नम ॥
५६ कायक्लेशतपोरूपचारित्राय नम ॥
५७ सलेखनातपोरूपचारित्राय नम ॥
५८ प्रायश्चित्ततपोरूपचारित्राय नम ॥
५९ विनयतपोरूपचारित्राय नम ॥
६० वेयावच्चतपोरूपचारित्राय नम ॥
६१ सज्झायतपोरूपचारित्राय नम ॥
६२ ध्यानतपोरूपचारित्राय नम ॥
६३ उपसर्गतपोरूपचारित्राय नम ॥
६४ अनंतज्ञानसयुक्तचारित्राय नम ॥
६५ अनतदर्शनसयुक्तचारित्राय नम ॥
६६ अनतचारित्रसयुक्तचारित्राय नम ॥

६७ क्रोधनिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥
६८ माननिग्रहकरणचारित्राय नम ॥
६९ मायानिग्रहकरणचारित्राय नम ॥
७० लोजनिग्रहकरणचारित्राय नम ॥

॥ इस रीतसे ७० नमस्कार करे। खमा होके अन्नछ ऊससिएणं० इत्यादि कहे। ७० लोगस्सका काउस्सग्ग करके एक लोगस्स कहे। पीछे पूर्वोक्त करणी सब करे। इति अष्टम दिवस विधि ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो तवस्स' इस पदको २ हजार गुणणो करे। तपपदका उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे तङुलका आविल करे। पचास भेद तपपदके चिंतवके नमस्कार करे ॥

॥ अथ तपपदके ५० भेद ॥

१ यावत्कथिकतपसे नम ॥
२ इत्वरतपोभेदतपसे नम ॥
३ बाह्यऊनोदरीतपोभेदतपसे नम ॥
४ अभ्यतरऊनोदरीतपोभेदतपसे नम ॥
५ द्रव्यतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नम ॥

६ क्षेत्रतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नम. ॥
७ कालतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नम ॥
८ भावतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नम ॥
९ कायक्लेशतपोभेदतपसे नम ॥
१० रसत्यागतपोभेदतपसे नम ॥
११ इन्द्रियकषाययोगविषयकसंलीनतातपसे नम ॥
१२ स्त्रीपशुपण्डकादिवर्जितस्थानअवस्थितसंलीनता०।
१३ आलोयणप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१४ पडिक्कमणप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१५ मिश्रप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१६ विवेकप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१७ उपसर्गप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१८ तप प्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१९ छेदप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
२० मूलप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
२१ अनवस्थितप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
२२ पारंचियप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
२३ ज्ञानविनयरूपतपसे नम ॥
२४ दर्शनविनयरूपतपसे नम ॥
२५ चारित्रविनयरूपतपसे नम ॥

२६ गुर्वादिकमनोविनयरूपतपसे नम. ॥
२७ वचनविनयरूपतपसे नम ॥
२८ कायविनयरूपतपसे नम ॥
२९ उपचारकविनयरूपतपसे नम ॥
३० आचार्यवेयावच्चतपसे नम ॥
३१ उपाध्यायवेयावच्चतपसे नम ॥
३२ साधुवेयावच्चतपसे नम ॥
३३ तपस्विवेयावच्चतपसे नम ॥
३४ लघुशिष्यादिवेयावच्चतपसे नम ॥
३५ ग्लानसाधुवेयावच्चतपसे नम ॥
३६ श्रमणोपासकवेयावच्चतपसे नम ॥
३७ सघवेयावच्चतपसे नम ॥
३८ कुलवेयावच्च तपसे नम ॥
३९ गणवेयावच्चतपसे नम ॥
४० वायणातपसे नम ॥
४१ पृछनातपसे नम ॥
४२ परावर्त्तनातपसे नम ॥
४३ अनुप्रेक्षातपसे नम. ॥
४४ धर्मकथातपसे नम. ॥
४५ आर्त्तध्याननिवृत्ततपसे नम ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्ततपसे नम ॥
४७ धर्मध्यानचितनतपसे नमः ॥
४८ शुक्लध्यानचिंतनतपसे नम. ॥
४९ वाह्यउपसर्गतपसे नम ॥
५० अन्यतरउपसर्गतपसे नम ॥

॥ इस रीतसे ५० नमस्कार करे । खमा होके अन्नत्थ उससिएणं इत्यादि कहे । ५० लोगस्सका काउस्सग्ग करके एक लोगस्स कहे । पीछे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति नवम दिवस विधि ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेको गुरुके पास जानेकी विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन, शुभ घमी देखके अच्छा आनूषण पहरे । निलाममें तिलक करे । दोव सरसु मस्तकमें धारण करे । हाथके मोली वांधके अक्षत, सुपारी, श्रीफल, नैवेद्य, यथाशक्ति रोक नाणो लेके, नवकार गुणतो थको पास जावे । द्वादशावर्त्त वादणा करके ग्यान पूजा करे । पीछे वहुत प्रमोदवत होके गुरुके मुखसे उंली तप ग्रहण करे ।

सो तपस्या ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखेंगे। इति तपस्या ग्रहण करनेको पोशाल जानेकी विधि ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणा विधि ॥

॥ पच वर्णके धान्यसे सिद्धचक्रका मंडल करे। सिद्धचक्रजीके चोतरफ तीन गढ चूडीके आकार बनावे। पहिले गढ माहे अष्ट दल कमलके आकार नव पद स्थापन करे। पद पदके वर्ण गुण प्रमाणे रत्नादिक चढावे। और पच वर्णके फल, पच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रगके जिस पदका जैसा वर्ण होय तैसेही रगका गोटा चढावे। पच वर्णी ए ध्वजा चढावे। दूसरे वलयमें सोले श्रीफल अथवा पूगीफल चढावे। तीसरे वलयमें ४८ छुहारा चढावे। नव निधानके ठिकाणे ए नव वस्त्र फल चढावे। दश दिक्पाल, नव ग्रहको पक्वान्न प्रमुख चढावे। इत्यादिक विधि सयुक्त सिद्धचक्रस्थापना घर देरासर आगे करे। और जिनमदिर माहे वाह्य मरूपे ५–७ हाथ प्रमाणे मण्डलरचना करे। विस्तारसे सव विधि गुरुके वचनसे करके नव पदजीकी पूजा पढायके कलश ढाले। धवल मगल गीत गान गावे। वाजित्र वजावे।

इसी तरेह् महा महोत्छव उदार चित्तसे करे। मंगल-दीप, आरती प्रमुख करे। दूसरे दिन विसर्जन करे॥
॥ इति सक्षेप सिद्धचक्र मंगलविधि ॥

॥ सिध्धचक्र संक्षेप उद्यापन विधि ॥

॥ अव १० मे दिन गुरुके पास आके ओली तपको पारे। तप पारणकी विधि आगे लिखेगे। तथा उद्यापनमें ज्ञानभक्तिके कारण ए पूठा, ए वीटा-गणां, ए पुस्तक, ए लेखण, ए ठवणी, ए झिलमिल, ए रुमाल, ए दोरा, ए मिजासणा, ए थापना, ए चक्कुआ, ए पूठीआ, ए आरती, ए कलश, ए जापमाला, ए मंदिर, ए प्रतिमा, ए तिलक, ए मुगट। इत्यादिक अनेक नव नव चीज बनावे। शक्ति न होय तो यथा-शक्ति रोक नाणो चढावे। देवपदको देवपदमें देवे। गुरुपदको गुरुपदमे देवे। ज्ञानपदको ज्ञानखाते लगावे। इत्यादिक यथायोग्य शुभ क्षेत्रे खरच करे॥
॥ इति सिद्धचक्र सक्षेप उद्यापन विधि ॥



॥ श्री देवचंद्रजी कृत स्नात्रपूजा प्रारभ्यते ॥

॥ पाकृत गाथा ॥ ढाल पहेली ॥

॥ दोहा ॥ चउत्तिसे अतिसय जुर्ड, वचनातिशय जुत्त ॥ सो परमेसर देखी नवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासन बेठा जग जाण, देखी नविक जन गुण मणि खाण ॥ जे दीठे तुज निर्मल नाण, लहीए परम महोदय ठाण ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, तोरां चरणकमल सेवे चोसठ इंदा ॥ कुं० ॥ १ ॥ चोवीश वैरागी, चोवीश सोभागी, चोवीश जिणंदा ॥ कुं० ॥ एम कही प्रभुना चरणे पूजा करीए ॥ गाथा ॥ जो निय गुण पज्जव रम्यो, तसु अनुनव एगंत ॥ सुह पुग्गल आरोपता, जो तसु रंग निरत्त ॥ २ ॥ ढाल ॥ जो निज आतम गुण आणंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी ॥ जे परमेसर निज पद लीन, पूजो प्रणमो नव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥ तो० ॥ कुं० ॥ २ ॥ एम कही प्रभुना जानुए पूजा करीए ॥ गाथा ॥ निम्मल नाण पयासकर, निम्मल गुण संपन्न ॥ निम्मल धम्मोवएसकर, सो परमप्पा ...३ ॥ ढाल

नाणी, नविजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानंद तणी निशाणी, तसु नगते मुज मति ठहराणी ॥ कुसुमांजलि मेलो नेम जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ३ ॥ एम कही प्रनुना वे हाथे पूजा करीए ॥ गाथा ॥ जे सिद्धा सिद्यति जे, सिद्यसति अणंत ॥ जसु आलंबन ठविय मण, सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥ ढाल ॥ शिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामे जगत नीहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ४ ॥ एम कही प्रनुना खन्नाए पूजा करीए ॥ गाथा ॥ सम्मद्दिठी देस जय, साहु साहुणी सार ॥ आचारिज उवज्काय मुणि, जो निम्मल आधार ॥ ५ ॥ ढाल ॥ चउविह संघे जे मन धार्युं, मोक्ष तणु कारण निरधार्युं ॥ विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ एम कही प्रनुने मस्तके पूजा करीए ॥ इति पांचमी गाथा ॥

॥ वस्तु ठंद ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर, नमिय मनरंग, कल्याणकविहि संघविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इग सत्तरि तिछकर,

एक समय विहरति महीयल ॥ चवण समय इग-वीस जिण, जम्म समय इगवीस ॥ भत्तिय भावे पूजीया, करो सघ सुजगीश ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ एक दिन अचिरा हुलरावती ॥ ए देशी ॥

॥ भव त्रीजे समकित गुण रम्या, जिनभक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजी इन्द्रियसुख आशसना, करी स्थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहवी भावता ॥ सवि जीव करु शासनरसी, इसी भावदया मन उल्लसी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवु भलु, नीपजावी जिनपद निर्मलु ॥ आयुबध वचे एक भव करी, श्रद्धा सवेग ते थिर धरी ॥ ३ ॥ त्याथी चवीय लहे नरभव उदार, भरते तेम ऐरवतेज सार ॥ महाविदेहे विजये वर प्रधान, मध्य खडे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपनानी ढाल त्रीजी ॥

॥ पुण्ये सुपनह देखे, मन मांहे हर्ष विशेषे ॥ गजवर उज्ज्वल सुदर, निर्मल वृषभ मनोहर ॥ १ ॥ निर्भय केसरी सिंह, लक्ष्मी अतिही अबीह ॥ अनुपम फूलनी माल, निर्मल शशी सुकुमाल ॥ २ ॥ तेजे

तरणि अति दीपे, ऽऽध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश पडूर, पद्म सरोवर पूर ॥ ३ ॥ अग्यारमे रयणायर, देखे माता गुण सायर ॥ बारमे भुवन विमान, तेरमे अनुपम रत्ननिधान ॥ ४ ॥ अग्निशिखा निरधूम, देखे माताजी अनुपम ॥ हर्षी रायने जापे, राजा अरथ प्रकाशे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होशे पुत्र मनोहर ॥ इन्द्रादिक जसु नमशे, सकल मनोरथ फलशे ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥ पुण्यउदय पुण्यउदय, उपना जिननाह, माता तव रयणी समे, देखी सुपन हरखती जागीय ॥ सुपन कही निज कतने, सुपन अरथ सांजलो सोजागीय । त्रिभुवन तिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान । इन्द्रादिक जसु पाय नमी, करशे सिद्धि विधान ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ चन्द्रावलानी देशीमां ॥

॥ सोहमपति आसन कपीयो ए, देइ अवधि मन आणंदीयो ए ॥ निज आतम निर्मल करण काज, भवजलतारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥ भवअटवी पारग सत्थवाह, केवल नाणाइय गुण अगाह ॥

शिवसाधन गुण अंकुरो जेह, कारण उलट्यो आसाढी मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसी तव रोमराय, वलयादि-कमां निज तनु न माय ॥ सिंहासनथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमतो जिन आनंदकंद ॥ ३ ॥ सग अम पय सामो आवी तत्र, करी अंजलिय प्रणमीय मत्र ॥ मुखे भाखे ए ढाण आज सार, तिय लोय पहु दीठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तुम सवेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या विष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव सकल तारण समत्र, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनाथ ॥ एम जंपी शक्र स्तव करेवि, तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥६॥ गावे तव रंभा गीत गान, सुरलोक हुवो मंगल निधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंश गाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उत्सव अशेष, जिनशासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर्ष संग, संयमअर्थी जनने उमंग ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइ वधाइ थइ अतीव ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ श्री शांति जिननो कलश कहीशुं, प्रेमं
पूर ॥ ए देशी ॥

॥ श्री तीर्थपतिनु कलश मज्जन, गाइए सुखं
नरखित्त मंरुण डुह विहंरुण, जविक मन
तिहां राव राणा हर्षे उत्सव, थयो जग जयद
दिशिकुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ष
॥ १ ॥ निय अमर अमरी सग कुमरी, गावती
ठद ॥ जिन्न जिननी पासे आवी पहोती, गहग
आणद ॥ हे माय ! ते जिनराज जायो, चि
रम्म ॥ अम जम्म निम्मल करण कारण,
कम्म ॥२॥ तिहा जूमि शोधन दीप दर्पण, वाय
धार ॥ तिहा करीय कदली गेह जिनवर, जननी
नकार ॥ वर राखरुी जिनपाणि बाधी, दीए
शीप ॥ जुग कोमाकोमी चिरं जीवो, धर्मदायक

॥ ढाल बही ॥ एकवीशानी ॥

॥ जगनायकजी, त्रिभुवन जन हितकार
परमातमजी, चिदानद घन सार ए
॥ ए देशी ॥

॥ ढाल ॥ जिण रयणीजी, दश दिशि

-माधन रमी देवकोकी हसी, ठह्लमीने
.. दिशि ॥ पउमदह आदि दह गग
-तीर्थजल अमल लेवा जणी ते गड ॥ १ ॥
...करी सहस्र अठोतरा, छत्र चामर
...जतग ॥ उपकरण पुष्प चगेरी पमुहा
...र नावीया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थ-
...कर कलश करी देवता, गावता भावता
...ता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता,
...क्ति शुचि तक्ति पम भावता ॥ ३ ॥ सम-
निज आतम आरोपना, कलश पाणी-
...जल सिचना ॥ मेरुसिहरोवरे सर्व आव्या
उत्सग जिन देखी मन गहगही ॥ ४ ॥
...व्ट ॥ हद्दो देवा हद्दो देवा अणाड कालो,
... तिलोयतारणो तिलोयबधु, मिच्छत्तमोह
॥ अणाड तिण्हा विणासणो, देवाहिदेवो
...य कामेहिं ॥ ५ ॥
तेहीज ॥ एम पभणत वण भवण जोड-
वेमाणिया भत्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्प-
मित्ताणुगा, केवि वर रमणि वयणेण
... ॥ ६ ॥

समो कोण अन्य ए॥ हे जगतजननी! पुत्र तुमचो, मेरु मज्जन वर करी॥ उत्संग तुमचे वलीय थापीश, आतमा पुण्ये भरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी, जिन निज करकमले ठव्या॥ पंच रूपेजी, अतिशे महिमाए स्तव्या॥ नाटक विधिजी, तव बत्रीश आगल वहे॥ सुर कोमीजी, जिनदर्शनने उम्महे॥ त्रुटक॥ सुर कोमाकोमी नाचती वली, नाथ शुचि गुण गावती॥ अप्सरा कोमी हाथ जोमी, हाव भाव देखावती ॥ जयो जयो तु जिनराज जगगुरु, एम दे आशीष ए॥ अम्ह त्राण शरण आधार जीवन, एक तु जगदीश ए ॥४॥ ढाल ॥ सुरगिरिवरजी, पामुक वनमें चिहु दिशे ॥ गिरि शिल परजी, सिंहासन सासय वसे॥ तिहां आणीजी, शक्रे जिन खोले ग्रह्या ॥ चौसठेजी, तिहा सुरपति आवी रह्या॥ त्रुटक ॥ आवीया सुरपति सर्व भक्ते, कलश श्रेणी बनाव ए॥ सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि, सर्व वस्तु अणाव ए॥ अच्चुअपति तिहा हुकम कीनो, देव कोमाकोमीने॥ जिन मज्जनारथ नीर लावो, सवे सुर कर जोमीने ॥५॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शांतिने कारणे इंद्र कलशा भरे॥ ए देशी ॥

॥ आत्मसाधन रसी देवकोमी हसी, उल्लसीने वसी क्षीरसागर दिशि ॥ पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवा जणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अम कलश करी सहस अठोतरा, छत्र चामर सिंहासण शुजतरा ॥ उपकरण पुप्फ चंगेरी पमुहा सवे, आगमे जाषीया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थ-जल जरीय कर कलश करी देवता, गावता जावता धर्म उन्नतिरता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम शक्ति शुचि जक्ति एम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिषे जक्तिजल सिंचता ॥ मेरुसिंहगिरवरे सर्व आव्या वही, शक्र उत्संग जिन देखी मन गहगही ॥ ४ ॥

॥ वस्तु छंद ॥ हहो देवा हंहो देवा अणाइ कालो, अदिठ पुवो तिलोयनारणो तिजोयबंधु मिच्छमोह विखसणो ॥ अणाइ तिण्हा विणासणो, देवाहिदेवो दिठ बोहिय कामेहि ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेवीस ॥ एम पत्तवण वण जोइ सरा, देव वेमाणिया जन्ति ज्मणा ॥ केवि कप्प ठिया केवि मित्ताणुगा केवि वर रमणि वयणे अइ उल्लुगा ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥ तब अच्चुय तब अच्चुय इंद आदेस ॥ कर जोमी सवि देवगण, लेय कलस आदेस पामीय ॥ अद्भुत रूप सरूप जुअ, कवण एह उत्सगे सामिय ॥ इंद कहे जगतारणो, पारग अम परमेस ॥ नायक दायक धम्मनिहि, करीए तसु अभिसेस ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तीर्थकमलदल उदक जरीने, पुष्करसागर आवे ॥ ए देशी ॥

॥ पूरण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे नामे ॥ आतम निर्मल जाव करता, वधते शुज परिणामे ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकात ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, एम अभिषेक करत ॥ १ ॥ गाहा ॥ तव ईसाण सुरिंदो, सक्क पजणेइ, करइ सुपसाउं ॥ तुम अंके मह नाहो, पण मित्तं अम्ह अप्पेह ॥ ७ ॥ ता सिकिंदो पजणेइ, साहमीवच्छलमि बहु लाहो ॥ आणा एव तेण, गिण्हिहवो उस्सयनाजो ॥ ३ ॥ एम कही सर्व स्नात्रीया कलश ढाले अने मुखथी नीचे प्रमाणे पाठ कहे ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ सोहम सुरपति वृषज रूप करी, न्हवण करे प्रजु अंग ॥ करीय विलेपण पुष्फमाल

ठवी, वर आजरण अजग ॥ तव सुरवर बहु जय जयरव करी, नाचे धरी आणद ॥ मोक्षमार्ग सारथपति पाम्यो, जांजशु इवे जवफद ॥ ४ ॥ कोमि बत्रीश सोवन उवारी, वाजते वर नादे ॥ सुरपति सघ अमर श्री प्रजुने, जननीने सुप्रसादे ॥ आणी थापी एम पयपे, अमे निस्तरीया आज ॥ पुत्र तुमारो धणी रे हमारो, तारण तरण जहाज ॥ ५ ॥ मात जतन करी राखजो एहने, तुम सुत अम आधार ॥ सुरपति जक्ति सहित नदीश्वर, करे जिनजक्ति उदार ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्झर, कहेता प्रजु गुणसार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक, इछा चित्त मकार ॥ ६ ॥ खरतरगछ जिन आणारंगी, राजसागर उवझाय ॥ ज्ञान धर्म दीपचद सुपाठक, सुगुरु तणे सुपसाय ॥ देवचद्र जिनजक्ते गायो, जन्ममहोत्सव ठद ॥ वोध बीज अकुरो उलस्यो, सघ सकल आनद ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ राग वेलाउल ॥ एम पूजा जक्ते करो, आतमहित काज ॥ तजीय विजाव निज जावमें, रमता शिवराज ॥ एम० ॥ १ ॥ काल अनते जे हुआ, होशे ... जिणद ॥ सपय सीमंधर

केवलनाण दिणद ॥ एम० ॥ २ ॥ जन्ममहोत्सव एणी परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमा तणो, अनुमोदन खत ॥ एम० ॥ ३ ॥ देवचद्र जिनपूजना, करता नवपार ॥ जिनपडिमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ एम० ॥ ४ ॥ इति पण्डितश्रीदेवचद्रजी-कृता स्नात्रपूजा सपूर्णा ॥

॥ अथ श्री शाति जिननी आरती ॥

॥ जय जय आरती शान्ति तुमारी, तोरा चरण-कमलकी मे जाउ वलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नदा, शान्तिनाथ मुख पूनमचदा ॥ जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष सोवनमय काया, मृग-लछन प्रभुचरण सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती प्रभु पाचमा सोहे, सोलमा जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥ ४ ॥ मगल आरती तोरी कीजे, जन्म जन्मनो लाहो लीजे ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमरपद पावे ॥ जय० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आदि जिननी आरती ॥

॥ अप्सरा करती आरती जिन आगे, हारे जिन आगे रे जिन आगे ॥ हारे ए तो अविचल सुखडा

मागे ॥ हारे नाजिनदन पास ॥ अप्सरा करती आरती जिन आगे ॥ १ ॥ तायेइ नाटक नाचती पाय ठमके, हारे दोय चरणे झाझर झमके ॥ हारे सोवन घुघरमी घमके, हारे लेती फुदमी बाल ॥ अ० ॥२॥ ताल मृदग ने वासली रुफ वीणा, हारे रुमा गावती स्वर झीणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नयणा, हारे जोती मुखड्ड नीहाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवा मातने प्रज्ञु जाया, हारे तोरी कचनवरणी काया ॥ हारे में तो पूरव पुण्ये पाया, हारे देख्यो तोरो देदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रज्ञु प्यारो, हारे प्रज्ञु सेवक हु बु तारो ॥ हारे जवोजवना ड्ड रुमा वारो, हारे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो, हारे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हारे मुनि माणेक सुखीउं करजो, हारे जाणी पोतानो बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥



॥ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत ॥

॥ नवपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम अरिहंतपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ उपजातिवृत्तम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाण, सप्पाडिहेरासण-संठियाण ॥ सदेसणाणंदियसज्जणाण, नमो नमो होउ सया जिणाण ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदान, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कर्यां कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे, भला भव्य नवपदध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासीयो आतमा तेणे काले ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दीए देशना भव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कर्यां घातिया कर्म चारे अलग्गा, भवोप-

ग्रही चार जे ते विलग्गा ॥ जगत् पच कल्याणके सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ तीर्थपति अरिहा नमु, धर्मधुरधर धीरो जी॥ देशना अमृत वरसता, निज वीरज वम्बीरो जी ॥ १ ॥ ॥ उलालो ॥ नर अखय निर्मल ज्ञानजासन, सर्व जाव प्रकाशता॥ निज शुद्ध श्रद्धा आत्मजावे, चरण-थिरता वासता ॥ जिन नामकर्म प्रजाव अतिशय, प्रातिहारज शोजता ॥ जगजतु करुणावत जगवत जविकजनने क्षोजता ॥ ७ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ त्रीजे जव वर स्थानक तप करी, जेणे बाध्यु जिननाम ॥ चोसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे॥ जविका ॥ सिद्धचक्रपद वदो, जेम चिर काले नदो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पण अजवालु ॥ सकल अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमी अघ टालु रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २ ॥ जे तिहु नाण समग्ग उप्पन्ना, जोगकरम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा दीए जनने, ते नमीए जिन नाणी रे ज० ॥ सि०

॥ ३ ॥ महागोप महामाहण कहीए, निर्यामक सञ्चवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमीए उत्साह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जस छाजे, पात्रीश गुण युत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमीए प्राणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दवह गुण पज्जाय रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहतरूपी थाय रे ॥ १ ॥ वीर जिनेसर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाइ रे ॥ आतमध्याने आतमा, ऋद्धि मले सवि आइ रे ॥ ॥ वी० ॥ २ ॥ इति प्रथम अरिहतपदपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धपदपूजा प्रारम्भः ॥

॥ काव्य ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥
॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं ॥
॥ नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं ॥ १ ॥

॥ भुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ करी आठ कर्मक्षये पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेणे वाम्या ॥ निरावरण जे आतमरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १ ॥ त्रिभा-

गोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जातवर्णादि-लेशा ॥ सदानंद सोरयाश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सकल करममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपत्तिभूपो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जेह भूप आतम सहज संपत्ति, शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्व द्रव्य क्षेत्र स्व काल भावे, गुण अनंता आदरी ॥ सुस्वभाव गुण पर्याय परिणति, सिद्धसाधन पर भणी ॥ मुनिराज मानसहंस समवड़, नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ समय पएसतर अणफरसी, चरम तिभाग विशेष ॥ अवगाहन लही जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते अशेष रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ६ ॥ पूर्व प्रयोग ने गति-परिणामे, बंधनछेद असंग ॥ समय एक ऊर्ध्व गति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे भ० ॥ सि० ॥ ७ ॥ निर्मल सिद्धशिलानी उपरे, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ ० ॥ ८ ॥ जाणे पण न

पुरगुण, प्राकृत तेम गुण जास ॥ उपमा विण नाणी भव मांहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ए ॥ ज्योतिशु ज्योति मली जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

॥ रूपातीत स्वजाव जे, केवल दसण नाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होये सिद्ध गुणखाणी रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ इति द्वितीय सिद्धपदपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय आचार्यपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ सूरीणदुरीयकुग्गहाण ॥

॥ नमो नमो सूरसमप्पहाण ॥

॥ भुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमु सूरिराजा, सदा तत्त्वताजा, जिनेंद्रागमे प्रौढ साम्राज्यभाजा ॥ षट्वर्गवर्गित गुणे शोभमाना, पचाचारने पालवे सावधाना ॥ १ ॥ भविप्राणीने देशना देश काले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधारदिग्दतिकल्पा, जगे ते चिरं जीवजो शुद्धजल्पा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ आचारज मुनिपति गणि, गुणछत्रीशी धामो जी ॥ चिदानद रस स्वादना, परभावे नि कामो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ नि काम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी ॥ निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधना व्यापारथी ॥ भविजीव बोधक तत्व-शोधक, सयल गुणसपत्ति धरा ॥ सवरसमाधि गत-उपाधि, दुविध तपगुण आगरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ पच आचार जे सूधा पाले, मारग भाखे साचो ॥ ते आचारज नमीए, तेहशु, प्रेम करीने जाचो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥ वर छत्रीश गुणे करी सोहे, युगप्रधान जन मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमु ते जोहे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित्य अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहीं विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमीए, अकलुष अमल अमाय रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दीए सारण वारण चोयण

जुवनपदारथ प्रकटन पटु तें, आचारज चिरं जीनो रे ॥ जविका ॥ सि० ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ध्याता आचारज जला, महामत्र शुज ध्यानी रे ॥ पच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ इति तृतीय आचार्यपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा प्रारंजः ॥

॥ काव्य ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ सुतत्त्वविज्ञारणतप्पराण ॥

॥ नमो नमो वायगकुंजराण ॥

॥ जुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नहीं सूरि पण सूरिगणने सहाया, नमु वाचका त्यक्तमदमोहमाया ॥ वली द्वादशांगादि सूत्रार्थदाने, जिके सावधाना निरुद्धाजिमाने ॥ १ ॥ धरे पचने वर्ग वर्गित गुणौघा, प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा ॥ गुणी गच्छसधारणे स्थंजजूता, उपाध्याय ते वंदीए चित्प्रजूता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ खतिजुआ मुत्तिजुआ, अज्जव मद्दव जुत्ता जी ॥ सच्च

सोय अकिंचणा, तव संजम गुणरत्ता जी ॥१॥ उलालो ॥
जे रम्या ब्रह्मसुगुप्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा ॥
स्याद्वादवादे तत्त्ववादक, आत्म परविभजनकरा ॥
भवभीरु साधन धीरशासन, वहन धोरी मुनिवरा ॥
सिद्धांत वायण दान समरथ, नमो पाठक पदधरा ॥२॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ द्वादश अंग सज्झाय करे जे, पारग धारक तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १६ ॥ अर्थ सूत्रने दान-विभागे, आचारज उवज्झाय ॥ भव त्रीजे जे लहे शिव-संपद्, नमीए ते सुपसाय रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १७ ॥ मूरख शिष्य निपाइ जे प्रभु, पाहाणने पल्लव आणे ॥ ते उवज्झाय सकल जन पूजित, सूत्र अर्थ सवि जाणे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १८ ॥ राजकुमर सरिखा गण-चिंतक, आचारजपद योग ॥ जे उवज्झाय सदा ते नमता, नावे भवभय शोग रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १९ ॥ बावनाचंदनरस सम वयणे, अहित ताप सवि टाले ॥ ते उवज्झाय नमीजे जे वली, जिनशासन अजु-वाले रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥

॥ तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥वी०॥५॥ इति चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ पंचम मुनिपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥
॥ साहूण ससाहिय संजमाण ॥
॥ नमो नमो सुद्धदयादमाण ॥
॥ भुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ करे सेवना सूरि वायग गणिनी, करु वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥ समेता सदा पंच समिति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्ते नहीं कामभोगेषु लिप्ता ॥ १ ॥ वली बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली, होये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाली, नमु साधुने तेह निज पाप टाली ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सकल विषय विष वारीने, नि कामी नि संगी जी ॥ भवदवताप शमावता, आतमसाधन रंगी जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह

निर्मम निर्मदा ॥ काउस्सग्गमुद्रा धीर आसन ध्यान अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपे कर्म झीपे, नैव झीपे पर जणी॥ मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन, बंधु प्रणमु हित जणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ जेम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तस न उपावे ॥ लेइ रसने आतम संतोषे, तेम मुनि गोचरी जावे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २१ ॥ पंच इन्द्रियने जे नित्य झीपे, षट्कायक प्रतिपाल ॥ संयम सत्तर प्रकारे आराधे, वंदु तेह दयाल रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनि महंत जयणा युत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, बारसविह तप शूरा ॥ एहवा मुनि नमीए जो प्रगटे, पूरव पुण्य अंकुरा रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २४ ॥ सोना तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संजम खप करता मुनि नमीए, देश काल अनुमाने रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ... ...त्य रहे, नवि हरखे नवि

रे ॥ साधु सूधा ते आतमा, शुं मूंड्ये शुं लोचे रे॥ वी०
॥ ६ ॥ इति पंचम मुनिपदपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥
॥ जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स ॥
॥ नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥
॥ भुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ विपर्यास हठवासनारूप मिथ्या, टले जे अनादि अछे जेम पथ्या ॥ जिनोक्ते होये सहजथी श्रद्धानं, कहीए दर्शनं तेह परम निधानं ॥ १ ॥ विना जेहथी ज्ञान अज्ञानरूपं, चरित्रं विचित्रं भवारण्यकूपं ॥ प्रकृति सातने उपशमे क्षय ते होवे, तिहां आपरूपे सदा आप जोवे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सम्यग्दर्शन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत स्वरूपो जी ॥ जसु निरधार स्वभाव छे, चेतनगुण जे अरूपो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल परईहा टले॥ निज शुद्ध सत्ता प्रगट अनुभव, करुणरुचिता उछले ॥ बहुमान परिणति वस्तुतत्त्वे,

अह्व तसु कारणपणे ॥ निज साध्यदृष्टे सर्व करणी. तत्वता सपत्ति गणे ॥ ४ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम रे जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २६ ॥ मल उपशम क्षय उपशम क्षयथी. जे [illegible] त्रिविध अभग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, [illegible] दृढ रग रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २७ ॥ पच वार [illegible] लहीजे, क्षय उपशमीय असस्र ॥ एक वार [illegible] ते समकित, दर्शन नमीए असस्र रे ॥ भ० ॥ [illegible] जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्र [illegible] फलीयो ॥ सुख निर्वाण न जे विण [illegible] दर्शन बलीयो रे ॥ भ० ॥ सि० [illegible] बोले जे अलकरीयु, ज्ञान चारित्र [illegible] दर्शन ते नित्य प्रणमु, शिवपदनुं [illegible] ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३० ॥

॥ अथ सप्तम सम्यग्ज्ञानपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥
॥ अन्नाणसंमोहतमोहरस्स ॥
॥ नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥
॥ भुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावरण नासे विचित्रावबोधे ॥ तेणे जाणीए वस्तु षड् द्रव्य भावा, न हुये वितहा (वाद) निजेछा स्वभावा ॥ १ ॥ होय पच मत्यादि सुज्ञानभेदे, गुरुपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेय उपादेयरूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ भव्य नमो गुणज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावे जी ॥ परजय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावे जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोध भावविलछना ॥ मति आदि पच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लछना ॥ स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी, प्रथम भेदाभेदता ॥ सविकल्प ने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ नक्षानक्ष न जे विण लहीए, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विण लहीए, ज्ञान ते सकल आधार रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञान ने पठी अहिंसा, श्रीसिद्धांते नाख्यु ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीए शिवसुख चाख्यु रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३२ ॥ सकल क्रियानु मूल ते श्रद्धा, तेहनु मूल जे कहीए ॥ तेह ज्ञान नित नित वंदीजे, ते विण कहो केम रहीए रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३३ ॥ पंच ज्ञान माहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ दीपक परे त्रिभुवन उपकारी, वली जेम रवि शशी मेह रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध ॥ लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, तेह ज्ञाने मुज शुद्ध रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ज्ञानावरणी जे कर्म ठे, क्षय उपशम तस थाय रे ॥ तो हुए एहीज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति सप्तम सम्यग्ज्ञानपदपूजा समाप्ता ॥ " "

॥ अथ अष्टम चारित्रपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् ॥
॥ आराहिअखंडीअ सक्किअस्स ॥
॥ णमो णमो संजमवीरिअस्स ॥
॥ भुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ वली ज्ञानफल चरण धरीए सुरंगे, निराशसता द्वाररोधप्रसगे ॥ भवाम्भोधिसंतारणे यान तुल्य, धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्य ॥ १ ॥ होये जास महिमा थकी रंक राजा, वली द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वली पापरूपोपि नि पाप थाय, थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ चारित्रगुण वली वली नमो, तत्त्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररमणीयपणु टले, सकल सिद्ध अनुकूलो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ प्रतिकूल आश्रवत्याग संयम, तत्त्वथिरता दममयी ॥ शुचि परम खति मुत्ति दश पद, पच सवर उपचई ॥ सामायिकादिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय अकलुष अमल उज्ज्वल, कामकश्मलचूर्णता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ देशविरति ने सरवविरति जे, गृही यतिने अभिराम ॥ ते चारित्र जगत् जयवंतु, कीजे तास प्रणाम रे ॥ ज० ॥ सि० ॥३६॥ तृण परे जे षट् खम सुख छंडी, चक्रवर्त्ती पण वरीयो ॥ ते चारित्र अक्षय सुख-कारण, ते मे मन माहे धरीयो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३७ ॥ हुआ रांकपणे जे आदरी, पूजित इंद नरिंदे ॥ अशरण शरण चरण ते वंदु, पुरयु ज्ञान आनंदे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३८ ॥ बार मास पर्याये जेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमीए ॥ शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते उपरे, ते चारित्रने नमीए रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३९ ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुत्ते भाख्यु, ते वंदु गुणगेह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४० ॥

॥ ढाल ॥

॥ जाणो चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध अलकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ इत्यष्टम चारित्रपदपूजा समाप्ता ॥८॥

॥ अथ नवम तपःपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्य ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥
॥ कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स ॥
॥ नमो नमो तिव्वतवोजरस्स ॥
॥ मालिनीवृत्तम् ॥

॥ इयनवपयसिद्ध, लद्धिविज्जासमिद्ध ॥ पयडियसुरवग्ग, ह्रींतिरेहासमग्ग ॥ दिसवइसुरसार, खोणिपीढावयारं ॥ तिजयविजयचक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥१॥

॥ भुजगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाले, निकाचितपणे बांधीया तेह बाले ॥ कह्यु तेह तप बाह्य अतर दु भेदे, क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ २ ॥ होये जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि, अवाछकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानद हेते, होय सिद्धि सीमातनी जिम सकेते ॥ ३ ॥ इस्या नव पद ध्यानने जेह ध्यावे, सदानद चिद्रूपता तेह पावे ॥ वली ज्ञानविमलादि गुणरत्नधामा, नमु ते सदा सिद्धचक्रप्रधाना ॥ ४ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

॥ इम नव पद ध्यावे, पर्म आनंद पावे ॥ नवमे भव शिव जावे, देव नरभव पावे ॥ ज्ञानविमल गुण गावे, सिद्धचक्रप्रभावे ॥ सवि दुरित समावे, विश्व जयकार पावे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदे जी ॥ आतमसत्ता एकता, परपरिणति उछेदे जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ उछेदे कर्म अनादि संतति, जेह सिद्धपणु वरे ॥ योगसंगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ॥ अंतरमुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी ॥ निज आत्मसत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ एम नव पद गुणमंडल, चउ निक्षेप प्रमाणे जी ॥ सात नये जे आदरे, सम्यग्ज्ञानने जाणे जी ॥ ३ ॥ उलालो ॥ निर्द्धारसेती गुणी गुणनो, करे जे बहुमान ए ॥ तसु करण ईहा तत्त्वरमणे, थाय निर्मल ध्यान ए ॥ एम शुद्धसत्ता भव्यो चेतन, सकल सिद्धि अनुसरे ॥ अक्षय अनंत महंत चिद्घन, परम आनंदता वरे ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्धचक्र पदावली ॥ सवि लद्धि विद्या सिद्धिमंदर, नविक पूजो मन रुली ॥ उवझायवर श्रीराजसागर, ज्ञानधर्म सुराजता ॥ गुरु दीपचद सुचरण सेवक, देवचंद सुशोनता ॥ १ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते नव मुक्ति जिणंद ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरुकंद रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण क्षय जाये, क्षमा सहित जे करता ॥ ते तप नमीए जेह दीपावे, जिनशासन उजमंता रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४२ ॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवे जास प्रनावे ॥ अष्ट महा सिद्धि नव निधि प्रगटे, नमीए ते तप नावे रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४३ ॥ फल शिवसुख महोटु सुर नर वर, संपत्ति जेहनु फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखुं वंदु, शम मकरंद अमूल रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४४ ॥ सर्व मगल मांहि पहेलुं मंगल, वरणवीए जे ग्रंथे ॥ ते तपपद त्रिहु काल नमीजे, वर सहाय शिवपथे रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४५ ॥ एम नव पद थुणतो तिहां

लीनो,हुर्ज तन्मय श्रीपाल॥सुजश विलास ठे चोथे खडे,एह अग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ इछारोधे संवरी, परिणति समतायोगे रे ॥ तप ते एहीज आतमा, वर्त्ते निज गुण जोगे रे ॥ वी० ॥ १० ॥ आगम नोआगम तणो, जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावे थिर होजो, परजावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घट माहे क्रद्धि दाखी रे॥ तेम नव पद क्रद्धि जाणजो, आतमराम ठे साखी रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असंख्य ठे जिन कह्या, नव पद मुख्य ते जाणो रे॥ एह तणे अवलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खडे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जश तणी, कोइ नये न अधूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ इति नवम तप पदपूजा समाप्ता ॥ ए ॥

॥ अथ काव्य ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

॥ विमलकेवलजासनजास्कर, जगति जंतुमहोदयकारण ॥ जिनवरं बहुमानजलौघन, शुचिमना

स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ इति काव्यम् ॥ आ काव्य प्रत्येक पूजा दीठ कहेवु ॥

॥ स्नात्र करता जगद्गुरु शरीरे, सकल देव विमल कलश नीरे ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रंथे प्रसिद्धा ॥ २ ॥ हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशीष जावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीमद्यशोविजयजीकृता
नवपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनां स्तवनो ॥

॥ अथ प्रथम स्तवनम् ॥

॥ तमे पीतांबर पहेर्यां जी, मुखने मरकलडे ॥
॥ ए देशी ॥

॥ श्री सिद्धचक्रने वंदो जी, मनोहर मनगमता ॥ जे अविचल सुखनो कंदो जी ॥ मनो० ॥ मास आसोए मधुरे सोहावे जी ॥ मनो० ॥ भवि आदरो तमे भले भावे जी ॥ मनो० ॥ १ ॥ नव आंबिल तप कीजे जी ॥ मनो० ॥ तो अविचल सुखफल लीजे जी ॥ मनो० ॥ सुदि सातमथी तमे मांडो जी ॥ मनो० ॥ घरना आरंभ सवि छांडो जी ॥ मनो० ॥ २ ॥ पहेले पदे अरिहंत सेवो जी ॥ मनो० ॥ आपे मुक्तिनो मेवो जी ॥ मनो० ॥ बीजे पदे सिद्ध सोहावे जी ॥ मनो० ॥ मन शुद्धे पूजो भले भावे जी ॥ मनो० ॥ ३ ॥ आचार्य त्रीजे पदे नमो जी ॥ मनो० ॥ तमे क्रोध कषायने दमो जी ॥ मनो० ॥ उवज्झाय ते चोथा वंदो जी ॥ मनो० ॥ साधु पांचमे देखी आणंदो जी ॥ मनो० ॥ ४ ॥ छठे दरिसन पद जाणो जी ॥ मनो० ॥ श्री ज्ञानने सातमे व[illegible] जी ॥ मनो० ॥ चारित्रपद आठमे सोहे जी

वली नवमें तप मन मोहे जी ॥ मनो० ॥ ५ ॥ रसत्यागे आंबिल कीजे जी ॥ मनो० ॥ तो मुक्ति तणां फल लीजे जी ॥ मनो० ॥ सवत्सर युग पट्ट मासे जी ॥ मनो० ॥ तप कीजे मनने उल्लासे जी ॥ मनो० ॥ ६ ॥ ए तो मयणा ने श्रीपाल जी ॥ मनो० ॥ तप कीधु थइ उजमाल जी ॥ मनो० ॥ तेनो कोढ शरीरनो टाल्यो जी ॥ मनो० ॥ जगमा जस वास प्रगटायो जी ॥ मनो० ॥ ७ ॥ पचम काले तुमे जाणो जी ॥ मनो० ॥ परगट परतो परमाणो जी ॥ मनो० ॥ एनु गणणु तेर हजार जी ॥ मनो० ॥ तमे धारो हृदय मझार जी ॥ मनो० ॥ ८ ॥ नर नारी ए पद ध्यावे जी ॥ मनो० ॥ ते तो सपद् सघली पावे जी ॥ मनो० ॥ मुनि रत्नसुदर सुपसाय जी ॥ मनो० ॥ सेवक मोहन गुण गाय जी ॥ मनोहर मनगमता ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवनम् ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ नव पद महिमा सार, साजलजो नर नार ॥ ॥ आठे लाल ॥ हेज धरी आराधीए जी ॥ तो पामो भवपार, पुत्र कलत्र परिवार ॥ आ० ॥ नव पद मंत्र

आराधीए जी ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ आसो मास विचार, नव आंबिल निरधार ॥ आ० ॥ विधिशुं जिनवर पूजीए जी ॥ अरिहंत सिद्धपद सार, गणणु जी तेर हजार ॥ आ० ॥ नव पदनु इम कीजीए जी ॥ २ ॥ मयणसुदरी श्रीपाल, आराध्यो तत्काल ॥ आ० ॥ फलदायक तेहने थयो जी ॥ कचनवरणी काय, देही तेहनी थाय ॥ आ० ॥ श्री सिद्धचक्र महिमा कह्यो जी ॥ ३ ॥ सांजली सहु नर नार, आराधो नवकार ॥ आ० ॥ हेज धरी हियडे घणु जी ॥ चैत्र मासे वली एह, नव पदशु धरो नेह ॥ आ० ॥ पूजो थे शिवसुख घणु जी ॥ ४ ॥ इणी परे गोतमस्वाम, नव निधि जेहने नाम ॥ आ० ॥ नव पद महिमा वखाणीयो जी ॥ उत्तमसागर शिष्य, प्रणमे ते निशदिस ॥ आ० ॥ नव पद महिमा जाणीयो जी ॥ ५ ॥ इति द्वितीय स्तवनम् ॥

॥ अथ तृतीय स्तवनम् ॥

॥ सीता तो रुपे रुडी ॥ ए देशी ॥

॥ श्री वीर जिणद वखाण्यो, तिहा गोतम गणधर जाण्यो हो ॥ जविका नव पद ध्याइए ॥ श्री श्रीपाल

नरेशे, मयणाए गुरुउपदेशे हो ॥ ज० ॥ नव०॥ १॥ श्री सिद्धचक्र आराध्यो, नो सयल पदारथ साध्यो हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ आसो मासे कीजे, सुदि सातमे जिन पूजीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ २ ॥ अष्ट कमलदल थापी, महिमा जस त्रिभुवन व्यापी हो ॥ज०॥ नव० ॥ मध्य दले जिन ध्याने, ध्यावो जवि धवले वाने हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ३ ॥ पूरव दिशे सिद्ध छाजे, राते तनु तेज विराजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ आचारजपद त्रीजे, जिम सोवनवान करीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ४ ॥ पश्चिम दिश उवझाया, नीले तनुवान सोहाया हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ साधु सकल घन वाने, उत्तर दिशि ध्यावो ध्याने हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ५ ॥ नाण अग्नि कोणे ध्यावो, जिम अत्यत सुख तुमे पावो हो ॥ज०॥नव०॥ दसण आराहो प्राणी, नैर्रुत निदिशे मन आणी हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ६ ॥ वायव्य कोणे कहीजे, चारित्र ध्यायी सुख लीजे हो ॥ज०॥नव०॥ ईशाने तप ध्यावो, उज्जल समकित सुख पावो हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ७ ॥ आसो चैत्रज मासे, जपता ऋद्धि आवे पासे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ विधिशु देव वदीजे, श्री जिनवर पूजा रचीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ८ ॥ नव पद जाप

जपीजे, आंबिल तप नव दिन कीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ श्री सिद्धचक्र सेवीजे, पचामृत न्हवण करीजे हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ ए ॥ चौद पूरवनो सार, ए मंत्र वमो नवकार हो ॥ ज० ॥ नव० ॥ बुध उत्तमसागर राया, शिष्य कान्तिसागर सुख पाया हो ॥ जविका नव पद ध्याइए ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ स्तवनम् ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥

॥ सेवो रे जवि जावे नवकार, जपे श्री गौतम गणधार ॥ जवि सांजलो ॥ हांरे संपद् थाय ॥ ज० ॥ हांरे सकट जाय ॥ ज० ॥ आसो ने चैत्रे हरप अपार, आणी गणणु कीजे तेर हजार ॥ ज० ॥ १ ॥ चार वरप ने वली पट् मास, ध्यान धरो जावे धरी विश्वास ॥ ज० ॥ ध्यायो रे मयणसुदरी श्रीपाल, तेहनो रोग गयो तत्काल ॥ ज० ॥ २ ॥ अष्ट कमलदल पूजा रसाल, करी न्हवण गंदु तत्काल ॥ ज० ॥ सातसें महीपति तेहने रे ध्यान, देही पामी कचनवान ॥ ज० ॥ ३ ॥ महिमा कहेता एनो नावे पार, समरो तिणे कारण नवकार ॥ ज० ॥ इह जव परजव वे

सुखवास, वहु पामे लछी लीलविलास ॥ ज० ॥ ४ ॥ जाणी रे प्राणी लाज अनंत, सेवो सुखदायक ए मंत ॥ ज० ॥ उत्तमसागर पंडित शिष्य, सेवे कान्तिसागर निशदिस ॥ जवि सांजलो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पचम स्तवनम् ॥

॥ जविया श्री सिद्धचक्र आराधो, तुमे मुक्तिमारगने साधो, इह नरजव दुर्लज लाधो हो लाल ॥ नव पद जापजपीजे ॥ १ ॥ त्रण टंक देव वांदीजे, त्रिहुं काले जिन पूजीजे, आंबिल तप नव दिन कीजे हो लाल ॥ न० ॥ २ ॥ सुदि आसो चैत्रज मासे, तप सातमथी अज्यासे, पद सेव्या पातक नासे हो लाल ॥ न० ॥ ३ ॥ मयणा ने नृप श्रीपाले, आराध्यो मंत्र उजमाले, एह दु ख दोहगने टाले हो लाल ॥ न० ॥ ४ ॥ एहनी जे सेवा सारे, तस मयगल गाजे बारे, ईति जीति अनीति निवारे हो लाल ॥ न० ॥ ५ ॥ मिथ्यात्व विकार अनिष्ट, क्षय जाये दोषी दुष्ट, इणे सेव्या समकित पुष्ट हो लाल ॥ न० ॥ ६ ॥ जशवत जिनेंद्र सुसाखे, जवि सिद्धचक्रना गुण जाखे, ते ज्ञानविनोद रस चाखे हो लाल ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ षष्ठ स्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जगवालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए, शिवसुख फल सहकार लाल रे ॥ ज्ञानादिक त्रण रत्ननु, तेज चढावणहार लाल रे ॥ श्री सि० ॥ १ ॥ गौतमे पूछंता कह्यो, वीर जिणंद विचार लाल रे ॥ नव पद मंत्र आराधता, फल लहे भविक अपार लाल रे ॥ श्री सि० ॥ २ ॥ धर्मरथना चार चक्र छे, उपशम ने सुविवेक लाल रे ॥ सवर त्रीजु जाणीए, चोथु सिद्धचक्र छेक लाल रे ॥ श्री सि० ॥ ३ ॥ चक्री चक्र रयणवले, साधे सयल छ खंड लाल रे ॥ तिम सिद्धचक्रप्रभावथी, तेज प्रताप अखंड लाल रे ॥ श्री सि० ॥ ४ ॥ मयणा ने श्रीपालजी, जपतां बहु फल लीध लाल रे ॥ गुण जशवंत जिनेंद्रनो, ज्ञानविनोद प्रसिद्ध लाल रे ॥ श्री सि० ॥ ५ ॥

॥ अथ सप्तम स्तवनम् ॥

॥ चिंतामणि स्वामी सच्चा साहेब मेरा ॥ ए देशी ॥

॥ आराहो प्राणी साची नव पद सेवा ॥ ए आकणी ॥ नव निधि आपे नव पद सेवे, इम भाखे श्री

जिनदेवा ॥ आ० ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक धरो नित्य दिलमे, जैसे गजमन रेवा ॥ आ० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक एक पद जपतां, हारे लहीए सुख सदेवा ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुदित जपतां किम करी न करे, सुरसुख द्रुमफल लेवा ॥ आ० ॥ ४ ॥ जिनेंद्र कहे इम ज्ञानविनोदे, हर्षित थो नित मेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टम स्तवनम् ॥

॥ राग सारंग ॥

॥ गौतम पूछत श्री जिन जाखत, वचन सुधारस पानकी ॥ वलिहारी नव पद ध्यानकी ॥ १ ॥ नव पद सेवे नवमे स्वर्गे, पावत ऋद्धि विमानकी ॥ व० ॥ २ ॥ याकी महिमा वल्लज हमकुं, जेसे जसोदा कानकी ॥ व० ॥ ३ ॥ पावे रूप सरूप मदनसो, देही कंचन वानकी ॥ व० ॥ ४ ॥ याको ध्यान हृदय जब आवत, उपजत लहेरी ज्ञानकी ॥ व० ॥ ५ ॥ समकित ज्योति होवे दिल जीतर, जेसे लोकनमें जानकी ॥ व० ॥ ६ ॥ जिनेंद्र ज्ञानविनोद प्रसगे, जक्ति करो जगवानकी ॥ बलिहारी नव पद ध्यानकी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नवम स्तवनम् ॥

॥ पूज्य पधारो मरु देशे ॥ ए देशी ॥

॥ नव पद महिमा सांजलो, वीर जाखे हो सुणो पर्षदा बार के ॥ ए सरिखो जग को कहीं, आराध्यो हो शिवपद दातार के ॥ न० ॥ १ ॥ नव उंली आंबिल तणी, जवि करीए हो मनने उल्लास के ॥ भूमिशयन ब्रह्मव्रत धरो, नित सुणीए हो श्रीपालनो रास के ॥ न० ॥ २ ॥ नव विधिपूर्वक तप करी, उजमणुं हो कीजे विस्तार के ॥ साहामी सामिणी पोषीए, जेम लहीए हो जवनो निस्तार के ॥ न० ॥ ३ ॥ नरसुख सुरसुख पामीए, वली पामे हो जवजव जिनधर्म के ॥ अनुक्रमे शिवपद पण लहे, जिहां मोटां हो अक्षय सुख शर्म के ॥ न० ॥ ४ ॥ सांजली जवियण दिल धरो, सुखदायी हो नव पद अधिकार के ॥ वचनविनोद जिनेंद्रनो, मुज होजो हो जवजव आधार के ॥ नव पद महिमा सांजलो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरु पाय

॥ आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्ध-
चक्र आधार, नवि उतरे नवपार ॥ आ० ॥ ते नणी
नव पद ध्यायशु जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह, जसगुण
अनंत अछेह ॥ आ० ॥ समर्या सकट उपशमे जी ॥
लहीए वंछित नोग, पामी सवि सजोग ॥ आ० ॥
सुर नर आवी वहु नमे जी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोग
रहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणासुदरी श्रीपालने जी ॥
ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा दूरे जाय ॥ आ० ॥ आपे
मंगलमालने जी ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे
ते सुखीउ होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी
जी ॥ नव आंबिल तप सार, पडिक्कमणु दोय वार
॥ आ० ॥ देववंदन त्रण टकना जी ॥ ४ ॥ देव पूजो
त्रण वार, गणणु ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी
निर्मल जले जी ॥ आराधे सिद्धचक्र,सान्निध्य करे तेनी
शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगे नणे जी ॥ ५ ॥
ए सेवो निशिदिश, कहीए वीशवावीश ॥ आ० ॥
आल जजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणि रत्न,
एहना कीजे जत्न ॥ आ० ॥ मत्र नहीं एह उपरे जी
॥ ६ ॥ श्री विमलेसर जक्ष, होजो मुज परतक्ष
॥ आ० ॥ हु किंकर हु ताहरो जी ॥ पाम्यो तुहीज

देव, निरंतर करु हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥ विनति करु छु एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमने शु कहीए वली वली जी ॥ श्री लब्धिविजय गुरुराय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुज लली लली जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

॥ अवसर पामीने रे, कीजे नव आंबिलनी ओली ॥ ओली करता आपद् जाये, ऋद्धि सिद्धि लहीए बहुली ॥ अ० ॥ १ ॥ आसो ने चैत्रे आदरशु, सातमथी सजाली रे ॥ आलस मह्रेली आंबिल करशे, तस घर नित्य दीवाली ॥ अ० ॥ २ ॥ पूनमने दिन पूरी थाते, प्रेमेशु पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप जपे जपमाली ॥ अ० ॥ ३ ॥ देहरे जइने देव जुहारो, आदीश्वर अरिहंत रे ॥ चोवीशे चाहीने पूजो, चावेशुं जगवंत ॥ अ० ॥ ४ ॥ बे टके पडिक्कमणु बोल्यु, देववंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी परे समजी, चित्तमां रासो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकित पामी अंतरजामी, आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वादपथे संचरता, आवे भवनो अंत ॥ अ० ॥ ६ ॥ सत्तर चोराणुं

सुदि चैत्रीए, वारशे बनावी रे॥ सिद्धचक गातां सुख संपत्ति, चालीने घेर आवी ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी चाले रे ॥ नवनी नावठ ते नाजीने, मुक्तिपुरीमां महाले ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ आंबिल तप आश्रयी श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ जीहो कुंवर वेठा गोखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमु दिन प्रत्ये जिनपति ॥ लाला ॥ शिव सुखकारी अशेष ॥ जीहो आसोइ चैत्री तणी ॥ लाला ॥ अठाइ विशेष ॥ नविकजन ॥ जिनवर जग जयकार ॥ १ ॥ जीहो जिहा नव पद आधार ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधना ॥ लाला ॥ नदीश्वर सुर जाय ॥ जीहो जीवाजिगम मांहे कह्युं ॥ ला० ॥ करे अठ दिन महिमाय ॥ न० ॥ २ ॥ जीहो नव पद केरा यत्रनी ॥ ला० ॥ पूजा कीजे रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ ला० ॥ नासे पापनो व्याप ॥ न० ॥ ३ ॥ जीहो अरिहत सिद्ध आचारज ॥ ला० ॥ उवझाय साधु ए पच ॥ जीहो दंसण नाण चारित्र तनो ॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपच

॥ ज० ॥ ४ ॥ जीहो ए नव पद आराधतां ॥ ला० ॥ चपापति विख्यात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखीउं थयो ॥ ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ कोइलो पर्वत धूधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालव धुर उज्जेणीए रे लो, राज्य करे प्रजापाल रे ॥ सुगुणी नर ॥ सुरसुदरी मयणासुदरी रे लो, बे पुत्री तस बाल रे ॥ सु० ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए रे लो ॥ १ ॥ जेम होय सुखनी माल रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ए आकणी ॥ पहेली मिथ्याश्रुत जणी रे लो, बीजी जिन-सिद्धांत रे ॥ सु० ॥ बुद्धिपरीक्षा अवसरे रे लो, पूठी समस्या तुरत रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ २ ॥ तूठो नृप वर आपवा रे लो, पहेली करे ते प्रमाण रे ॥ सु० ॥ बीजी कर्म प्रमाणथी रे लो, कोप्यो ते तव नृपजाण रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ कुष्ठी वर परणावीयो रे लो, मयणा वरे धरीनेह रे ॥ सु० ॥ रामा हजीय विचारीए रे लो, सुदरी विणसे तुज देह रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सिद्धचक्र-प्रजावथी रे लो, नीरोगी थयो जेह रे ॥ सु० ॥ पुण्य-पसाये कमला लही रे लो, वाध्यो घणो ससनेह रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ माउले वात ते जन लही

वांदवा आव्यो गुरु पास रे ॥ सु० ॥ निज घर तेमी आवीयो रे लो, आपे निज आवास रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ श्रीपाल कहे कामिनी सुणो रे लो, हुं जाउ परदेश रे ॥ सु० ॥ माल मता वहु लावशु रे लो, पूरशु तुम तणी खांत रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ अवधि करी एक वरपनी रे लो, चाल्यो नृप परदेश रे ॥ सु० ॥ शेठ धवल साथे चल्यो रे लो, जलपथे सुविशेप रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इम्हर आंवा आंवली रे ॥ ए देशी ॥

॥ परणी वव्वरपति सुता रे, धवल मूकाव्यो ज्यांह ॥ जिनहर वार उघाडते रे, कनककेतु वीजी त्यांह ॥ १ ॥ चतुर नर, श्री श्रीपाल चरित्र ॥ ए आंकणी ॥ परणी वस्तुपालनी रे, समुद्रतटे आवंत ॥ मकरकेतु नृपनी सुता रे, वीणावादे रीझत ॥ च० ॥ २ ॥ पांचमी त्रैलोक्यसुदरी रे, परणी कुव्जारूप ॥ छठी समस्या पूरती रे, पच सखीशुं अनुप ॥ च० ॥ ३ ॥ राधा वेधी सातमी रे, आठमी विप उतार ॥ परणी आव्यो निज घरे रे, साथे वहु परिवार ॥ च० ॥ ४ ॥ प्रजापाले साजली रे, परदल केरी वात ॥ खधे कुहाडो लेइ करी रे, मयणा हुइ विख्यात ॥ च० ॥ ५ ॥ चपा राज्य लेइ

करी रे, जोगवी कामित जोग ॥ धर्म आराधी अवतर्यो रे, पहोतो नवमे सुरलोग ॥ चतुर नर ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ एम महिमा सिद्धचकनो, सुणी आराधे सुविवेक ॥ मोरे लाल ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ अष्टदल कमलनी थापना, मध्ये अरिहत उदार ॥ मो० ॥ चिहु दिशे सिद्धादिक चउ, वक्र दिशे तु गुणधार ॥ मो० ॥ श्री० ॥ २ ॥ बे पडिक्कमणां जत्रनी, पूजा देववदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे दिन सविशेषथी, पंचामृत कीजे पखाल ॥ मो० ॥ श्री० ॥३॥ भूमिशयन ब्रह्मविध धारणा, रुधी राखो त्रण जोग ॥ मो० ॥ गुरु वैय्यावच्च कीजीए, धरो सद्दहणा जोग ॥ मो० ॥श्री० ॥ ४ ॥ गुरु पडिलाभी पारीए, साहम्मिवच्छल पण होय ॥ मो० ॥ उजमणा पण नव नवां, फल धान्य रयणादिक ढोय ॥ मो० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इह भव सवि सुखसपदा, परभवे सवि सुख थाय ॥ मो० ॥ पडित शान्तिविजय तणो, कहे मानविजय उवझाय ॥ मोरे लाल ॥ इति ॥

॥ नव पदजीनुं स्तवन ॥

॥ नव पद ध्यान सदा जयकारी ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नव पद० ॥ १ ॥ दरशन ज्ञान चारित्र हे उत्तम, तप दोय भेदे हृदय विचारी ॥ नव० ॥ २ ॥ मंत्र जन्त्री जंतर तत्र घणेरा, उन सवकुं हम दूर विसारी ॥नव०॥ ३ ॥बोत जीव भवजलसे तारें, गुण गावत हे बहु नर नारी ॥ नव० ॥ ४ ॥श्री जिन भक्त मोहन मुनि वंदन, दिन दिन चमते हरख अपारी ॥ नव०॥५॥

॥ श्री नव पदजीनुं स्तवन ॥

॥ नव पद धरजो ध्यान, भवि तुमे नव पद धरजो ध्यान ॥ ए नव पदनु ध्यान करता, पामे जीव विसराम ॥ भवि० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल गुणवान ॥ भवि० ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो करी बहुमान ॥ भवि० ॥ ३ ॥ आसो चैत्रनी सुद सातमथी, पूनम लगे परमान ॥ भवि० ॥ ४ ॥ एम एकाशी आंबिल कीजे, वरष साडाचारनु मान ॥ भवि० ॥ ५ ॥ पडिक्कमणां दोय टकना कीजे, पडिलेहण वे वार॥ भवि० ॥ ६ ॥

देववंदन त्रण टंकना कीजे, देव पूजो त्रिकाल ॥ जवि० ॥ ७॥ बार आठ छत्रीश पचवीशनो, सत्यावीश सम्मसठ सार ॥ जवि० ॥ ८ ॥ एकावन सित्तेर पचासनो, काउस्सग्ग करो सावधान ॥ जवि० ॥ ९॥ एक एक पदनु गणणु, गणीए दोय हजार॥ जवि० ॥ १० ॥ एनी विधेज ए तप आराधे, ते पामे जवपार ॥ जवि० ॥ ११ ॥ कर जोमी सेवक गुण गावे, मोहन गुण मणि माल ॥ जवि० ॥ १२ ॥ तास शिष्य मुनि हेम कहे छे, जन्म मरण ङुःख वार ॥ जवि० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ आंबिलनी उंलीना स्तवनो ॥

॥ तत्र प्रथम स्तवनम् ॥

॥ केशर वरणो हो, के काढ कसुंबो माहारा लाल ॥ ए देशी ॥

॥ गोयम नाणी हो, के कहे सुणो प्राणी माहारा लाल ॥ जिनवर वाणी हो, के हियडे आणी मा० ॥ आसो मासे हो, के गुरुने पासे मा० ॥ नव पद ध्याशे हो, के अग उल्लासे मा० ॥ १ ॥ आंबिल कीजे हो, के जिन पूजीजे मा० ॥ जाप जपीजे हो, के देव वांदीजे मा० ॥ जावना जावो हो, के सिद्धचक्र ध्यावो मा० ॥

जिनगुण गावो हो, के शिवसुख पावो मा० ॥ २ ॥ श्री श्रीपाले हो, के मयणा वाले मा० ॥ ध्यान रसाले हो, के रोगज टाले मा० ॥ सिद्धचक्र ध्यायो हो, के रोग गमायो मा०॥ मंत्र आराध्यो हो, के नव पद पायो मा० ॥ ३ ॥ जामनी जोली हो, के पटेरी पटोली मा० ॥ सहीयर टोली हो, के कुंकुम घोली मा० ॥ थाल कचोली हो,के जिनवर खोली मा०॥पूजी प्रणमी हो, केकीजे उंली मा० ॥ ४ ॥ चैत्रे आसो हो, के मनने उल्लासे मा० ॥ नव पद ध्याशे हो, के शिवसुख पासे मा० ॥ उत्तमसागर हो, के पंमित राया मा० ॥ सेवक काते हो, के बहु सुख पाया मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ नव पद स्तवन ॥

॥ सिद्धचक्र वर सेवा कीजे, नरजव लाहो लीजेजी ॥ विधिपूर्वक आराधन करता, जवजव पातिक ठीजे ॥ १ ॥ जवियण जजीएजी ॥ अवर अनादिनी चाल, नित्य नित्य त्यजीएजी ॥ ए आंकणी ॥ देवनी देव दयाकर ठाकर, चाकर सुर नर इंद्राजी ॥ त्रिगडे त्रिभुवन नायक वेठा, प्रणमो श्री जिनचंदा ॥ ज० ॥ २ ॥ अ० ॥ अज अविनाशी अकल अजरामर,

केवल दंसणनाणीजी ॥ अव्याबाध अनतु वीरज, सिद्ध
प्रणमो नविप्राणी ॥ न० ॥ ३ ॥ अ० ॥ विद्या
सौनाग्य लक्ष्मी पीठ, मत्र जोगराज पीठजी॥सुमेरुपीठ
पच प्रस्थाने, नमो आचारज इष्ट॥ न० ॥४॥ अ० ॥
अग उपाग नदी अनुयोगा, ठ नेद ने मूल,चारजी॥
दश पयन्ना एम पणयालीस, पाठक तेहना धार
॥ न० ॥ ५ ॥ अ० ॥ वेद त्रणने हास्यादिक षट्,
मिथ्यात्व चार कषायजी ॥ चौद अन्यतर नवविध
बाह्यनी, ग्रथि त्यजे मुनिराज ॥ न० ॥ ६ ॥ अ० ॥
उपशम क्षय उपशम ने क्षायिक, दरशण त्रण प्रका-
रेजी ॥ श्रद्धा परणति आतम केरी, नमीए वारवार
॥न०॥७॥अ०॥ अठ्यावीश चौद ने खट् दुग एक,
मत्यादिकना जाणजी ॥ एम एकावन नेदे प्रणमो,
सातमु पद वर नाण ॥न०॥८॥अ० ॥ निर्वर्त्ति अप-
वर्त्ति नेदे, चारित्र ठे व्यवहारेजी ॥ निज गुण थिरता
चरण ते प्रणमो, निश्चय शुद्ध प्रकार॥ न०॥ए॥अ०॥
बाह्य अन्यतर तप ने सवर, सुमता निर्जरा हेतुजी ॥
ते तप नमीए नाव धरीने, नवसायरमा सेतु ॥ न०
॥ १० ॥ अ० ॥ ए नव पदमा पण ठे धर्मी, धर्म ते
वरते चारजी ॥ देव गुरु ने धर्म ते एहमा, दो तीन चार

प्रकार ॥ ज० ॥ ११ ॥ अ० ॥ मारगदेशक अविनाशी-पणो, आचार विनय सकेतजी ॥ साह्यपणुं धरता साधुजी, प्रणमो एहीज हेतुजी ॥ ज० ॥ १२ ॥ अ० ॥ विमलेश्वर यक्ष सेवा सारे, उत्तम जे आराधेजी ॥ पद्मविजय हरे ते जविप्राणी, निज आतम हित साधे ॥ ज० ॥ १३ ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ नव पद स्तवन ॥

॥ वीर जिणंदनी वाणी, चित्त धरजो अमीय समाणी ॥ हो जविया ॥ नव पद नित्य नित्य सेवो ॥ १ ॥ अरिहंतपद सुखकारी, बीजे सिद्ध नमो हितकारी हो ॥ ज० ॥ न० ॥ २ ॥ आचारज सुविचारी, उवझाय ते श्रुत उपगारी हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ३ ॥ सत्यावीश गुण धारी, ऐसे साधु नमो ब्रह्मचारी हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ४ ॥ दंसण नाण नमीजे, वली चारित्र महातप लीजे हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ५ ॥ कर्म गहन तप कापे, ए तो मन वंछित सुख आपे हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ६ ॥ समर्या संकट नाजे, जसु दिन दिन मंगल गाजे हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ७ ॥ नव पद जे नर ध्यावे, ते तो सुर नर शिवसुख पावे हो ॥ ज० ॥ न० ॥ ८ ॥ जक्ति विलासे जे गावे,

ते तो सुर नर शिवसुख पावे हो ॥ भ० ॥ नं० ॥ ९ ॥

॥ नव पद स्तवन ॥

॥ अहो भविप्राणी रे सेवो, सिद्धचक्र ध्यान समो नहीं मेवो ॥ अहो० ॥ जे कोइ सिद्धचक्रने आराधे, तेहनो जग माहिं जश वाधे ॥ अहो० ॥ १ ॥ पहेले पदे रे अरिहंत, बीजे सिद्ध गुरु ध्यान महंत ॥ त्रीजे पदे रे सूरीश, चोथे उवझाय ने पांचमे मुनीश ॥ अ० ॥ २ ॥ छठे दरसण रे कीजे, सातमे ज्ञानथी शिवसुख लीजे ॥ आठमे चारित्र पालो, नवमे तपथी मुक्ति जालो ॥ अ० ॥ ३ ॥ आंबिल ओली रे कीजे, नोकारवाली वीश गणीजे ॥ त्रणे टकना रे देवो, पडिलेहण पडिक्कमणुं सेवो ॥ अ० ॥ ४ ॥ गुरुमुख किरिया रे कीजे, देव गुरु भक्ति चित्तमा धरीजे ॥ एम कहे रामना रे शिशो, ओली उजवीए जगीशो ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ वीर जिनेश्वर अति अलवेसर, गौतम गुणना दरीआ जी ॥ एक दिन आणा वीरनी लेइने, राजगृही सचरीआ जी ॥ श्रेणिक राजा वंदन आव्या, उलट मनमा आणी जी ॥ पर्षदा आगल बार बिराजे, हवे

सुणो भविप्राणी जी ॥ १ ॥ मानवभव तुमे पुण्ये पाम्या, श्री सिद्धचक्र आराधो जी ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया, साधु देखी गुण वाधे जी ॥ दरशण नाण चारित्र तप कीजे, नव पद ध्यान धरीजे जी ॥ धुर आसोथी करवां आंबिल, सुख संपदा पामीजे जी ॥ २ ॥ श्रेणिक राय गौतमने पूछे, स्वामी ए तप केणे कीधो जी ॥ नव आंबिल तप विधिशुं करतां, वंछित सुख केणे लीधो जी ॥ मधुरी ध्वनि बोल्या श्री गौतम, सांभलो श्रेणिक राय वयणां जी ॥ रोग गयो ने संपदा पाम्या, श्री श्रीपाल ने मयणा जी ॥ ३ ॥ रुमझुम करती पाये नेउर, दीसे देवी रूपाली जी ॥ नाम चक्केसरी ने सिद्धाइ, आदि जिनवर रखवाली जी ॥ विघन कोड हरे सहु संघना, जे सेवे एना पाय जी ॥ नाणविजय कवि सेवक नय कहे, सानिध करजो माय जी ॥ ४ ॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ श्री सिद्धचक्र सेवो सुविचार, आणी हैडे हरख अपार, जिम लहो सुख श्रीकार ॥ मन शुद्धे ओली तप कीजे, अहोनिश नव पद ध्यान धरीजे, जिनवर पूजा कीजे ॥ पडिक्कमणां दोय टकना कीजे, आठे

शुभए देव वादीजे, भमि सथारो कीजे ॥ मृषा तणो कीजे परिहार, अगे शीयल धरीजे सार, दीजे दान अपार ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य नमीजे, वाचक सर्व साधु वदीजे, दसण नाण सुणीजे ॥ चारित्र तपनु ध्यान धरीजे, अहोनिश नव पद गणणु गणीजे, नव आबिल पण कीजे ॥ निश्चल राखी मन हो निश्च, जपीए पद एक एक ईश, नोकारवाली वीश ॥ ठेले आबिल मोटो तप कीजे, सत्तरभेदी जिनपूजा रचीजे, मानवभव लाहो लीजे ॥ २ ॥ सातसें कुष्टीयाना रोग, नाठा यत्र नमण सजोग, दूर हुआ कर्मना भोग ॥ अढारे कुष्ठ दूरे जाये, दुःख दोहग दूर पलाये, मनवंछित सुख थाये ॥ निरधनीयाने दे बहु धन्न, अपुत्रीयाने दे पुत्ररतन्न, जे सेवे शुद्ध मन्न ॥ नवकार समो नहीं कोइ मंत्र, सिद्धचक्र समो नहीं कोइ जंत्र, सेवो भवि हरखत ॥ ३ ॥ जिम सेव्या मयणा श्रीपाल, उंबर रोग गयो सुख रसाल, पाम्या मंगलमाल ॥ श्रीपाल तणी पेरे जे आराधे, दिन दिन दोलत नस घर वाधे, अति शिवसुख साधे ॥ विमलेश्वर यक्ष सेवा सारे, आपदा कष्टने दूर निवारे, दोलत लक्ष्मी वधारे ॥ मेघविजय कवि

यणना शिष्य, आणी हेटे भाव जगदीश, विनय वंदे निशदिश ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री सिध्दचक्र स्तुति ॥

॥ जिनशासन वंछित, पूरण देव रसाल ॥ भावे भवि भणीए, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहु काले एहनी, पूजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमरपद, सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध वदो, आचारज उवझाय ॥ मुनि दरिसण नाण, चरण तप ए समुदाय ॥ ए नव पद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय ॥ ए ध्याने भविना, भव कोटि दुःख जाय ॥ २ ॥ आसो चैतरमा, सुदि सातमथी सार ॥ पूनम लगे कीजे, नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेवुं, पद सम साडाचार॥ एकाशी आंबिल तप, आगमने अनुसार ॥ ३ ॥ सिद्धचक्रनो सेवक, श्री विमलेसर देव ॥ श्रीपाल तणी परे, सुख पूरे स्वयमेव ॥ दुःख दोहग नावे, जे करे एहनी सेव॥ श्री सुमति सुगुरुनो, राम कहे नित्यमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिध्दचक्रनी स्तुति ॥

॥ अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो, आचारज

वाचक साहु नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमो तप, ए सिद्धचक सदा प्रणमो॥१॥अरिहंत अनंत थया थाशे, वळी भाव निक्षेपे गुण गाशे ॥ पडिक्कमणा देववंदन विधिशुं, आंबिल तप गणणुं गणो विधिशुं ॥ २ ॥ छरि पाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परे भव तरशे ॥ सिद्धचक्रने कुण आवे तोले, एहना जिनआगम गुण बोले ॥ ३ ॥ साडाचारे वरसे तप पूरु, ए कर्म विदारण तप शूरु ॥ सिद्धचक्रने मनमंदिर थापो, नय विमलेश्वर वर आपो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पद ओळीनी विधि ॥

॥ प्रथम सवारमां वहेलां उठी प्रतिक्रमण करी पडिलेहण करवुं पछी देव वांदी काउस्सग्ग करवो. जे पद होय तेना आराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग वंदणवत्तियाए कही, अन्नत्थ ऊससिएणं कहेवुं पहेले दिवसे बार लोगस्सनो, बीजे दिवसे आठ लोगस्सनो, त्रीजे दिवसे छत्रीश लोगस्सनो, चोथे दिवसे पचीश लोगस्सनो,पांचमे सत्यावीशनो,छठ्ठे सडसठनो, सातमे एकावननो,आठमे सित्तेरनो,नवमे पचासनो, ए प्रमाणे काउस्सग्ग करवा जेटला लोगस्सना काउस्सग्ग होय

तेटलां खमासमणां, तेटला साथिया, तेटलां फल जाणवां पठी वासक्षेपपूजा करी नव देरे नव चैत्यवंदन करवा, अथवा नव प्रतिमा आगल चैत्यवंदन नव करवा तेवी जोगवाइ न होय तो एक ठेकाणेज चैत्यवदन करवां पठी गुरु पासे जवु, पच्चरकाण करवु, श्रीपालचरित्र साजलवु पठी जिनमदिर जइ, नाइ, उज्ज्वल वस्त्र पहेरी, स्नात्रपूजा जणावी, अष्ट प्रकारी पूजा करे पठी वीश नोकारवाली जे पद होय तेनी गणे पठी जेटला खमासमणा होय तेटली प्रदक्षिणा करे पठी वपोरना देव वांदी, चैत्यवदन करी, पच्चरकाण पारी आविल करे पठी तिविहारनु पच्चरकाण करे पठी चैत्यवंदन करी त्रीजे पहोरे पमिलेह णने वखते पमिलेहण करे. पठी सध्याकालना देव वादे पठी जिनमदिरमा जइ धूपपूजा, आरती, मगलदीवो विगेरे करे पठी उपासरे गुरु पासे जइ प्रतिक्रमण करे सूती वखते पोरिसिनी गाथा जणावी निद्रा करे ए प्रथम दिवसनी विधि कही ए प्रमाणे नवे दिनसनी विधि जाणवी विशेष ए छे के छेल्ले दिवसे विशेष जक्ति पूजा प्रमुख करे

॥ चैत्यवंदनम् ॥

॥ श्री सिरि सिद्धचक्र नव पय मइल्ल पढ मिल्ल पय भय जिणंद असुरिंद चिय पयपकय नाह तुऊ नमो ॥ १ ॥ सिरि रिसहेसर सासिय फल दाण कप्प-तरु कप्पकदप्पगजण जवजजण देव तुऊ नमो ॥ २ ॥ सिरि नाभि नाम कुलगर कुलकमलुल्लास परमहंस समअसम तम तम तमो भरहरणिक्कपञ्च तुऊ नमो ॥ ३ ॥ सिरि मरुदेवासामिणि उदरदरी दरिय केसरि किसोर धोर जुयदम्म रामिय पयम्म मोहस्स तुऊ नमो ॥ ४ ॥ इक्कागुवमजूसण गयदूसण दुरियमयगल मइंद चंद सम वयण वियसिय नीलुप्पल नयण तुऊ नमो ॥५॥ कल्लाण कारणु सम तत्त कणय कलसस-रिस सगाण कब ठिय कलकुंतल नीलुप्पल कालेय तुऊ नमो ॥ ६ ॥ आईसर जोईसर जयगयमणलक्क लखिय सरुज भवकूव पडिय जतुतारण जिणनाह तुऊ नमो ॥ ७ ॥ सिरि सिद्धसेलमंमण दुह खमण सयरराय नयपाय सयलमह सिद्धिदाय जिणनायग होउ तुऊ नमो ॥ ८ ॥ तुऊ नमो तुऊ नमो तुऊ नमो देव तुऊ चेव नमो ॥ पणयसुररयणसेहर रुडरजिय पाय तुऊ नमो ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्यवंदनम् ॥

॥ नियतरंगारिगणे सुनाणे, सपाभ्हिराइ सयप्पहाणे ॥ संदेहसंदोहरय हरतो, झाएह निच्चपि जिणे रहंतो ॥ १ ॥ उठ्ठ कम्मावरणप्पमुक्के, अणतनाणाइ सीरीचउक्के ॥ समग्गलोगग्ग पयछसिद्धे, झाएह निच्चपि समग्गसिद्धे ॥ २ ॥ न तं सुहं नहि पीया न माया, जे दंति जीवान्हिसूरीसपाया ॥ तम्हाहु ते चेव सया नजेह, ज मुक्क सुक्खाइ लहु लहेह ॥ ३ ॥ सुत्तत्थसवेगमय सुएण, संनीरखीरामय विसुएण ॥ पीनंति जे ते उवझायराए, झाएह निच्चपि कयप्पसाए ॥ खतेय दंतेय सुगुत्तिगुत्तो, मुत्तेय सते गुणजोगजुत्तो ॥ गयप्पमाए गयमोहमाए, झाएह निच्च मुणिरायपाए ॥ ५ ॥ ज दव्वछिकायेसु सद्दहाण, त दंसण सव्वगुणप्पहाण ॥ कुग्गहि वाही उवयंति जेण, जहाविधेण रसायणेण ॥ ६ ॥ नाण पहाण नयचक्कसिद्ध ततवबोहीक मय पसिद्ध ॥ धरेह चित्तावसए फुरत, माणिक्कदिवंतमो हरत ॥ ७ ॥ सुसवर मोहनिरोधसार, पचप्पयार विगमाइयारं ॥ मूलोत्तराणेगगुण पवित्त, पालेह निचपि हु सच्चरित्त ॥ ८ ॥

चर्प्पं तहाजितरजेयमेय, कयाय डुप्पेय कुकम्म चेयं ॥ डुरकरकयच्छे कयपावनास, तवेण दाहागमय निरास ॥ ए ॥ एयाइ जे केवि नवप्पयाइ, आराहयतिठफलप्पयाइ ॥ लहति ते सुरकपरंपराण, सिरिं सिरीपाल नरेसरुव ॥ १० ॥ इति ॥

॥ नव पद चैत्यवदनम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाण, सप्पाडिहेरासणसठियाण ॥ सदेसणाणंदियसज्जणाण, नमो नमो होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ सिद्धाणमाणसुरमालयाणं, नमो नमोऽणतचउक्कयाण ॥ सूरीणडुरीकयकुग्गहाण, नमो नमो सूरसमप्पहाण ॥ २ ॥ सुतत्तविछारणतप्पराण, नमो नमो वायगकुजराण ॥ साहूण ससाहिअ संजमाण, नमो नमो सुद्धदयादमाण ॥ ३ ॥ जिणुत्ततत्ते रुइलरकणस्स, नमो नमो निम्मलदसणस्स ॥ अन्नाणसमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ ४ ॥ आराहिअखमीय सक्किअस्स, नमो नमो सजमवीरिअस्स ॥ कम्मडुमोम्मूलणकुजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोजरस्स ॥ ५ ॥ इयनवपयसिद्धलद्धिविज्जासमिद्ध ॥ पयडियसुरवग्ग, ह्रींतिरेहा-

॥ अथ चैत्यवंदनम् ॥

॥ नियतरंगारिगणे सुनाणे, सपाम्हिहेराइ सयप्पहाणे ॥ सदेहसदोहरय हरतो, झाएह निच्चपि जिणे रहंतो ॥ १ ॥ डुठठ कम्मावरणप्पमुक्के, अणतनाणाइ सीरीचउक्के ॥ समग्गलोगग्ग पयच्छसिद्धे, झाएह निच्चपि समग्गसिद्धे॥२॥न त सुहं नहि पीया न माया, जे दति जीवान्हिसूरीसपाया ॥ तम्हाहु ते चेव सया नजेह, ज मुक्ख सुक्खाइ लहु लहेह ॥ ३ ॥ सुत्तह्नसवेगमय सुएण, सनीरखीरामय विसुएणं ॥ पीनति जे ते उवझायराए, झाएह निच्चपि कयप्पसाए ॥ खतेय दतेय सुगुत्तिगुत्तो, मुत्तेय सते गुणजोगजुत्तो ॥ गयप्पमाए गयमोहमाए, झाएह निच्च मुणिरायपाए ॥ ५ ॥ ज दव्वछिकायेसु सद्दहाण, त दंसणं सव्वगुणप्पहाण ॥ कुग्गहि वाही उवयति जेण, जहाविधेण रसायणेण ॥ ६ ॥ नाण पहाण नयचक्कसिद्ध ततवबोहीक मय पसिद्ध ॥ धरेह चित्तावसए फुरत, माणिक्कदिउवतमो हरत ॥ ७ ॥ सुसवर मोहनिरोधसार, पचप्पयार विगमाइयार ॥ मूलोत्तराणेगगुण पवित्त, पालेह निच्चपि हु सच्चरित्त ॥ ८ ॥

वप्पं तहाजितरज्जेयमेय, कयाय डुप्पेय कुक्म्म जेय ॥ डुरकरुयचे कयपावनास, तवेण दाहागमय निरासं ॥ ए ॥ एवाइ जे केनि नवप्पयाइ, आराहयतिठफलप्पयाइ ॥ लहंति ते सुक्खपरंपराए, सिरि सिरीपाल नरेसरुव ॥ १० ॥ इति ॥

॥ नव पद चैत्यवंदनम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं, सप्पाडिहेरासणसवियाण ॥ सदेसणाणंदियसज्जणाण, नमो नमो होउ सया जिणाण ॥ १ ॥ सिद्धाणमाणसुरमालयाणं, नमो नमोऽणतचउक्कयाण ॥ सूरीणडुरीकयकुग्गहाण, नमो नमो सूरसमप्पहाण ॥ २ ॥ सुतछवित्थारणतप्पराण, नमो नमो वायगकुंजराण ॥ साहूण ससाहिअ संजमाण, नमो नमो सुद्धदयादमाण ॥ ३ ॥ जिणुत्ततत्ते रुइलरकणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥ अन्नाणसमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ ४ ॥ आराहिअखंमीय सक्किअस्स, नमो नमो संजमवीरिअस्स ॥ कम्मडुमोम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥ ५ ॥ इयनवपय सिद्धलद्धिविज्जासमिद्ध ॥ पयडियसुरवग्ग, ह्रींतिरेहा-

समग्ग ॥ दिसवड्सुरसारं, खोणिपीढावयार ॥
तिजयविजयचक्क, सिद्धचक्कं नमामि ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ नव पदजीनी स्तुति ॥

॥ प्रह उठी वंदु, सिद्धचक्र सदाय ॥ जपीए नव पदनो, जाप सदा सुखदाय ॥ विधिपूर्वक ए तप, जो करे थइ उजमाल ॥ ते सवि सुख पामे, जिम मयणा श्रीपाल ॥ १ ॥ मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत ॥ तस कर्मसंयोगे, कोढी मिलीयो कंत ॥ गुरुवयणे ते हो, आराध्युं तप एह ॥ सुख संपद् वरीया, तरीया भवजल तेह ॥ २ ॥ आंबिल ने उपवास, छठ वली अठम ॥ दश अठाइ पंदर मास, छ मास विशेष ॥ इत्यादिक तप बहु, सहु मांहि शिरदार ॥ जे भवियण करशे, ते तरशे संसार ॥ ३ ॥ तप सान्निध्य करशे, श्री विमलेसर यक्ष ॥ सहु संघना संकट, चूरे थइ प्रत्यक्ष ॥ पुंडरीक गणधार, कनकविजय बुद्धि शिष्य ॥ बुध दर्शनक विजय कहे, पहोंचे सकल जगीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अर्हन्मूल प्रकाकोतनुनिकरधर सूरिराजश्च शाखा, गुल्म सद्वाचकेशो दलततिपरिधि साधवो

मंजरीचित् ॥ पुष्पौघो दर्शन चाभिमतपरिमलश्चारु
चारित्ररूप शस्त शस्यं तपश्चामरतरुविजय सिद्ध-
चक्र पुनातु ॥ १ ॥ ख्याता सिद्धा मुनींद्रा प्रवरमुनि
वरा, साधवो ज्ञानपात्र श्वेता रक्ताश्च पीता बुधसम-
हरिता कज्जलाभा जिनेशा ॥ चचरुष्पाग्रपत्र ढवि-
कनकरज पर्णरोलबधारा गीर्वाणा गा इवेष्ट सकल-
मतितत पावन सदहतु ॥ २ ॥ सार्वाना गृहनेत्रा
द्धिघनपरिमिता कर्मनिर्मूलकाना—माचार्याणा रसत्रि-
नवनव मुनयो वाचकाना मुनीना॥ निशल्या सप्तयुक्ता
मुनिकृतिसहिता नेत्रसग्या चतुर्णा पष्टिरब्धि रस-
सीगगनशरमिता सद्गुणौघा जयति ॥ ३ ॥ देवेन्द्रा
अष्टवर्गा ग्रहगणसहिता गोमुखाद्या परेऽपि चक्रेश्व-
र्यादि देव्योऽपि च कुशलकरा सिद्धचक्रस्य भक्ता ॥
श्रीश्रीपालादिकानामिव सुशमभृता प्राणिना भक्ति-
भाजा श स्वर्द्धि ददतु प्रशमसुरफल मुक्तिसौभाग्य-
बीजम् ॥ ४ ॥ इति सिद्धचक्रस्य स्तुति ॥

॥ सिध्दचक्रजीनु चैत्यवदन ॥

॥ श्री सिद्धचक आराधता, सुख सपत्ति लहीए ॥
सुरतरु सुररमणी थकी, अधिकज महिमा कहीए ॥

॥ १ ॥ अष्ट कर्म हाणी करी, शिवमंदिर रहीए ॥ विधिशु नव पद ध्यानथी, पातिक सवि दमीए॥२॥ सिद्धचक्र जे सेवशे, एकमना नर नार ॥ मनवाछित फल पामशे, ते सवि त्रिभुवन मोजार ॥ ३ ॥ अग देश चपापुरी, तस केरो नृपाल ॥ मयणा साथे तप तपे, ते कुवर श्रीपाल ॥ ४ ॥ सिद्धचक्रजीना नमन थकी,जस नाठा रोग॥ तत्क्षण त्यांथी ते लहे, शिव-सुख संजोग ॥५॥ सातसें कोढी होता, हुवा नीरोगी जेह ॥ सोवन वाने जलहले, जेहनी निरुपम देह ॥ ६ ॥ तेणे कारण तमे नविजनो, प्रह उठी नके ॥ आसो मास चैत्र थकी, आराधो जुगते ॥ ७ ॥ सिद्ध-चक्र त्रण कालना, वदो वली देव ॥ पडिक्कमणु करी उनय काल, जिनवर मुनि सेव ॥ ८ ॥ नव पद ध्यान हृदे धरो, प्रतिपालो नवि शील ॥ नव पद आंबिल तप तपो, जेम होय लीलम लील॥ ए ॥ पहेलो पद अरिहतनो, नित्य कीजे ध्यान ॥ वीजो पद वली सिद्धनो, करीए गुणग्राम ॥ १० ॥ आचारज त्रीजे पदे, जपता जयजयकार ॥ चोथो पद उवज्झायनो, गुण गाउ उदार ॥ ११ ॥ सरव साधु वंदु सही,अढीद्वीपमा जेह ॥ पचम पदमा ते सही, धरजो धरी सनेह

॥ १२ ॥ छठे पदे दरसण नमु, दरशन अजवालु ॥ ज्ञान पद नमु सातमे, तेम पाप पखालु ॥ १३ ॥ आठमे पद रुडे जपु, चारित्र सुसग ॥ नवमे पद वहु तप तपो, जिम फल लहो अजग ॥ १४ ॥ एही नव पद ध्यानथी, जपता नाठे कोड ॥ पडित धीरविमल तणो, नय वदे कर जोड ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ श्री सिद्धचक आराधो, मनवाछित कारज साधो रे ॥ भविया ॥ श्री सिद्धचक आराधो ॥ ए आकणी ॥ पद पहेले अरिहत ध्यावो, जेम अरिहत-पदवी पावो रे ॥ भवियां ॥ श्री सिद्ध० ॥ पद दुजे सिद्ध मनावो, ज्यम सिद्ध सरूपी होइ जावो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ सूरि त्रीजे गुणवता, जशना एक जग जय-वता रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ चोथे पदे उवकाया, जेणे मारग आण वताव्या रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ साधु सकल गुणधारी, पद पचमे जग हितकारी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ दरसण पद छठे वदो, जेम कीरति होय शीर नदो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ज्ञानपद सातमे दाखो, चारित्रपद आठमे भाख्यो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ तप नवमे पद

शार्यो, जेम वीरजीने वचने रार्यो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ श्रीपालने मयणा लीधो, नवमे जव कारज सिद्ध्यो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ नव पद महिमा जाणी, जिनचन्द्रहीए मन आणी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विनयविजयजी कृत ॥

॥ आंबिल तपनी सज्झाय ॥

॥ समरी श्रुत देवी शारदा, सरस वचन वर आपे सदा ॥ आंबिल तपनो महिमा घणो, जविजन जाव थकी ते सुणो ॥ १ ॥ विगय सकलनो जिहां परिहार, अशन मांहि घणो जेद विचार ॥ द्विदल सर्व तिल तूयर विना, अलसी कोद्रव कागनी मना ॥ २ ॥ खरुधान पुहक टूकट फल सर्व, वर्जीजे आंबिलने पर्व ॥ उसामण परे जो जल जले, तो आंबिल अबिल रस टले ॥ ३ ॥ बिलवण सूठी मरीच ने सूआ, मेथी सचल रामठजुआ ॥ अजमादिक जेला रधाय, तो आंबिलमा लेवा थाय ॥ ४ ॥ जीरु जले ते जेवरी कही, ते सूजे पण जीरु नहीं ॥ गोमूत्र विना अठे अणाहार, ते सवि लेवानो विवहार ॥ ५ ॥ सात जाति जे तडुल तणी, ते सूजती आंबिलमा जणी। सेकिल धान अपकी दाल, मामा खाखर लेवा टाल

॥ ६ ॥ हलदर लविंग पीपर पींपली, हरडे सेंधव वेसण वली ॥ खादिम स्वादिम जे कहेवाय, ते आविलमा नवि लेवाय ॥ ७ उत्कृष्ट विधे उष्ण जल नीर, जघन्य विधे काजीनु नीर ॥ इम निरदूषण आविल करे, मुखधोवण दातण नवि करे ॥ ८ ॥ जे निरदूषण लीए आहार, उदननो तेहने विवहार ॥ आटो लिंगट पाणीवतु, ते पण आविलमा सकतु ॥ ॥ ९ ॥ अशठ गीतारथ अणमछरी, जे जे विधि बोले ते खरी ॥ लाभालाभ विचारे जेह, विधि गीतारथ कहीए तेह ॥ १० ॥ आविल तप उत्कृष्टो कह्यो, विघन विदारण कारण लह्यो ॥ वाचक कीर्त्तिविजय सुपसाय, भाखे विनयविजय उवझाय ॥ ११ ॥ इति आविलमां आहार लेवानो विधि सज्झाय ॥

॥ जिन पूज्यानुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रणमी श्री गुरुराज आज, जिनमंदिर केरो ॥ पुन्य भणी करशु सफल, जिनवचन भलेरो ॥ देहरे जावा मन करे, चोथ तणु फल पावे ॥ जिन जुहारवा उठता, छठ पोते आवे ॥ जइशु जिनवर भणी ए, मार्ग चालता ॥ होवे द्वादश तणु पुन्य, भक्ति मालता ॥

अथ पंच जिनवर तणो ए, पदरे उपवास ॥ दीठो स्वामी तणो भुवन, लहीए एक मास ॥ जिनवर पासे आवता, छमासी फल सिद्ध ॥ आव्या जिनवर बारणे, वर्षी तप फल लीध ॥ सो वर्ष उपवास पुन्य, प्रदक्षिणा देता ॥ सहस वर्ष उपवास पुन्य, जे नजरे जोता ॥ फल घणो फुलनी माल, प्रभु कंठे ठवता ॥ पार न आवे गीत नाद, केरा फल स्थुणता ॥ शिर पूजी पूजा करो ए, सूर धूप तणो धूप ॥ अक्षर सार ते अक्षय सुख, दीप तनुरूप ॥ निर्मल तन मने करीए, स्थुणता इन्द्र जगीश ॥ नाटक भावना भावता, पामे पदवी जगीश ॥ जिनवरभक्ति वली ए, प्रेमे प्रकाशी ॥ सुणी श्रीगुरु वयण सार, पूर्व ऋषि भाखी ॥ अष्ट कर्मने टालवा, जिनमंदिर जइशुं ॥ भेटी चरण भगवतना, हवे निर्मल थइशुं ॥ कीर्त्तिविजय उवझायनो, विनय कहे कर जोड ॥ सफल होजो मुज विनति, जिन सेवानु कोड ॥ इति ॥

॥ अथ सूतक विचार ॥

(जन्म संबंधी)

॥ पुत्र जन्मे सूतक दिन १० नु जाणवु, पुत्री जन्मे सूतक दिन ११ नु जाणवु, अने बार दिवस

सुधी घरना माणस जिनपूजा करे नहीं न्यारा जमता होय तो बीजाना घरना पाणीथी जिनपूजा करे एम चर्चरी ग्रथमा कह्यु छे, अने स्त्री दिन ३० सुधी जिनदर्शन तथा दिन ४० सुधी पूजा करे नहीं तथा साधुने वहोरावे नहीं घरना गोत्री जनोने दिन ५ नु सूतक लागे घोडी, ऊटणी, भेंश प्रसवे तो दिन १ नु सूतक लागे

भेंश प्रसवे तो दिन १५ पछी दुध कल्पे गाय प्रसवे तो दिन १० पछी दुध कल्पे बकरी प्रसवे तो दिन ८ पछी दुध खपे

(मृत्यु सबंधी)

॥ जेने घेर मृत्यु थाय तेने दिन १२ नु सूतक लागे, ने तेने घेर तेटलाज दिवस साधु वहोरे नहीं अने तेना घरना अग्निथी तथा पाणीथी जिनपूजा न थाय मृतक पासे सुतेलाने दिन ३ नु सूतक दर्शन, पूजा ने प्रतिक्रमण थाय नहीं दिवस चार पछी थाय

मृतकने अरूस्यो न होय तो स्नान कीधे शुद्ध थाय ने अरूस्यो होय तो दिन १ नु सूतक लागे

जेने घेर जन्म तथा मरण थाय ते दिन १२ जिन-पूजा न करे मृतकने अरूकनार पहोर २४ सुधी प्रति-

क्रमण करे नही वेश पालटनारने ८ पहोरनु सूतक जाणवुं

जन्मे ते दिवस मरे अथवा देशांतरे मरण पामे तो दिन १ नु सूतक जाणवु आठ वर्षेथी नानुं बालक मरे तो तेटलाज (८) दिननु सूतक जाणवु

गाय प्रमुखनु मरण थाय तो कलेवर बहार लइ जाय त्यासुधीनु सूतक जाणवु

दास दासीनी कन्या आपणी निश्राए घरमा रही होय तो तेनो जन्म थया पछी मृत्यु थाय तो त्रण रात्रिनु सूतक लागे जेटला महीनानो गर्भ होय तेटलाज पहोरनुं सूतक जाणवु इति सूतकविचार ॥

॥ ऋतुवंती स्त्री विषे ॥

॥ ऋतुवंती स्त्री दिवस त्रण लगे जलादिकने ठीवे नहीं, दिन चार लगे प्रतिक्रमण करे नहीं, पण तपस्या करे ते लेखे लागे दिन पाच पछी जिनपूजा करे चार दिवस पछी रोगादिक कारणे रुधिर दीठामा आवे तेनो दोष नथी एम महानिशीथ सूत्रमा कह्यु छे

॥ पच्चक्खाण कर्याथी नरकायु त्रुटे ॥

नवकारशीथी १०० वर्षनु नरकायु त्रुटे

पोरिसिथी १००० वर्षनु नरकायु त्रुटे
साड्ढपोरिसिथी १०००० वर्षनु नरकायु त्रुटे
पुरिमड्ढथी १००००० वर्षनु नरकायु त्रुटे
एकासणाथी १०००००० वर्षनु नरकायु त्रुटे
निवीथी एक क्रोम वर्षनु नरकायु त्रुटे
एकलठाणाथी दश क्रोम वर्षनु नरकायु त्रुटे
एकलदत्तीथी सो क्रोम वर्षनु नरकायु त्रुटे
आंबिलथी हजार क्रोम वर्षनु नरकायु त्रुटे
उपवासथी दश सहस्र क्रोम वर्षनु नरकायु त्रुटे
एम जाणवु

माटे अवश्य जैनधर्म समुदायना पुरुष अने स्त्री-वर्गे यथाशक्ति व्रत पच्चखाण करवु

॥ वीश स्थानक तपनी विधि ॥

१ नमो अरिहंताणं २००० गणवु लो २४ अथवा१२
२ नमो सिद्धाणं २००० गणवु लो १५
३ नमो पवयणस्स २००० गणवु लो ४५
४ नमो आयरियाणं २००० गणवु लो ३६
५ नमो थेराणं २००० गणवु लो १०
६ नमो उवज्झायाणं २००० गणवु लो २५

७ नमो लोए सव्वसाहूण २००० गणवु लो २७
८ नमो नाणस्स २००० गणवु लो ५
९ नमो दंसणस्स २००० गणवु लो ६७
१० नमो विणयसंपन्नाण २००० गणवु लो १०
११ नमो चारित्तस्स २००० गणवु लो ७०
१२ नमो बंभवयधारिण २००० गणवु लो ९
१३ नमो किरियाण २००० गणवु लो २५
१४ नमो तवस्स २००० गणवु लो १२
१५ नमो गोयमस्स २००० गणवु लो २८
१६ नमो जिणाण २००० गणवु लो २०
१७ नमो चरणस्स २००० गणवु लो १७
१८ नमो अभिनवनाणस्स २००० गणवु लो ५१
१९ नमो सुयनाणस्स २००० गणवु लो १२
२० नमो तिथ्थस्स २००० गणवु लो ५

ए रीते वीश स्थानकनुं गणणु सर्व पदे गणवु, अने पदे पदे नवकारवाली वीश गणवी, एटले जे पद होय ते पदनी नवकारवाली वीश गणवी लोगस्स संपूर्ण गणवो

आ रीते वीश स्थानकनी ओली जघन्यथी बे मासमां पूरी करवी अने उत्कृष्टथी ६ मास सुधीमा एक

उंली पूरी करवी अने ते उपरांत थाय तो उंली लेखे न लागे (जे उंली शरु करी होय ते)

॥ अथ श्री मोन एकादशीनां दोढसो कल्याणकनुं गणणुं ॥

(१) जबुद्वीपे जरते अतीत चोवीशी
४ श्री महायश सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री सर्वानुजूति अर्हते नम ॥
६ श्री सर्वानुजूति नाथाय नम ॥
६ श्री सर्वानुजूति सर्वज्ञाय नम ॥
७ श्री श्रीधर नाथाय नम ॥
(२) जबुद्वीपे जरते वर्तमान चोवीशी
२१ श्री नमिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
१९ श्री मल्लिनाथ अर्हते नम ॥
१९ श्री मल्लिनाथ नाथाय नम ॥
१९ श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
१८ श्री अरनाथ नाथाय नम ॥
(३) जबुद्वीपे जरते अनागत चोवीशी
४ श्री स्वयप्रज सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री देव[illegible] [illegible]र्हते नमः ॥

६ श्री देवश्रुत नाथाय नम॰ ॥
६ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय मम॰ ॥
७ श्री उदयनाथ नाथाय नम ॥
(४) धातकी खडे पूर्वे जरते अतीत चोवीशी
४ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नम. ॥
६ श्री शुजकरनाथ अर्हते नम ॥
६ श्री शुजकरनाथ नाथाय नम ॥
६ श्री शुजकरनाथ सर्वज्ञाय नम. ॥
७ श्री सप्तनाथ नाथाय नम ॥
(५) धातकी खडे पूर्व जरते वर्तमान चोवीशी
२१ श्री ब्रह्मेन्द्रनाथ सर्वज्ञाय नम॰ ॥
१ए श्री गुणनाथ अर्हते नम ॥
१ए श्री गुणनाथ नाथाय नम ॥
१ए श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
१० श्री गांगिकनाथ नाथाय नम ॥
(६) धातकी खडे पूर्वे जरते अनागत चोवीशी
४ श्री साप्रत सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री मुनिनाथ अर्हते नम ॥
६ श्री मुनिनाथ नाथाय नम ॥
६ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री विशिष्टनाथ नाथाय नम ॥

(७) पुष्करवरद्वीपे पूर्व भरते अतीत चोवीशी

४ श्री सुमृडुनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

६ श्री व्यक्तनाथ अर्हते नम ॥

६ श्री व्यक्तनाथ नाथाय नम ॥

६ श्री व्यक्तनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री कलाशत नाथाय नम ॥

(८) पुष्करवरद्वीपे पूर्वभरते वर्तमान चोवीशी

२१ श्री अरण्यवास सर्वज्ञाय नम ॥

१९ श्री योगनाथ अर्हते नम. ॥

१९ श्री योगनाथ नाथाय नम ॥

१९ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

१८ श्री अयोगनाथ नाथाय नम ॥

(९) पुष्करवरद्वीपे पूर्व भरते अनागत चोवीशी

४ श्री परम सर्वज्ञाय नम. ॥

६ श्री शुद्धार्तिनाथ अर्हते नम ॥

६ श्री शुद्धार्तिनाथ नाथाय नम ॥

६ श्री शुद्धार्तिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री निःकेशनाथ नाथाय नम ॥

(१०) धातकी खंडे पश्चिम भरते अतीत चोवीशी

४ श्री सर्वार्थ सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री हरिचन्द्र अर्हते नम ॥
६ श्री हरिचन्द्र नाथाय नम ॥
६ श्री हरिचन्द्र सर्वज्ञाय नम. ॥
७ श्री मगधाधिप नाथाय नम ॥
(११) धातकी खंडे पश्चिम भरते वर्तमान चोवीशी.
२१ श्री प्रयछ सर्वज्ञाय नम ॥
१९ श्री अक्षोभनाथ अर्हते नम
१९ श्री अक्षोभनाथ नाथाय नम ॥
१९ श्री अक्षोभनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
१८ श्री मलयसिंह नाथाय नम ॥
(१२) धातकी खंडे पश्चिम भरते अनागत चोवीशी
४ श्री दिनरुक् सर्वज्ञाय नम. ॥
६ श्री धनदनाथ अर्हते नम ॥
६ श्री धनदनाथ नाथाय नम ॥
६ श्री धनदनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
७ श्री पौषधनाथ नाथाय नम ॥
(१३) पुष्करवरद्वीपे पश्चिम भरते अतीत चोवीशी
४ श्री प्रलंब सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री चारित्रनिधि अर्हते नम ॥

६ श्री चारित्रनिधि नाथाय नम ॥
६ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नम ॥
७ श्री प्रशमराजित नाथाय नम ॥
(१४) पुष्करवरद्वीपे पश्चिम भरते वर्तमान चोवीशी.
२१ श्री स्वामि सर्वज्ञाय नम ॥
१९ श्रीविपरीतनाथ अर्हते नम ॥
१९ श्री विपरीतनाथ नाथाय नम ॥
१९ श्री विपरीतनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
१८ श्री प्रमादनाथ नाथाय नम ॥
(१५) पुष्करवरद्वीपे पश्चिम भरते अनागत चोवीशी.
४ श्री अघटितनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ अर्हते नम. ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ नाथाय नम ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
७ श्री ऋषभचंद्र नाथाय नम ॥
(१६) जंबूद्वीपे ऐरवते अतीत चोवीशी
४ श्री दयांत सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री अभिनंदननाथ अर्हते नम. ॥
६ श्री अभिनंदननाथ नाथाय नम ॥
६ श्री अभिनंदननाथ सर्वज्ञाय नम ॥

७ श्री रत्लेशनाथ नाथाय नम ॥
(१७) जबुद्वीपे ऐरवते वर्तमान चोवीशी
२१ श्री श्यामकोष्ट सर्वज्ञाय नम ॥
१९ श्री मरुदेवनाथ अर्हते नम ॥
१९ श्री मरुदेवनाथ नाथाय नम ॥
१९ श्री मरुदेवनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
२० श्री अतिपार्श्व नाथाय नम ॥
(१८) जबुद्वीपे ऐरवते अनागत चोवीशी
४ श्री नदिषेण सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री व्रतधरनाथ अर्हते नम ॥
६ श्री व्रतधरनाथ नाथाय नम ॥
६ श्री व्रतधरनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
७ श्री निर्वाणनाथ नाथाय नम ॥
(१९) धातकी खडे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी
४ श्री सौंदर्य सर्वज्ञाय नम. ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ अर्हते नम ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ नाथाय नम ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
७ श्री नरसिंहनाथ नाथाय नम ॥
(२०) धातकी खडे पूर्व ऐरवते वर्तमान चोवीशी

२१ श्री खेमन सर्वज्ञाय नम ॥
१९ श्री सतोषितनाथ अर्हते नम ॥
१९ श्री सतोषितनाथ नाथाय नम ॥
१९ श्री सतोषितनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
१८ श्री कामनाथ नाथाय नम ॥
(२१) धातकी खंडे पूर्व ऐरवते अनागत चोवीशी.
४ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री चन्द्रदाह अर्हते नम ॥
६ श्री चन्द्रदाह नाथाय नम ॥
६ श्री चन्द्रदाह सर्वज्ञाय नम ॥
७ श्री दिलादित्य नाथाय नम ॥
(२२) पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी
४ श्री अष्टाह्निक सर्वज्ञाय नम ॥
६ श्री वणिकनाथ अर्हते नम ॥
६ श्री वणिकनाथ नाथाय नम ॥
६ श्री वणिकनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
७ श्री उदयज्ञान नाथाय नम ॥
(२३) पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते वर्तमान चोवीशी
२१ श्री तम रुद सर्वज्ञाय नम ॥
१९ श्री सायकाक्ष अर्हते नम

४ श्री कलापक सर्वज्ञाय नम. ॥
६ श्री विशोम अर्हते नम ॥
६ श्री विशोम नाथाय नम ॥
६ श्री विशोम सर्वज्ञाय नम ॥
७ श्री अरण्यनाथ नाथाय नम ॥

॥ इति मौन एकादशीनां दोढसो कल्याणकनु गणणु समाप्त ॥

॥ अथ कल्याणकनी समज ॥

कल्याणकनो शब्द	अर्थ	जाप
१ च्यवन	परगतिथी आववु	परमेष्ठिने नम
२ जन्म	मातानी कुखथी जन्मे ते	अर्हते नम
३ दीक्षा	मुनिपणु धारण करवु	नाथाय नम
४ केवल	सपूर्ण ज्ञान थवु	सर्वज्ञाय नम.
५ मोक्ष	कर्मथी मूकावु	पारगताय नम



॥ अथ श्री शत्रुंजय रास ॥

(ढाळ रास)

॥ दोहा ॥

॥ श्री रिसहेसर पाय नमी, आणी मन आनद ॥ रास नणु रलियामणो, शत्रुजय सुखकद ॥ १ ॥ संवत् चार सत्योतरे, हुवा धनेसर सूर ॥ तिणे शत्रुजय माहातम कह्यु, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणद समोसरया, शत्रुजय उपर जेम ॥ इन्द्रादिक आगल कह्युं, शत्रुजय माहातम एम ॥ ३ ॥ शत्रुजय तीरथ सारिखु, नहीं छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमे, तीरथ सघला जोय ॥ ४ ॥ नामे नव निधि सपजे, दीठे दुरित पुलाय ॥ जेटता नवजय टले, सेवता सुख थाय ॥ ५ ॥ जबु नामे द्वीप ए, दाक्षण नरत मझार ॥ सोरठ देश सोहामणो, तिहा छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ राग रामग्री ॥

॥ शत्रुजय ने श्री पुन्डरीक, सिद्धक्षेत्र कहु तहकीक
॥ विमलाचलने करु प्रणाम, ए शत्रुजयना

नाम॥ १॥ सुरगिरि महागिरि ने पुन्यराश, श्रीपद पर्वत इन्द्रप्रकाश ॥ महातीरथ पूरवे सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ शाश्वत पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तिणे कीजे नक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुठाम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुनद्र कैलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्री शत्रुजयनां एकवीश नाम, जपेज वेठा अपणे ठाम ॥ शेत्रुज जात्रानु फल लहे, महावीर नगवंत इम कहे॥ए०॥५॥

॥ दोहा ॥

॥ शेत्रुजो पहेले अरे, असी जोयण परमाण ॥ पहोलो मूले उचपणे, ठवीश जोयण जाण ॥ १ ॥ सित्तेर जोयण जाणवो, बीजे आरे विशाल ॥ वीश जोयण उचो कह्यो, मुज वदन त्रण काल ॥ २ ॥ साठ जोयण त्रीजे अरे, पहोलो तीरथराय ॥ सोल जोयण उचो सही, ध्यान धरु चित्त लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पहोलपणे, चोथे अरे मकार ॥ उचो दश जोयण अचल, नित्य प्रणमे नर नार ॥ ४ ॥ वार जोयण पचमे अरे, मूल तणो विस्तार ॥ दोय जोयण उचो कह्यो, शेत्रुज तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठठे अरे,

पहोलो पर्वत एह ॥ उचो होशे सो धनुष, शाश्वतुं तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ जिनवरशुं मेरो मन लीणो ॥ ए राह ॥

॥ केवलज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर, अनत सिद्धा इण ठाम रे ॥ अनंत वली सिद्धशे इण ठामे, तिणे करुं नित्य प्रणाम रे ॥ १ ॥ शेत्रुंजे साधु अनता सिद्धा, सिद्धशे वलीय अनत रे ॥ जिणे शेत्रुंज तीरथ नहीं भेट्यो, ते गर्भावास लहत रे ॥ शेत्रुंजे० ॥ २ ॥ फागण-सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायण-रुख समोसर्या स्वामी, पूरव नवाणु वार रे ॥ शे० ॥ ३ ॥ भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुंजय गिरि आय रे ॥ पाच कोमीशु पुमरीक सिद्ध्या, तिणे पुंमरीक कहाय रे ॥ शे० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, वे वे कोमी सघात रे ॥ फागण सुदि दशमी दिन सिद्धा, तिणे प्रभु प्रणमु प्रभात रे ॥ शे० ॥५॥ चैत्र मास वदि चौदशने दिन, नमि पुत्री चोसठ रे ॥ अणसण करी शत्रुंज गिरि उपर, ए सहु सिध्ध्या एकठ रे ॥ शे० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्राविड ने वारिखिल्ल रे ॥ कार्तिक

सुदि पूनम दिन सिध्ध्या, दश कोमी मुनि नि शल्य रे ॥ शे० ॥ ७ ॥ पांचे पाम्व उण गिरि सिध्ध्या, नव नारद ऋषिराय रे ॥ सांव प्रद्युम्न गया तिहां मुगते, आठे कर्म खपाय रे ॥ शे० ॥ ८ ॥ नेम विना त्रेवीश तीर्थंकर, समोसर्या गिरिश्रृंग रे ॥ अजित शान्ति तीर्थंकर वेहु, रह्या चोमासु रंग रे ॥ शे० ॥ ए ॥ सहस्स साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साध रे ॥ पाचसें साधुशुं शैलग मुनिवर, शेत्रुजे शिवसुख लाध रे ॥ शे० ॥ १० ॥ असख्याता मुनि शेत्रुजे सिद्ध्या, जरतेसरने पाट रे ॥ राम अने जरतादिक सिध्ध्या, मुक्ति तणी ए वाट रे ॥ शे० ॥ ११ ॥ जाली मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमी रे ॥ साधु अनंता शेत्रुजे सिध्ध्या, प्रणमु वे कर जोमी रे ॥ शे० ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥

॥ शेत्रुजाना कहु सोल उद्धार, ते सुणजो सहुको सुविचार ॥ सुणतां आनद अग न माय, जन्म जन्मना पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्या पुरी,

समवसर्या स्वामी हित करी ॥ भरत गयो वंदनने काज, ए उपदेश दीयो जिनराज॥२॥ जगमा मोटा अरिहत देव, चोसठ इन्द्र करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो सघ कहाय, जेहने प्रणमे जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो सघनी कह्यो, भरत सुणीने मन गह्गह्यो ॥ भरत कहे ते किम पामीए, प्रभु कहे शेत्रुंजे जात्रा कीये ॥ ४ ॥ भरत कहे सघवीपद मुज, ते आपो हुं अगज तुज ॥ इन्द्रे आण्या अक्षत वास, प्रभु आपे सघवीपद तास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तेणी वेला तत्काल, भरत सुभद्रा बेहुने माल ॥ पहेरावी घर सप्रेमीया, सयर सोनाना रथ आपीया ॥ ६ ॥ ऋषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्न तणी कीधी मन रली ॥ भरते गणधर घर तेमीया, शातिक पौष्टिक सहु तिहा कीया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देश, भरते तेड्यो सघ अशेष ॥ आव्यो सघ अयोध्या पुरी, प्रथम तीर्थंकर यात्रा करी ॥ ८ ॥ सघभगति कीधी अति घणी, सघ चलायो शेत्रुजा भणी ॥ गणधर बाहुबली केवली, मुनिवर कोमी साथे लीया वली ॥ ए ॥ चक्रवर्तीनी सघली ऋद्धि, भरते साथे लीधी सिद्धि ॥ हय गय रथ

पायक परिवार, ते तो कहेतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहेवाय, मार्गे चैत्य उद्धरतो जाय ॥ संघ आव्यो शत्रुंजय पास, सहुनी पूगी मननी आश ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो शेत्रुजो राय, मणि माणेक मोतीशु वधाय ॥ तिणे ठामे रही महोत्सव कीयो, भरते आणंदपुर वासीयो ॥ १२ ॥ संघ शेत्रुंजा उपर चढ्यो, फरसंता पातिक झरपड्यो ॥ केवलज्ञानी पगलां तिहां, प्रणम्या रायणरुख छे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्रे आणी सुपवित्त ॥ नदी शेत्रुजी सोहामणी, भरते दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधर देव तणे उपदेश, इंद्रे वली दीधो आदेश ॥ श्री आदिनाथ तणो देहरो, भरते कराव्यो गिरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनाना प्रासाद उत्तंग, रत्न तणी प्रतिमा मनरंग ॥ भरते श्री आदीश्वर तणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, ब्राह्मी पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरी प्रमुख प्रासाद, भरते थाप्या नवले नाद ॥ १७ ॥ एम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरते कराव्या गुरु प्रसाद ॥ एह भण्यो पहेलो उद्धार, सघलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राग सिंधुश्रो आशावरी ॥

॥ नरत तणे पाट आठमे, दंडवीर्य थयो रायोजी ॥ नरत तणी परे सव कीयो, शत्रुंजय सघवी कहायोजी ॥ १ ॥ शत्रुंजय उद्धार सांजलो, सोल मोटा श्रीकारोजी ॥ असंख्याता वीजा वली, तेह न कहु अधिकारोजी ॥ श० ॥ २ ॥ चैत्य कराव्यु रूपा तणु, सोनानो विंव सारोजी ॥ मूलगा विंव जंडारीयां, पश्चिम दिशि तेणी वारोजी ॥ श० ॥ ३ ॥ शत्रुंजयनी यात्रा करी, सफल कीयो अवतारोजी ॥ दंडवीर्य राजा तणो, ए वीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरजथी जे वारोजी ॥ ईशानेंद्र करावीयो, ए त्रीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारोजी ॥ तिणे शत्रुंजयनो करावीयो, ए चोथो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी ॥ तिणे शत्रुंजयनो करावीयो, ए पांचमो उद्धारोजी॥श० ॥ ७ ॥ जवनपति इंद्र तणो कीयो, ए ठठो उद्धारोजी ॥ चक्रवर्त्ती सगर तणो कीयो, ए सातमो उद्धारोजी

॥ श० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, शत्रुजयनो अधिकारोजी ॥ व्यंतरेंद्रे करावीयो, ए आठमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभ स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारोजी ॥ चंद्रयश राये करावीयो, ए नवमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १० ॥ शान्तिनाथनी सुणी देशना, शान्तिनाथ सुत सुविचारोजी ॥ चक्रधर राय करावीयो, ए दशमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जग दीपतो, मुनिसुव्रत सुवारोजी ॥ श्री रामचंद्रे करावीयो, ए अगीयारमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १२ ॥ पांडव कहे अमे पापीया किम छूटुं मोरी मायोजी ॥ कहे कुन्ती शेत्रुजा तणी, यात्रा कीया पाप जायोजी ॥ श० ॥ १३ ॥ पांचे पांडव संघ करी, शत्रुजय भेट्यो अपारोजी ॥ काष्टचैत्य बिंब लेपनो, ए बारमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपोजी ॥ श्री शेत्रुजनो संघ करी, थापी सकल सरूपोजी ॥ श० ॥ १५ ॥ अठ्योतरसो वरषां गया, विक्रम नृपथी जिवारोजी ॥ पोरवाड जावड करावीयो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १६ ॥ संवत् बार तेरोतरे, श्रीमाली सुविचारोजी ॥ वाहडदे मुहूर्त्ते करावीयो, ए चौदमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १७ ॥

सवत् तेर एकोतरे, देशलहेर अधिकारोजी ॥ समरेशाहे करावीयो, ए पंदरमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १८ ॥ सवत् पन्नर सत्याशीए, वैशाख सुदि शुभ वारोजी ॥ करमे दोशी करावीयो, ए सोलमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १९ ॥ सम्प्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारोजी ॥ नित्य नित्य कीजे वदना ने, पामीजे भवपारोजी ॥ शत्रुजय उद्धार साभलो ॥ २० ॥

॥ दुहा ॥

॥ वली शेत्रुज माहातम कहु, साभलो जिम छे तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीरे कह्यु एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी, शेत्रुजे पूजनीक ॥ भगवंतनो भेख मानता, लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्री शेत्रुजा उपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण समु लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ शेत्रुजा उपर देहरु, नवु नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावता, आठ गणु फल होय ॥ ४ ॥ शिर उपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्तीनी स्त्री थइ, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ कार्तिक पूनिम शेत्रुजे, चढीने करे उपवास ॥ नारकी सो सागर तणो, करे कर्मनो नाश ॥ ६ ॥

कार्तिक परव मोटुं कह्युं, जिहां सिद्धा दश कोड ॥ ब्रह्म स्त्री बालकहत्या, पापथी नाखे छोड ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक जणी, जोजन पुन्य विशेष ॥ शेत्रुंज साधु पडिलाभतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ धन्य धन्य अवंतीसुकुमालने ॥ ए देशी ॥

॥ शेत्रुंजे गयां पाप छूटीए, लीजे आलोयण एमोजी ॥ तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्युं तेमोजी ॥ शे० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासोजी ॥ चैत्री दिन शेत्रुंजे चढी, एक करे उपवासोजी ॥ शे० ॥ २ ॥ रत्न तणी चोरी करी, सात आंबिल शुद्ध थायजी, काती सात दिन तप कीयां, रत्नहरण पाप जायजी ॥ शे० ॥ ३ ॥ कांसा पीतल त्रांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणजी ॥ सात दिवस पुरिमड्ढ करे, तो छूटे गिरि एणजी ॥ शे० ॥ ४ ॥ मोती प्रवाला मुंगीया, जेणे चोर्यां नर नारीजी ॥ आंबिल करी पूजा करे, त्रण टक शुद्ध आचारीजी ॥ शे० ॥ ५ ॥ धान्य पाणी रस चोरीयां, जे भेटे सिद्धक्षेत्रोजी ॥ शेत्रुंज तलहटी साधुने, पडिलाभे शुद्ध चित्तोजी

॥ शे० ॥ ६ ॥ वस्त्राजरण जेणे हर्यां, ते वूटे इणे मेलोजी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह उठी बहु वहेलोजी ॥ शे० ॥ ७ ॥ देव गुरुनु धन जे हरे, ते शुद्ध थाये एमोजी ॥ अधिकु डव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहु प्रेमोजी ॥ शे० ॥ ० ॥ गाय जेंश घोमा मही, गजनो चोरणहारोजी ॥ वूटे ते तप तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारोजी ॥ शे० ॥ ए ॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लखे आपणां नामोजी ॥ ॥ वूटे उमासी तप कीयां, सामायिक तिण ठामोजी ॥ शे० ॥ १० ॥ कुवारी परिव्राजिका, सधव विधव गुरुनारोजी ॥ व्रत जाजे तिणने कह्यु, उमासी तप सारोजी ॥ शे० ॥ ११ ॥ गौ विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहोजी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, वूटे तप करी एहोजी ॥ शेत्रुंजे गया पाप वूटीए ॥ १२ ॥

॥ ढाल उठी ॥

॥ कुमर चले आवीउं ए ॥ ए देशी ॥

॥ सप्रति काले सोलमो ए, ए वरते ने उद्धार ॥ शेत्रुंजय यात्रा करु ए, सफल करुं अवतार ॥ शे० ॥ १ ॥ उहरी पालता ... ए, शेत्रुंज केरी वाट ॥ शे० ॥

पालीताणे पहोंचीए ए, संघ मल्या बहु थाट ॥ शे० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखीए ए, वली सत्तानी वाव ॥ शे० ॥ तिहा विसरामो लीजीए ए, वरूने चोतरे आव ॥ शे० ॥ ३ ॥ पालीताणे पावकी ए, चढीए उठी परजात ॥ शे० ॥ शेत्रुजी नदी सोहामणी ए, दूर थकी देखात ॥ शे० ॥ ४ ॥ चढीए हिंगलाजने हडे ए, कलिकुरु नमीए पास ॥ शे० ॥ बारी माहे पेसीए ए, आणी अग उल्लास ॥ शे० ॥ ५ ॥ मरुदेवी टुक मनोहरु ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ शे० ॥ शान्तिनाथ जिन सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ शे० ॥ ६ ॥ वंश पोरवाडे परगमो ए, सोमजी शाह मल्हार ॥ शे० ॥ रूपजी सघवी करावीयो ए, चोमुख मूल उद्धार ॥ शे० ॥ ७ ॥ श्री जिनराज सूरीश्वरु ए, खरतर गच्छ गणधार ॥ स्हाये जेणे प्रतिष्ठा करी ए, शुभ दिवस शुभ वार ॥ शे० ॥ ८ ॥ चोमुख प्रतिमा चरचीए ए, नमती मांहे भला बिंब ॥ शे० ॥ पांचे पांडव पूजीए ए, अदबुद आदि प्रलब ॥ शे० ॥ ९ ॥ खरतर वसही खांतशु ए, बिंब जुहारु अनेक ॥ शे० ॥ नेमिनाथ चोरी नमु ए, टालु अलग उद्वेग ॥ शे० ॥ १० ॥ धर्मद्वार माहे नीसरु ए, कुगति करु अति दूर ॥ शे० ॥ आवु

आदिनाथ देहरे ए, कर्म करु चकचूर ॥ शे० ॥ ११ ॥
मूलनायक प्रणमु मुदा ए, आदिनाथ जगवत ॥ शे० ॥
देव जुहारु देहरे ए, जमती मांहे जगवंत ॥ शे० ॥१२॥
शेत्रुजा उपर कीजीए ए, पाचे गामे स्नात्र ॥ शे० ॥
कलश अठोतरसो करी ए, निर्मल नीरशु गात्र ॥ शे०
॥ १३ ॥ प्रथम आदीश्वर आगले ए, पुण्डरीक गणधार
॥ रायण तल पगला वली ए, शान्तिनाथ सुख-
कार ॥ शे० ॥ १४ ॥ रायण तले पगला नमुं ए, चोमुख
प्रतिमा चार ॥ शे० ॥ बीजी जूमे निवावली ए, पुण्ड
रीक गणधार ॥ शे० ॥ १५ ॥ सूरजकुण्ड नीहालीए ए
अति जली उलकाफोल ॥ शे० ॥ चेलणातलाइ सिद्ध
शिला ए, अग फरसु उल्लोल ॥ शे० ॥ १६ ॥ आदि-
पुर पाजे उतरु ए, सिद्धवन्ड लहु विसराम ॥ शे० ॥ चैत्य,
प्रवामी इणी परे करी ए, सिद्धा वछित काम ॥ शे० ॥-
१७ ॥ जात्रा करी शेत्रुजा तणी ए, सफल कीयो अवतार-
॥शे०॥ कुशल क्षेमशु आवीया ए, सघ सहु परिवार ॥
शे० ॥ १८ ॥ शत्रुजय माहातम साजली ए, रास रच्यो
अनुसार ॥ शे० ॥ जो जनि गावे जावशु ए, आनद होय
अपार ॥ शे० ॥ १९ ॥ शत्रुजय रास सोहामणो
ए, साजलजो सहु कोय ॥ शे० ॥ घर बेठा जणे

नावशु ए, तसु जात्रा फल होय ॥ शे० ॥ २० ॥ नणशाली थिरु अति नलो ए, दयावंत दातार ॥ शे० ॥ शत्रुजय संघ करावीयो ए, जेसलमेर मजार ॥ शे० ॥ २१ ॥ शत्रुजय माहात्म्य ग्रथथी ए, रास रच्यो अनुसार ॥ शे०॥नाव नक्ते नणतां थका ए, पामीजे नवपार ॥ शे० ॥ २२ ॥ सवत् सोल व्याशीए ए, श्रावण सुदि सुखकार ॥ शे० ॥ रास नण्यो शेत्रुजा तणो ए, नगर नागोर मजार ॥ शे० ॥ २३ ॥ गिरुर्ज गछ खरतर तणो ए, श्री जिनचद सूरीश ॥ शे० ॥ प्रथम शिष्य श्री पूज्यना ए, सकलचद सुजगीश ॥ शे० ॥ २४ ॥ तास शिष्य जग जाणीए ए, समयसुदर उवजाय ॥ शे० ॥ रास रच्यो तिणे रुअमो ए, सुणता आनंद थाय ॥ शेत्रुजे यात्रा करु ए ॥ २५ ॥

॥ इति श्री शेत्रुजय वृद्ध रास समाप्त ॥

॥ श्री सिद्धगिरिनु स्तवन ॥

॥ सिद्धगिरि मंडन ईश सुणो मुज विनति, मारुदेवीनो नद छो शिवरमणी पति ॥ पूरक इष्ट अनीष्ट चूरक कर्मावली, नवनय नजन रजन तुज मुद्रा

जक्ती ॥ अनत गुणना आधार अनंती लक्ष्मी वर्या, क्षायिक जावे ज्ञान दर्शन चारित्र धर्या ॥ अजर अमर निरुपाध स्थान पहोता जिहां, चार गति मांहि जमतो मूक्यो मुजने इहा ॥ क्रोध लोज मोह मत्सर वश हु धमधम्यो, पण निज जावमा एक घमी प्रजु नवि रम्यो ॥ सार करो इण अवसर प्रजुजी उचित सही, मोह गये जो तारो तो तेहमा अधिक नहीं ॥ पण तुज दर्शन पामी अनुजव उल्लस्यो, मिथ्या तामस सूर सरिसो तुंही मल्यो ॥ उदय हुओ प्रजु आज जाग्य मुज जागीया, तुज मुख चद चकोर नयण मुज लागीयां ॥ तेहीज जिह्वा धन्य जेणे तुज गुण स्तव्या, धन धन तेहीज नयण जेणे तुज निरखीया ॥ मूर्त्ति मनहर पद्म मन अलि मोहीउं, जाणु जव महा सायर चूलकपणु लह्यो ॥ जवअटवी सत्नवाह कर्म करी केशरी, जन्म जरा मृति रोग छेद धनवंतरी ॥ ज्ञान रयण रयणायर गुण मणि ज्रधरा, राग द्वेष कषाय जीती थया जिनवरा ॥ तारक मोह निवारक कष्ट मुज कापजो, जवोदधि पार उतारी मुक्तिपद आपजो ॥ कमलविजयजी पन्यास चरण तस किंकरु, कहे मोहन तुज ध्यान जवोजव हुं धरु ॥ इति ॥

एक अभिप्राय

श्री श्रावकनुं कर्तव्य तथा विविध स्तवनादि समुच्चय ग्रंथ प्रकाशक श्रावक भीमसिंह माणेक मुंबई जुनामा जुना जैन पुस्तको प्रसिद्ध करनार, जैन साहित्य बहार पाडनारी पहेल करनार **श्रावक भीमसिंह माणेकनु** नाम जैन समाजमा मशहुर छे तेओना तरफथी अनेक ग्रंथो, उपयोगी ग्रंथो अत्यार सुधीमा घणे भागे शुद्ध अने सरल प्रसिद्ध करवामा आव्या छे, जेमा आ ग्रंथे एक वधु ग्रंथनी वृद्धि करी छे आ ग्रंथमा प्रथम खंडमा प्रातःस्मरणीय छंदो, स्तवनो, बीजामा देरासरे जवानी विधि तथा चैत्यवंदनविधि, त्रीजामा तिथि विगेरेना चैत्यवंदन, स्तवनो अने थोयो, चोथामा चोवीशी स्तवन तथा चैत्यवंदन, पांचमामा प्रकीर्ण तीर्थ विगेरेना स्तवनो, छठामा उपदेशी पदो, सातमामा सज्झायो, आठमामा लावणी विगेरे नावमा राग प्रमुखनी अने दशमामा नवस्मरणादि विगेरे विषयो आपवामा आव्या छे आ स्था प्रकरणमा जे जे आपवामा आवेल छे ते प्रचलित तेमज केटलाक नवा परंतु तमाम पूर्वाचार्यो कृत होवाने दरेकने नित्य क्रिया माटे खास उपयोगी छे, वळी घणामाथी चुटणी करेली होवाथी एक ग्रंथरूपे करेल प्रसिद्धि आवकारदायक छे प्रस्तावनामा देवदर्शनमहिमा तेमज प्रतिमापूजानु निरूपण अने चैत्यवंदनविधि आपी तेनी सुन्दरताना वधारो करेलो छे सुदर शास्त्री टाइपमा सारा कागळ उपर छपावी सुंदर बाइन्डींगथी अलङ्कृत करेल छे, जेथी त जैनो माटे अवश्य खरीदवा लायक छे अने उपयोगी छे आवा प्रकाशकने आवा ग्रंथो प्रसिद्ध करवा माटे धन्यवाद आपीए छीए

(आत्मानंद प्रकाश)	शास्त्री अक्षरनी	कि २-०-०
	गुजराती ,,	कि १-८-०

जाहेरखबर.

निवृत्तिना पवित्र वखतमां वांचवा माटे पूर्वे थइ
गयेला महान् आचार्योना रचेल

अमृतमय ज्ञानना पुस्तको

प्रकरण रत्नाकर भाग १ लो	६-४-०	जीवविचार	०-६-०
प्रकरण रत्नाकर भाग ४ थो	८-८-०	कल्पसूत्र सुबोधिका टीकानुं भाषांतर	३-०-०
अज्ञानतिमिर भास्कर	२-८-०	कल्पसूत्र मूल बारसो सचित्र	१-८-०
पाण्डवचरित्र भाषांतर सचित्र	६-०-०	देवसि राइ प्रतिक्रमण सूत्र अर्थ साथे	०-६-०
सुक्तमुक्तावली	३-८-०	,, विधियुक्त	०-६-०
नवतत्त्व प्रश्नोत्तर	२-८-०	अंचलगच्छ पांच प्रतिक्रमण सूत्र मूळ	१-०-०
अढीद्वीपना नकशानी हकीकत	२-८-०	खरतरगच्छ पांच प्रतिक्रमण सूत्र	१-४-०
चार पर्वोनी कथा	९-०-०	विविध पूजासंग्रह भाग १ लो	२-०-०
लघु प्रकरणसंग्रह	१-८-०	लघु पूजासंग्रह	०-६-०
नवतत्त्वप्रकरण अर्थ साथे	१-०-०	जैनप्रबोध	५-०-०
दण्डक लघुसंघयणी	[illegible]-०	सज्झायमाला	

देववंदनमाला	१–४–०
स्वरोदयज्ञान	०–६–०
भक्तामर स्तोत्र	०-१२-०
चंद राजानो रास अर्थ साथे	५–०–०
समरादित्य केवलीनो रास	४–०–०
श्रीपाल राजानो रास शास्त्री	३–०–०
सामुद्रिक शास्त्र तथा स्वप्नविचार	१–८–०
शकुन शास्त्र	०–८–०
अर्हन्नीति	१–८–०
जैन कथा रत्न कोष भाग १ लो	३–०–०
,, २ जो	२-१२-०
,, ४ थो	३–४–०
,, ६ ठो	२–८–०
,, ७ मो	३–८–०
,, ८ मो	३–४–०
जंबूस्वामि चरित्र	०-१०-०

रंगबेरंगी तीर्थोना नकशा

शत्रुंजय तीर्थनो नकशो	१–८–०
अढीद्वीपनो	०–८–०
जंबुद्वीपनो	०–८–०
समेतशिखरनो	०–८–०
गौतमस्वामीनी छबी	०–८–०
ज्ञानबाजीनो नकशो	०–८–०
तारगाजीनो ,,	०–८–०
पावापुरीनो ,,	०–८–०
चंपापुरीनो ,,	०–८–०
केशरीयाजीनो ,,	०–८–०
अष्टापदजीनो ,,	०–८–०
गिरनारजीनो ,,	०–८–०
आबुजीनो ,,	०–८–०
माणिभद्र तथा पद्मावतीनी छबी	०–३–०

कीसनचरकाचरक

श्री लीलीकाउजमरण४सं १८८१ त्वासो
सुदी१५ नकरी लीली १ बाकीथीसो
चनमेंहरी१८८२

१ श्रीतजी।१८८२का आसोजमेंकरी
१ श्री लीजी।१८८[illegible]
१ श्री।लीजी।१८८[illegible]
१ श्री।लीजी।१८८४ [illegible]
१ श्री।लीजी।१८८[illegible]
१ श्री।[illegible]।१८८५ [illegible]
१ श्री।[illegible]।१८८५ [illegible]
१ श्री।लीजी।१८८६ [illegible]
१ श्री।[illegible]।१८८६ [illegible]
उजमणोकरे